विनती और प्रार्थना
के शब्द

राधास्वामी सत्संग ब्यास

ॐ अन्नपूर्णा ®
Charitable Trust
WZ-5A/1, Ram Nagar,
Choukhandi Chowk,
New Delhi-110018

शब्द सूची

पाठकों से निवेदन 9

बानी संत नामदेव जी

तुझ बिन क्यूं जीऊं रे 11
पतितपावन माधऊ विरदु तेरा 11
मै अंधुले की टेक 11
मो कउ तार ले रामा 12
लोभ लहर अति नीझर बाजै 12

बानी संत कबीर जी

अब तोहि जाँन न देहूँ राम पियारे 13
कब देखूँ मेरे राम सनेही 13
करवत भला न करवट तेरी 13
तुम्ह बिन राँम कवन सौं कहिये 13
दरमादे ठाढे दरबार 14
दरसन दीजे नाम सनेही 14
प्रीत लगी तुम नाम की 15
बाप राँम सुनि बीनती मोरी 15
राख लेहो हम ते बिगरी 15
राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे 16
राम सिमर पछुताहिगा मन 16
सतगुरु मोरी चूक सँभारो 16
साँईं बिन दरद करेजे होय 17
साचा साहिब एक तू 17
दोहे 17

बानी धनी धरमदास जी

बंदी-छोर बिनती सुनि लीजै 19
बिन दरसन भइ बावरी 20
भक्ति दान गुरु दीजिये 20
मिहरबान है साहेब मेरा 21
सतगुरु आवो हमरे देस 21
साहेब दीनबंधु हितकारी 21
साहेब मोरी ओर निहारो 22

बानी गुरु रविदास जी

अब कैसे छूटै नाम रट लागी 22
ऐसी लाल तुझ बिन कउन करै 23
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा 23
जो तुम तोरो राम मैं नहिं तोरौं 23
तुम चंदन हम इरंड बापुरे 24
तुम्ह करहु क्रिपा मुहि सांईं 24
दरसन दीजै राम दरसन दीजै 24
प्रभु जी तुम औगन बकसन हार 25

प्रभु जी संगति सरनि तिहारी 25
माधौ! मुहि इकु सहारौ तोरा 25
मेरी संगत पोच सोच दिन राती 26
हम सर दीन दइआल 26

बानी मीराबाई जी

अब तो निभायाँ सरेगी 26
अब मैं सरण तिहारी जी 27
कोई कहियौ रे प्रभु आवन की 27
छोड़ मत जाज्योजी महाराज 27
तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर 27
तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ 28
तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी 28
दरस बिन दुखन लागे नैन 28
प्यारे दर्शन दीजो आय 29
मन माने जब तार प्रभुजी 29
मैं वारी जाऊँ राम 29
मैं हरि बिन क्यों जिउँ री माइ 30
मोहे लागी लगन गुरु-चरनन की 30
म्हाँरो जनम मरन को साथी 30
म्हारी सुध ज्यूँ जानो 31
री मेरे पार निकस गया 31
हरि मने पार उतार 31
हेरी मैं तो प्रेम दिवानी 31

बानी भक्त सूरदास जी

अबकी राखि लेहु भगवान 32
तुम मेरी राखो लाज हरी 32
दीनानाथ अब बार तुम्हारी 32
नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो 33
प्रभु, मैं पीछौ लियौ तुम्हारौ 33
मो सम कौन कुटिल खल कामी 34
प्रभु जी मेरे औगुन चित न धरो 34

बानी गोस्वामी तुलसीदास जी

आपनो कबहुँ करि जानिहौ 34
जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे 35
तुम तजि हौं कासों कहौं 35
तुम सम दीनबंधु 35
तू दयालु, दीन हौं 36
दीनबंधु, सुखसिंधु, 36
मैं हरि पतित-पावन सुने 37
मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो 37
यह बिनती रघुबीर गुसाईं 38
राम कबहुँ प्रिय लागिहौ 38

बानी संत दादू दयाल जी

अजहुँ न निकसै प्राण कठोर 38
क्यौं बिसरै मेरा पीव पियारा 39
दरबार तुम्हारे दरदवंद 39
पार नहिं पाइये रे राम 39
मेरे गृह आवहो गुर मेरा 40
राम कृपा करि होहु दयाला 40
हमारे तुमहीं हौ रखपाल। 40
दोहे 41

बानी संत जगजीवन साहिब जी

अब तुम होहु दयाल तुम्हारी 43
आरति अरज लेहु सुनि मोरी 44
केतिक बूझ का आरति करऊँ 44
तुम सों यह मन लागा मोरा 44

तेरा नाम सुमिरि ना जाय 45
प्रभु जी तुम जानत गति मेरी 45
प्रभु जी बक्सहु चूकि हमारी 45
प्रभु तुम सों मन लागा मोरा 46
बालक बुद्धि हीन मति मोरी 46
मेरी बिनय सुनिये राम 46
मेरी हाथ तुम्हारे डोरी 46
मेरे गुनाह माफ करिये 47
साईं मैं अजान अज्ञाना 47
साँईं मोहिं भरोस तुम्हारा 48
हम तें चूक परत बहुतेरी 48

बानी संत पलटू साहिब जी

आरति राम गरीब-निवाजा 48
तुम तजि दीना-नाथ जी 49
पतितपावन बाना धर्‌यो 49
साहिब मेरा सब कुछ तेरा 49

बानी संत दरिया जी (बिहारवाले)

तुम मेरो साईं मैं तेरो दास 50
साहब मैं गुलाम हौं तेरा 50

बानी संत चरनदास जी

अँखियाँ गुरु दरसन की प्यासी 50
अब जग फंद छुटावो जी 51
गुरुदेव हमारे आवो जी 51
तुम साहब करतार हो हम बंदे तेरे 52
पतित उधारन बिरद तुम्हारो 52
प्रभु जू सरन तिहारी आयो 53
मो कूँ कछु न चहिये राम 53
राखो जी लाज गरीब निवाज 53
हमारो नैना दरस पियासा हो 54

बानी सहजोबाई जी

अब तुम अपनी ओर निहारो 54
तुम गुनवंत मैं औगुन भारी 55
नमो नमो गुरु तुम सरना 55

बानी संत मलूकदास जी

दीन-बंधु दीना-नाथ 55
नाम तुम्हारा निरमला 56

बानी बाबा धरनीदास जी

अजहूँ मिलो मेरे प्रान-पियारे 56
तुहि अवलंब हमारे हो 57
मेरे प्रभु तुमहिं अवर नहिं कोइ 57
मैं निरगुनियाँ गुन नहिं जाना 57
मो सों प्रभु नाहिं दुखित 58
दोहे 58

बानी महात्मा गरीबदास जी

दीन के दयाल 59

बानी शेख़ फ़रीद जी

सलोक सेख फरीद के 59

कलाम साईं बुल्लेशाह जी

अब क्यों साजन चिर लायो रे 61
अब लगन लग्गी कीह् करीए 61
आ मिल यार सार लै मेरी 61
आपणे संग रलाईं प्यारे 62
इक राँझा मैंनूँ लोड़ीदा 63
ऐब नमाणी दे कज्ज ओ यार 63
केहे लारे देना एं सानूँ 63
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ 64
दिल लोचे माही यार नूँ 65
बस कर जी हुण बस कर जी 65
भावें जाण न जाण वे 66
मेरे माही क्यों चिर लाया ए 66
मैं उडीकाँ कर रही 67
मैं क्योंकर जावाँ काअबे नूँ 68
मैंनूँ छड गए आप लद गए 68
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे 69

कलाम हज़रत सुलतान बाहू जी

एह तन मेरा चश्मां होवे 69
इश्क़ माही दे लाइयां अग्गीं 69
चढ़ चंना ते कर रुशनाई 69
चढ़ चंना ते कर रुशनाई 70
न मैं सेर न पाअ छटाकी 70
मैं कोझी मेरा दिलबर सोहणा 70
सुण फ़रयाद पीरां दिया पीरा 70
सुण फ़रयाद पीरां दिया पीरा 70

बानी गुरु नानक देव जी

तू दरीआउ दाना बीना 71
सतगुर भीखिआ देह मै 71
सभ अवगण मै गुण नही कोई 72

बानी गुरु अमरदास जी

जगत जलंदा रख लै 72
जो तेरी सरणाई हर जीउ 72
बाबीहा बेनती करे 73
मिल मेरे प्रीतमा जीउ 73
साची लिवै बिन देह निमाणी 73
हम भीखक भेखारी तेरे 74

बानी गुरु रामदास जी

अब हम चली ठाकुर पह हार 74
कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम 75
तुम दइआल सरब दुख भंजन 76
तेरे कवन कवन गुण कह 76
प्रभ कीजै क्रिपा निधान 77
सा धरती भई हरीआवली 77
सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे 77
हम अंधुले अंध बिखै बिख 78
हम किआ गुण तेरे विथरह 78
हम मूरख मुगध अगिआन मती 79
हमरा चित लुभत मोह बिखिआ 79
हर के जन सतगुर सतपुरखा 80
हर दरसन कउ मेरा मन बहु 80
हर हर अरथ सरीर हम 81

बानी गुरु अर्जुन देव जी

अपने सेवक कउ कबहु न 81
अपुने सतगुर पह बिनउ कहिआ 82
ऐसी किरपा मोहे करहो 82
ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा 82

कर किरपा मेरे प्रीतम सुआमी 83
कवन गुन प्रानपति मिलउ 83
किआ गुण तेरे सार सम्हाली 83
किरपा करहो दीन के दाते 84
कुचिल कठोर कपट कामी 84
कोई जन हर सिउ देवै जोर 85
चरन कमल की आस पिआरे 85
जिस के सिर ऊपर तूं 85
जे भुली जे चुकी साईं 86
टहल करउ तेरे दास की 87
ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ 87
तुझ बिन कवन हमारा 87
तुध चित आए महा अनंदा 88
तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक 88
तूं जीवन तूं प्रान अधारा 89
तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता 89
तूं समरथ तूं है मेरा सुआमी 89
तू ठाकुर तुम पह अरदास 90
तू बेअंत को विरला जाणै 90
तू मेरा तरंग हम मीन तुमारे 90
तू मेरा पिता तूहै मेरा माता 91
तू समरथ सदा हम दीन 91
तेरी सरण पूरे गुरदेव 92
दरसन देख जीवा गुर तेरा 92
दुख भंजन तेरा नाम जी 92
दूसर नाही ठाउ का पह जाईऐ 93
पानी पखा पीसउ संत आगै 93
पारब्रहम परमेसर सतगुर आपे 94
प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै 94
प्रभ जी मोहे कवन अनाथ 94
प्रभ तेरे पग की धूर 95
मागउ दान ठाकुर नाम 95
मिहरवान साहिब मिहरवान 95
मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई 96
मै बंदा बै खरीद सच 96
मै मन तेरी टेक मेरे पिआरे 97
राखहो अपनी सरण प्रभ मोहे 97
राख पिता प्रभ मेरे 98
विसर नाही प्रभ दीन दइआला 98
सगल संतन पह वसतु इक 99
सतगुर आइओ सरण तुहारी 99
सतगुर पास बेनंतीआ मिलै 99
सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे 100
सुनहो बेनंतीआ सुआमी मेरे 100
स्वामी सरन परिओ दरबारे 101
हम मैले तुम ऊजल करते 101
हर हर हर गुन गावहो 101
हा हा प्रभ राख लेहो 102

बानी गुरु तेग़ बहादुर जी

अब मै कउन उपाउ करउ 102
बिरथा कहउ कउन सिउ मन 103
माई मन मेरो बस नाहे 103
माई मै किह बिधि लखउ 103
माई मै मन को मान न 104
साधो कउन जुगति अब कीजै 104
हर को नाम सदा सुखदाई 104
हर जू राख लेहो पत मेरी 105
हर बिन तेरो को न सहाई 105

बानी गुरु गोबिन्द सिंह जी

मित्र पिआरे नूं हाल 106

बानी संत तुलसी साहिब जी

तुलसी मैं अति नीच निकामा 106
ब्याकुल बिरह दिवानी 106
बार बार बिनती करूँ 107
बिपति कासे गाऊँ री माई 107
मैं अति कुटिल कराल हूँ 107
मैं सतगुर की दासी 108
तुलसी ऐसी प्रीत कर 108

बानी हुज़ूर स्वामी जी महाराज

अब बही सुरत मँझधार 109
अब मैं कौन कुमति उरझानी 109
करूँ आरती राधास्वामी 110
करूँ बेनती दोउ कर जोरी 110
कुमतिया बैरन पीछे पड़ी 111
कैसी करूँ कसक उठी भारी 112
गुरु तारेंगे हम जानी 112
गुरू मैं गुनहगार अति भारी 113
गुरू मोहि दीजे अपना धाम 114
घट का पट खोल दिखाओ 115
चुनर मेरी मैली भई 115
छुटूं मैं कैसे इस मन से 116
तुम धुर से चल कर आये 116
दर्द दुखी मैं बिरहिन भारी 118
दर्शन की प्यास घनेरी 118
नाम दान अब सतगुरु दीजे 119
पिया बिन कैसे जिउं मैं प्यारी 119
मन चंचल कहा न माने 120
माँगूँ इक गुरु से दाना 120
मेरी पकड़ो बाँह हे सतगुरु 121
मैं कौन कुमति उरझाना 121
मोहिं मिला सुहाग गुरू का 122
रोम रोम मेरे तुम आधार 122
लगाओ मेरी नइया सतगुरु पार 124
सतगुरु मेरी सुनो पुकार 124
सोचत रही री बेचैन 124
गुरू मोहिं अपना रूप दिखाओ 125

संदर्भ सूची 126
संदर्भ ग्रंथ 132
परमार्थ संबंधी पुस्तकें 134

बानी संत नामदेव जी

1) तुझ बिन क्यूं जीऊं रे तुझ बिन क्यूं जीऊं।
तू मंझा[1] प्रांन अधार तुझ बिन क्यूं जीऊं॥ टेक॥
सार तुम्हारा नांव है झूठा सब संसार।
मनसा बाचा कर्मना[2] कलि[3] केवल नांव अधार॥
दुनियां मैं दोजग घनां दारन[4] दुख अधिक अपार।
चरन कंवल की मौज मैं मोहि राखौ सिरजन हार॥
मो तो बिचि पडदा किसा[5] लोभ बडाई काम।
कोई एक हरिजन ऊबरे जिनि सुमिरया निहचल रांम॥
लोग वेद कै संगि बह्यौ सलिल[6] मोह की धार।
जन नांमा स्वामी बीठला, मोहि खेइ[7] उतारौ पार॥

2) पतितपावन माधऊ विरदु[8] तेरा॥
धनि ते वै मुनिजन धिआइउ हरि प्रभु मेरा॥
मेरे माथै लागीले धूरी गोविंद चरणन की॥
सुर नर मुनि जन तिनहु ते दूरी॥
दीन का दइआलु माधो गरब[9] परिहारी[10]॥
चरण सरन नामा बलि तिहारी॥

राग तिलंग बाणी भगता की नामदेव जी

3) मै अंधुले की टेक तेरा नाम खुंदकारा[11]॥
मै गरीब मै मसकीन[12] तेरा नाम है अधारा॥१॥ रहाउ॥

---

1. मेरा 2. **मनसा...कर्मना**=मन, वचन और कर्म से 3. कलियुग 4. भयानक
5. कैसा 6. जल 7. खे-कर 8. मर्यादा, यश
9. अहंकार 10. दूर करनेवाला 11. स्वामी, प्रभु 12. असहाय

करीमां[1] रहीमां[2] अलाह तू गनीं[3]॥
हाजरा हजूर[4] दर पेस[5] तूं मनीं[6]॥१॥
दरीआउ[7] तू दिहंद[8] तू बिसीआर[9] तू धनी॥
देह लेह एक तूं दिगर[10] को नही॥२॥
तूं दानां[11] तूं बीनां[12] मै बीचार किआ करी॥
नामे चे[13] सुआमी बखसंद तूं हरी॥३॥

राग गोंड बाणी नामदेउ जी की घर १

4) मो कउ तार ले रामा तार ले॥
मै अजान जन तरिबे[14] न जानउ बाप बीठुला[15] बाह दे[16]॥१॥रहाउ॥
नर ते सुर होए जात निमख मै[17] सतगुर बुध सिखलाई॥
नर ते उपज[18] सुरग कउ जीतिओ सो अवखध[19] मै पाई॥१॥
जहा जहा धूअ[20] नारद टेके नैक[21] टिकावहो मोहे॥
तेरे नाम अविलंब[22] बहुत जन उधरे नामे की निज मत एह॥२॥

राग बसंत बाणी नामदेउ जी की

5) लोभ लहर अति नीझर[23] बाजै॥ काइआ डूबै केसवा॥१॥
संसार समुंदे तार गोबिंदे॥ तार लै बाप बीठुला॥१॥रहाउ॥
अनिल[24] बेड़ा हउ खेव[25] न साकउ॥ तेरा पार न पाइआ बीठुला॥२॥
होह दइआल सतगुर मेल तू मो कउ॥ पार उतारे केसवा॥३॥
नामा कहै हउ तर भी न जानउ॥ मो कउ बाह देह[26] बाह देह बीठुला॥४॥

---

1. कृपालु 2. दयालु 3. धनी 4. **हाजरा हजूर**=प्रत्यक्ष मौजूद 5. सामने
6. मेरे 7. सागर 8. दाता 9. बेअंत 10. दूसरा
11. ज्ञाता, सयाना 12. दृष्टा 13. **नामे चे**=नामदेव के 14. तरना
15. परमात्मा 16. भाव सहायक बनो 17. **निमख मै**=पलक में 18. पैदा होकर
19. औषधि 20. ध्रुव 21. तनिक 22. सहारा पाकर
23. भाव निरंतर प्रवाह 24. हवा 25. चलाना 26. **बाह देह**=सहारा दे

बानी संत कबीर जी

1) अब तोहि जाँन न देहूँ राम पियारे, ज्यूँ भावै त्यूँ होह हमारे॥टेक॥
बहुत दिनन के बिछुरे हरि पाये, भाग बड़े घरि[1] बैठे आये॥
चरननि लागि करौं बरियायी, प्रेम प्रीति राखौं उरझाई।
इत मन मंदिर रहौ नित चोखै[2], कहै कबीर परहु मति धौखै॥

2) कब देखूँ मेरे राम सनेही, जा बिन दुख पावै मेरी देही॥टेक॥
हूँ तेरा पंथ निहारूँ स्वाँमी, कबरे मिलहुगे अंतरजाँमी।
जैसै जल बिन मीन तलपै, ऐसै हरि बिन मेरा जियरा कलपै।
निस दिन हरि बिन नींद न आवै, दरस पियासी राँम क्यूँ सचु पावै।
कहै कबीर अब बिलंब न कीजै, अपनौं जाँनि मोहि दरसन दीजै॥

राग आसा स्री कबीर जीउ

3) करवत[3] भला न करवट[4] तेरी॥ लाग गले सुन बिनती मेरी॥१॥
हउ वारी मुख फेर पिआरे॥
करवट दे मो कउ काहे कउ मारे॥१॥रहाउ॥
जउ तन चीरह अंग न मोरउ॥ पिंड[5] परै[6] तउ प्रीत न तोरउ॥२॥
हम तुम बीच भइओ नही कोई॥ तुमह सो कंत नार हम सोई॥३॥
कहत कबीर सुनहो रे लोई॥ अब तुमरी परतीत[7] न होई॥४॥

4) तुम्ह बिन राँम कवन सौं कहिये, लागी चोट बहुत दुख सहिये॥टेक॥
बेध्यौ जीव बिरह कै भालै, राति दिवस मेरे उर सालैं[8]॥
को जाँनै मेरे तन की पीरा, सतगुर सबद बहि गयौ सरीरा॥
तुम्ह से बैद न हमसे रोगी, उपजी[9] बिथा[10] कैसैं जींवैं बियोगी॥

---

1. भाव शरीर 2. निर्मल 3. आरा (स्वर्ग प्राप्ति की आशा से काशी, प्रयाग में एक विशेष आरे से सिर कटवाने की ओर संकेत है) 4. भाव मुँह दूसरी तरफ़ फेरना
5. शरीर 6. देना पड़े 7. विश्वास 8. टीस, चुभन 9. पैदा 10. पीड़ा

निस बासुरि[1] मोहि चितवत जाई[2], अजहूँ न आइ मिले राँम राई॥
कहत कबीर हमकौं दुख भारी, बिन दरसन क्यूँ जीवहि मुरारी॥

राग बिलावल बाणी भगता की॥ कबीर जीउ की

5) दरमादे[3] ठाढे दरबार॥
तुझ बिन सुरत करै को मेरी दरसन दीजै खोल्ह किवार॥१॥रहाउ॥
तुम धन धनी[4] उदार तिआगी स्रवनन्ह[5] सुनीअत सुजस तुम्हार॥
मागउ काहे[6] रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतार[7]॥१॥
जैदेउ नामा बिप[8] सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार॥
कहे कबीर तुम संम्रथ दाते चार पदारथ[9] देत न बार[10]॥२॥

6) दरसन दीजे नाम सनेही। तुम बिन दुख पावे मेरी देही॥टेक॥
दुखित तुम बिन रटत निसि दिन, प्रगट दरसन दीजिये।
बिनती सुन प्रिय स्वामियाँ, बलि जाउँ बिलँब न कीजिये॥
अन्न न भावे नींद न आवे। बार बार मोहिं बिरह सतावे॥
बिबिधि बिध[11] हम भई ब्याकुल, बिन देखे जिव न रहे।
तपत तन जिव उठत झाला[12], कठिन दुख अब को सहे॥
नैनन चलत सजल[13] जल धारा। निसि दिन पंथ निहारौं तुम्हारा॥
गुन अवगुन अपराध छिमाकर, औगुन कछु न बिचारिये।
पतित-पावन राख परमति[14], अपना पन[15] न बिसारिये॥
गृह आँगन मोहिं कछु न सोहाई। बज्र[16] भई और फिर्‌यो न जाई॥
नैन भरि भरि रहे निरखत, निमिख नेह न तोड़ाइये।
बाँह दीजे बंदी छोड़ा, अब के बंद छोड़ाइये॥
मीन मरै जैसे बिन नीरा। ऐसे तुम बिन दुखित सरीरा॥

1. **निस बासुरि**=रात-दिन 2. **मोहि...जाई**=मेरी नज़र टिकी हुई है
3. दीन, असहाय 4. **स्वामी** 5. कानों से 6. किससे 7. छुटकारा
8. **ब्राह्मण** 9. **चार पदारथ**=धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष 10. देर
11. **बिबिधि बिध**=अनेक तरह से 12. आग, जलन 13. आँसुओं से भरी
14. मर्यादा 15. प्रण 16. कठोर पत्थर

दास कबीर यह करत बिनती, महा पुरुष अब मानिये।
दया कीजे दरस दीजे, अपना कर मोहिं जानिये॥

7) प्रीत लगी तुम नाम की, पल बिसरै नाहीं।
नजर करो अब मिहर की, मोहिं मिलो गुसाईं॥
बिरह सतावै मोहिं को, जिव तड़पै मेरा।
तुम देखन की चाव है, प्रभु मिलो सवेरा[1]॥
नैना तरसै दरस को, पल पलक न लागै।
दर्दवंत[2] दीदार का, निसि बासर जागै॥
जो अब के प्रीतम मिलैं, करूँ निमिख[3] न न्यारा।
अब कबीर गुरु पाइया, मिला प्रान पियारा॥

8) बाप राँम सुनि बीनती मोरी, तुम्ह सूँ प्रगट लोगन सूँ चोरीं[4]॥टेक॥
पहलैं काँम मुगध मति कीया, ता भै कंपै मेरा जीया॥
राँम राइ मेरा कह्या सुनींजै, पहले बकसि[5] अब लेखा लीजै॥
कहै कबीर बाप राँम राया, कबहूँ सरनि तुम्हारी आया॥

राग बिलावल बाणी भगता की॥ कबीर जीउ की

9) राख लेहो[6] हम ते बिगरी॥
सील धरम जप भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी[7]॥१॥रहाउ॥
अमर जान संची[8] इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी॥
जिनह[9] निवाज साज[10] हम कीए तिसह बिसार अवर[11] लगरी[12]॥१॥
संधिक[13] तोहे साध नही कहीअउ सरन परे तुमरी पगरी॥
कहे कबीर इह बिनती सुनीअहो मत घालहो[14] जम की खबरी॥२॥

1. जल्दी 2. पीड़ा महसूस करनेवाला 3. एक पलक
4. **तुम्ह...चोरीं**=तुम्हारे सामने सब कुछ प्रत्यक्ष है, लोगों से भले ही छिपाऊँ।
5. क्षमा करो 6. **राख लेहो**=रक्षा करो 7. **टेढ पगरी**=टेढ़ी चाल भाव ग़लत रास्ता
8. सँभाल की 9. जिसने 10. सँवारा 11. दूसरे कामों में
12. लग गए 13. चोर 14. **मत घालहो**=मत भेजना

राग गउड़ी पूरबी कबीर जी

10) राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे॥ ध्रू प्रहिलाद **जपिओ हर जैसे॥१॥**
दीन दइआल भरोसे तेरे॥ सभ परवार चड़ाइआ **बेड़े॥१॥ रहाउ॥**
जा तिस भावै ता हुकम मनावै॥ इस बेड़े **कउ पार लघावै॥२॥**
गुर परसाद ऐसी बुध समानी॥ चूक गई **फिर आवन जानी॥३॥**
कहो कबीर भज सारिगपानी[1]॥ उरवार पार[2] **सभ एको दानी॥४॥**

राग मारू बाणी कबीर जीउ की

11) राम सिमर पछुताहिगा मन॥
पापी जीअरा लोभ करत है आज काल उठ **जाहिगा॥१॥ रहाउ॥**
लालच लागे जनम गवाइआ माइआ भरम **भुलाहिगा॥**
धन जोबन का गरब न कीजै कागद जिउ गल **जाहिगा॥१॥**
जउ जम आए केस गह पटकै ता दिन किछ न **बसाहिगा[3]॥**
सिमरन भजन दइआ नही कीनी तउ मुख चोटा **खाहिगा॥२॥**
धरम राए जब लेखा मागै किआ मुख लै कै **जाहिगा॥**
कहत कबीर सुनहो रे संतहो साधसंगत तर **जांहिगा॥३॥**

12) सतगुरु मोरी चूक सँभारो।
हौं अधीन हीन मति मोरी, चरनन तें जिन टारो[4]**॥ टेक॥**
मन कठोर कछु कहा न माने, बहु वा को **कहि हारो॥**
तुम हीं तें सब होत गुसाँई, या को बेग सँवारो[5]॥
अब दीजे संगत सतगुर की, जा तें होय निस्तारो॥
और सकल संगी सब बिसरैं, होउ तुम एक पियारो॥
कर देख्यो हित सारे जग से, कोइ न मिल्यो पुनि **भारो[6]॥**
कहैं कबीर सुनो प्रभु मेरे, भवसागर से तारो॥

---

1. परमात्मा 2. **उरवार पार**=लोक-परलोक 3. **किछ...बसाहिगा=कोई बस नहीं चलेगा** 4. **जिन टारो**=दूर न करो 5. सुधारो 6. सँभालने वाला

13) साँईं बिन दरद करेजे होय॥ टेक॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निंदिया, कासे कहूँ दुख रोय॥
आधी रतियाँ पिछले पहरवाँ, साँईं बिन तरस तरस रही सोय॥
पाँचो मारि पचीसो बस करि, इन में चहै कोइ होय॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु मिले सुख होय॥

14) साचा साहिब एक तू, बंदा आसिक तेरा॥ टेक॥
निसदिन जप तुझ नाम का, पल बिसरै नाहीं।
हर दम राख हजूर में[1], तू साचा साईं॥
गफलत मेरी मेटि के, मोहिं कर हुसियारा।
भगति भाव बिस्वास में, देखौं दरस तुम्हारा॥
सिफत[2] तुम्हारी क्या करौं, तुम गहिर गँभीरा।
सूरत[3] में मूरत[4] बसै, सोइ निरख[5] कबीरा॥

15) **दोहे**

बिनवत हौं कर जोरि कै, सुनिये कृपा-निधान।
साध सँगति सुख दीजिये, दया गरीबी दान॥

जो अब के सतगुरु मिलैं, सब दुख आखौं रोय।
चरनों ऊपर सीस धरि, कहौं जो कहना होय॥

मेरे सतगुरु मिलैंगे, पूछैंगे कुसलात।
आदि अंत की सब कहौं, उर अंतर की बात॥

सुरति करौ[6] मेरे साइयाँ, हम हैं भवजल माहिं।
आपे ही बहि जायँगे, जो नहिं पकरौ बाहिं॥

---

1. सामने 2. महिमा 3. ध्यान 4. स्वरूप 5. देखता है 6. **सुरति करौ**=सुध लो

क्या मुख लै बिनती करौं, लाज आवत है मोहिं।
तुम देखत औगुन करौं, कैसे भावौं तोहिं॥

मैं अपराधी जनम का, नख सिख भरा बिकार।
तुम दाता दुख-भंजना, मेरी करो सम्हार॥

अवगुन मेरे बाप जी, बकस गरीब निवाज।
जो मैं पूत कपूत हौं, तऊ पिता को लाज॥

औगुन किये तो बहु किये, करत न मानी हार।
भावै बंदा बकसिये, भावै गरदन मार॥

जो मैं भूल बिगाड़िया, ना करु मैला चित्त।
साहिब गरुआ[1] लोड़िये, नफर[2] बिगाड़ै नित्त॥

साहिब तुम जनि[3] बीसरो, लाख लोग लगि जाहिं।
हम से तुमरे बहुत हैं, तुम सम हमरे नाहिं॥

कर जोरे बिनती करौं, भवसागर आपार।
बंदा ऊपर मिहर करि, आवागवन निवार॥

अंतरजामी एक तुम, आतम के आधार।
जो तुम छोड़ौ हाथ तें, कौन उतारै पार॥

भवसागर भारी महा, गहिरा अगम अगाह।
तुम दयाल दाया करो, तब पाओं कछु थाह[4]॥

साहिब तुमहिं दयाल हौ, तुम लगि मेरी दौर।
जैसे काग जहाज को, सूझै और न ठौर॥

1. महान 2. सेवक 3. मत 4. भेद

मन परतीत न प्रेम रस, ना कछु तन में ढंग।
ना जानौं उस पीव से, क्योंकर रहसी रंग॥

जिन को साईं रँगि दिया, कबहुँ न होहिं कुरंग।
दिन दिन बानी आगरी[1], चढ़ै सवाया रंग॥

मेरा मुझ में कछु नहीं, जो कछु है सो तुज्झ।
तेरा तुझ को सौंपते, का लागत है मुज्झ॥

औगुनहारा गुन नहीं, मन का बड़ा कठोर।
ऐसे समरथ सतगुरू, ताहि लगावैं ठौर॥

तुम तो समरथ साइयाँ, दृढ़ कर पकरो बाहिं।
धुरही[2] लै पहुँचाइयो, जनि छाड़ो मग[3] माहिं॥

कबीर करत है बीनती, सुनो संत चित लाय।
मारग सिरजनहार का, दीजै मोहिं बताय॥

सतगुरु बड़े दयाल हैं, संतन के आधार।
भवसागरहि अथाह से, खेइ उतारैं पार॥

भक्ति दान मोहिं दीजिये, गुरु देवन के देव।
और नहीं कछु चाहिये, निसु दिन तेरी सेव॥

बानी धनी धरमदास जी

1) बंदी-छोर[4] बिनती सुनि लीजै॥ टेक॥
कपट कुटिल अपराधी द्रोही, ठहरावो मन निस्चै।
नाम तुम्हारा अधम उधारन[5], ता की दिच्छा[6] दीजै॥

1. श्रेष्ठ 2. धुरधाम 3. रास्ता 4. **बंदी-छोर**=बंधन से छुड़ानेवाला
5. उद्धार करनेवाला 6. दीक्षा, नामदान

पाप पुन्न नहिं जाँचन[1] कीजै, काटि फंद अब दीजै।
माँगूँ अपन सुभाव दयानिधि, सुनि अनुमान न कीजै॥
बिषे बिनास रहूँ निसु बासर, यह तन छिन छिन छीजै[2]।
साठ जन्म को हौं अपराधी, अबकी छिमा प्रभु कीजै॥
सतगुरु नाम मुनींद्र कहाये, साहेब कबीर सुनि लीजै।
धरमदास बिनवै कर जोरी, काटि चौरीसी दीजै॥

2) बिन दरसन भइ बावरी, गुरु द्यो[3] दीदार॥ टेक॥
ठाढ़ि[4] जोहौं[5] तोरी बाट[6] में, साहेब चलि आवो।
इतनी दया हम पर करो, निज छबि दरसावो॥
कोठरी रतन जड़ाव की, हीरा लागे किवार।
ताला कुन्जी प्रेम की, गुरु खोलि दिखावो॥
बंदा भूला बंदगी, तुम बकसनहार।
धर्मदास अरजी सुनो, भव पार करावो॥

3) भक्ति दान गुरु दीजिये देवन के देवा हो।
चरन कँवल बिसरौं नहीं करिहौं पद सेवा हो॥
तिरथ बरत मैं ना करौं ना देवल पूजा हो।
तुमहिं ओर निरखत[7] रहौं मेरे और न दूजा हो॥
आठ सिद्धि नौ निद्धि[8] हैं बैकंठु निवासा हो।
सो मैं ना कछु माँगहूँ मेरे समरथ दाता हो॥
सुख सम्पति परिवार धन सुन्दर बर नारी हो।
सुपनेहु इच्छा ना उठै गुरु आन[9] तुम्हारी हो॥
धरमदास की बीनती साहेब सुनि लीजै हो।
दरसन देहु पट[10] खोलि कै आपन करि लीजै हो॥

1. परख 2. कमज़ोर 3. दो (दयो) 4. खड़ी हुई 5. प्रतीक्षा कर रही हूँ
6. मार्ग 7. देखना 8. ख़ज़ाने 9. सिवाय 10. परदा

4) मिहरबान है साहेब मेरा। दिल भर दरसन पाऊँ तेरा॥
तुम दाता मैं सदा भिखारी। देव दीदार जाउँ बलिहारी॥
करूँ बंदगी खिजमत[1] दीजै। बकसो चूक दया बहु कीजै॥
सेवक तें बिगरै सौ बारा। सतगुरु साहेब लेव उबारा॥
औगुन सेवक साहेब जानै। साहेब मन में ना गिल्यानै[2]॥
धर्मदास लइ तुम्हरि पनाह। अगले पछिले बकस गुनाह॥

5) सतगुरु आवो हमरे देस, निहारौं बाट खड़ी॥ टेक॥
वाही देस की बतियाँ रे, लावैं संत सुजान।
उन संतन के चरन पखारौं[3], तन मन करौं कुरबान॥
वाही देस की बतियाँ हम से, सतगुरु आन कही।
आठ पहर के निरखत हमरे, नैन की नींद गई॥
भूल गई तन मन धन सारा, ब्याकुल भया सरीर।
बिरह पुकारै बिरहनी, ढरकत नैनन नीर॥
धरमदास के दाता सतगुरु, पल में कियो निहाल।
आवागवन की डोरी कट गई, मिटे भरम जंजाल॥

6) साहेब दीनबंधु हितकारी॥ टेक॥
कोटिन ऐगुन[4] बालक करई, मात पिता चित एक न धारी॥
तुम गुरु मात पिता जीवन के, मैं अति दीन दुखारी॥
प्रनत-पाल[5] करुना-निधान प्रभु, हमरी ओर निहारी॥
जुगन जुगन से तुम चलि आये, जीवन के हितकारी॥
सदा भरोसे रहूँ तुम्हारे, तुम प्रतिपाल हमारी॥
मोरे तुम हीं सत्त सुकृत हौ, अंतर और न धारी॥

1. सेवा 2. मन...गिल्यानै=मन में न रखना 3. धोऊँ 4. अवगुण
5. शरणागत के रक्षक

जानत हौ जन के तन मन की, अब कस मोहिं बिसारी॥
को कहि सकै तुम्हारी महिमा, केहि न दिह्यो पद भारी॥
धरमदास पर दाया कीन्हीं, सेवक अहौं[1] तुम्हारी॥

7) साहेब मोरी ओर निहारो।
परजा पुत्र अहौं मैं साहेब, बहुत बात मैं टारो॥
हौं मैं कोटि जनम को पापी, मन बच करम असारो[2]।
एकौ कर्म छुटे ना कबहूँ, बहु बिधि बात बिगारो॥
हौं अपराधी बहुत जुगन को, नइया मोर उबारो।
बंदीछोर सकल सुख-दाता, करुनामय करत पुकारो॥
सीस चढ़ाइ पाप की मोटरी[3], आयो तुम्हरे द्वारो।
को अस हमरे भार उतारै, तुमहीं हेतु[4] हमारो॥
धरमदास यह बिनती बिनवै, सतगुरु मो को तारो।
साहेब कबीर हंस के राजा[5], अमर लोक पहुँचावो॥

बानी गुरु रविदास जी

1) अब कैसे छूटै नाम रट लागी॥ टेक॥
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी बास अंग अंग समानी।
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा॥
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति जरै दिन राती।
प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा॥
प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करै 'रविदासा'।

1. हूँ 2. बेकार 3. भारी गठरी 4. हितकारी
5. **हंस...राजा**=आत्मा के स्वामी

राग मारू बाणी रविदास जीउ की

2) ऐसी लाल तुझ बिन कउन करै॥
गरीब निवाज[1] गुसईआ[2] मेरा माथै छत्र[3] धरै॥१॥रहाउ॥
जा की छोत[4] जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै[5]॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंद काहू ते न डरै॥१॥
नामदेव कबीर तिलोचन सधना सैन तरै॥
कहे रविदास सुनहो रे संतहो हर जीउ ते सभै सरै[6]॥२॥

राग सोरठ बाणी भगत रविदास जी की

3) जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा॥१॥
माधवे तुम न तोरहो तउ हम नही तोरह॥
तुम सिउ तोर कवन सिउ जोरह॥१॥रहाउ॥
जउ तुम दीवरा[7] तउ हम बाती॥ जउ तुम तीरथ तउ हम जाती[8]॥२॥
साची प्रीत हम तुम सिउ जोरी॥ तुम सिउ जोर अवर संग तोरी॥३॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा॥ तुम सो ठाकुर अउर न देवा॥४॥
तुमरे भजन कटह जम फांसा॥ भगति हेत गावै रविदासा॥५॥

4) जो तुम तोरो राम मैं नहिं तोरौं।
तुम से तोरि कवन से जोरौं॥ टेक॥
तीरथ बरत न करौं अँदेसा[9]। तुम्हरे चरन कमल के भरोसा॥
जहँ जहँ जाओं तुम्हरी पूजा। तुम सा देव और नहिं दूजा॥
मैं अपनो मन हरि से जोरयों। हरि से जोरि सबन से तोरयों॥
सबही पहर तुम्हारी आसा। मन क्रम बचन कहै रैदासा॥

1. कृपा करनेवाला 2. स्वामी 3. छत्र, जो वैभव का सूचक है
4. छूआछूत 5. कृपा करता है 6. **सभै सरै**=सब काम पूरे हो जाते हैं
7. दीपक 8. यात्री 9. संशय

राग आसा बाणी स्री रविदास जीउ की

5) तुम चंदन हम इरंड[1] बापुरे संग तुमारे बासा॥
नीच रूख[2] ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥१॥
माधउ सतसंगत सरन तुम्हारी॥
हउ अउगन तुम्ह उपकारी॥१॥रहाउ॥
तुम मखतूल[3] सुपेद सपीअल[4] हम बपुरे जस कीरा[5]॥
सतसंगत मिल रहीऐ माधउ जैसे मधुप[6] मखीरा[7]॥२॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनम हमारा॥
राजा राम की सेव न कीन्ही कहे रविदास चमारा॥३॥

6) तुम्ह करहु क्रिपा मुहि सांईं॥टेक॥
स्वांस-स्वांस तुझ नाम संभारउ, तुम्हहि भेंटि ममु मन हरसाई।
तुमहु दयाल क्रिपाल करुणानिध, तुम्हहि दीनबंधु रघुराई॥
तुम्हरी सरन रहौं निसवासर, भरमत फिरौं न हौं हरि राई।
तुम्हरी अनुकम्प मान मदु छूटै, राम रसाइन[8] अम्रितु पाई॥
ऐसो बुध जाचिहुं करुनामैं, तुझ चरन तजि कितहु न जाई।
चरण-सरन 'रविदास' रावरी, अपनो जान लेहु उर लाई॥

7) दरसन दीजै राम दरसन दीजै।
दरसन दीजै हो बिलंब न कीजै॥टेक॥
दरसन तोरा जीवनि मोरा, बिन दरसन क्यूं जीवै हो चकोरा।
माधउ सतगुर सब जग चेला, अबकैं बिछुरैं मिलन दुहेला[9]।
धन जोबन की झूठी आसा, सति सति भाखै जन 'रविदासा'॥

1. एरंड का पौधा 2. वृक्ष 3. रेशम 4. पीला 5. कीड़ा
6. मधु मक्खी 7. शहद 8. राम रसाइन=भाव नाम 9. कठिन

8) प्रभु जी तुम औगन बकसन हार।
हऊं बहु नीच उधरौ पातकी[1], मूरिख निपट गंवार॥टेक॥
मो सम पतित अधम नहीं कोउ, क्षीन[2] दुखी विसयार[3]।
नांम सुनहि नरकु भजै ह्वै, तुम्ह बिन कवन हमार॥
पतित पावन विड़द[4] तिहारौ, आई परौं तोहि दुवार।
कहि रविदास इहु मन आसा, निज कर लेहू उबार॥

9) प्रभु जी संगति सरनि तिहारी। जग जीवन राम मुरारी॥टेक॥
गली गली कौ नीर बहि आयो, सुरसरी[5] जाइ समायो।
संगति कै परताप महातम, नांव गंगोदिक[6] पायो॥
स्वांति बूंद बरषै फनि ऊपर, सीस विषै विष होइ।
वाही बूंद को मोती निपजै[7], संगति की अधिकाई॥
तुम चंदन हम इरंड बापुरे, निकटि तुम्हारे बासा[8]।
नीच ब्रिख[9] तै ऊंच भए हैं, तुम्हरी बास सुबासा[10]॥
जाति भी ओछी पांति भी ओछी, ओछा कसब[11] हमारा।
तुम्हरी क्रिपा तैं ऊंच भए हैं, कहै 'रविदास' चमारा॥

10) माधौ! मुहि इकु सहारौ तोरा॥टेक॥
तुम्हहि मात पित प्रभ मेरो, हौं मसकीन[12] अति भोरा[13]।
तुम जउ तजौ कवन मोहि राखे, सहिहै कौनु निहोरा[14]॥
बाहाडंबर[15] हौं कबहुं न जान्यौ, तुम चरनन चित मोरा।
अगुन[16] स्रगुन[17] दौ समकरि[18] जान्यौ, चहुं दिस दरसन तोरा॥
पारस मनि मुहि रतु[19] नहिं भावै, जग जंजार न थोरा।
कहि 'रविदास' तजि सभ त्रिस्ना, इकु राम चरन चित मोरा॥

1. पापी 2. कमज़ोर 3. विषयी, कामी 4. मर्यादा, यश 5. गंगा
6. गंगाजल 7. उत्पन्न 8. निवास 9. वृक्ष 10. सुगंध
11. धंधा 12. असहाय 13. भोला 14. विनती, प्रार्थना
15. दिखावा 16. निर्गुण 17. सगुण 18. समान 19. ज़रा भी

राग गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी

11) मेरी संगत पोच[1] सोच दिन राती॥
मेरा करम कुटिलता जनम कुभांती[2]॥१॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना[3]॥
मोहे न बिसारहो मै जन तेरा॥१॥ रहाउ॥
मेरी हरहो बिपत जन करहो सुभाई॥
चरण न छाडउ सरीर कल[4] जाई॥२॥
कहो रविदास परउ तेरी साभा[5]॥
बेग मिलहो जन कर न बिलांबा॥३॥

राग धनासरी भगत रविदास जी की

12) हम सर[6] दीन दइआल न तुम सर अब पतीआर[7] किआ कीजै॥
बचनी तोर मोर मन मानै जन कउ पूरन दीजै॥१॥
हउ बल बल जाउ रमईआ कारने॥ कारन कवन अबोल[8]॥ रहाउ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इह जनम तुम्हारे लेखे[9]॥
कहे रविदास आस लग जीवउ चिर भइओ दरसन देखे॥२॥

बानी मीराबाई जी

1) अब तो निभायाँ सरेगी[10], बाँह गहे की लाज॥
समरथ सरन तुम्हारी सइयाँ, सरब सुधारण काज॥
भवसागर संसार अपरबल[11], जामें तुम हो जहाज॥
निरधाराँ[12] आधार जगत गुरू, तुम बिन होय अकाज[13]॥
जुग जुग भीर[14] हरी भक्तन की, दीनी मोक्ष समाज॥
मीराँ सरण गही चरणन की, लाज रखो महाराज॥

1. नीच 2. निम्न जाति से 3. जीअ...जीवना=जीवन-दाता 4. बल
5. सभा, दरबार 6. समान 7. परख 8. बोलता नहीं 9. सेवा में
10. पूरी होगी 11. भयानक 12. बेसहारों का 13. हानि, बिगाड़ 14. विपत्ति

2) अब मैं सरण तिहारी जी, मोहिं राखो कृपानिधान॥ टेक॥
अजामील[1] अपराधी तारे, तारे नीच सदान[2]।
जल डूबत गजराज[3] उबारे, गणिका[4] चढ़ी बिमान॥
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत[5] संत सुजान।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान॥
कहँ लगि कहूँ गिनत नहिं आवै, थकि रहे बेद पुरान।
मीरा कहै मैं सरण रावली[6], सुनियो दोनों कान॥

3) कोई कहियौ रे प्रभु आवन की, आवन की मन भावन की। (टेर)
आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाँण[7] पड़ी ललचावन[8] की॥
ए दोई नैण कह्यो नहिं मानैं, नदियाँ बहै जैसे सावन की॥
कहा करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख नहीं उड़ जावन की॥
मीराँ कहै प्रभु कब रै मिलोगे, चेरी[9] भई हूँ तेरे दावन की॥

4) छोड़ मत जाज्योजी महाराज॥
में अबला बल नायँ गुसाईं तुम ही मेरे सिरताज॥
में गुणहीन गुण नायँ गुसाईं तुम समरथ महाराज॥
थाँरी होय के किणरे[10] जाउँ तुम ही हिवड़ा[11] रो[12] साज॥
मीराँ के प्रभु और न कोई राखो अब के लाज॥

5) तनक हरि चितवौ[13] जी मोरी ओर॥
हम चितवत तुम चितवत नाहीं दिल के बड़े कठोर॥
मेरे आसा चितवनि तुमरी और न दूजी दोर[14]॥

1. जो अंत में पुत्र नारायण का नाम लेने से तर गया। 2. सदना एक क़साई था जो सत्संगति से प्रभुभक्त हो गया। 3. एक हाथी जिसको प्रभु ने मगरमच्छ की पकड़ से छुड़ाया। 4. एक वेश्या जिसका परमात्मा के नाम-सिमरन से उद्धार हो गया।
5. बताते हैं 6. आपकी भाव प्रभु की 7. आदत 8. तरसाने 9. सेविका
10. किधर 11. हृदय 12. का 13. देखो 14. पहुँच, दौड़

तुम से हमकूँ एक हो जी हमसी लाख करोर॥
ऊभी[1] ठाड़ी अरज करत हूँ अरज करत भयो भोर॥
मीराँ के प्रभु हरि अविनासी देस्यूँ प्राण अकोर[2]॥

6) तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ,
हूँ हाजिर नाजिर[3] कबकी खड़ी॥ टेक॥
साऊ[4] थे दुसमण होइ लागे, सब ने लगूँ कड़ी[5]।
तुम बिन साऊ कोऊ नहीं है, डिगी[6] नाव मेरी समँद अड़ी॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी।
बान बिरह के लगे हिये में, भूलूँ न एक घड़ी॥
पत्थर की तो अहिल्या तारी, बन के बीच पड़ी।
कहा[7] बोझ मीरा में कहिये, सौ ऊपर एक धड़ी[8]॥
गुरु रैदास मिले मोहिं पुरे, धुर से कलम भिड़ी।
सतगुरु सैन[9] दई जब आ के, जोत में जोत रली॥

7) तुम सुनो दयाल म्हाँरी अरजी॥ टेक॥
भौसागर में बही जात हूँ, काढ़ो तो थाँरी मरजी॥
यो संसार सगो नहिं कोई, साचा सगा रघुबर जी॥
मात पिता और कुटँब कबीलो, सब मतलब के गरजी[10]॥
मीरा की प्रभु अरजी सुन लो, चरन लगाओ थाँरी मरजी॥

8) दरस बिन दुखन लागे नैन॥ टेक॥
जब से तुम बिछरे मेरे प्रभु जी, कबहुँ न पायों चैन॥
सबद सुनत मेरी छतियाँ कंपै, मीठे लगे तुम बैन॥
एक टकटकी पंथ निहारूँ, भई छमासी रैन॥

1. पंजों के बल 2. भेंट 3. दर्शन करनेवाली 4. रक्षक
5. कड़वी, बुरी 6. डगमगाती है 7. क्या 8. एक धड़ी=पाँच सेर
9. मार्गदर्शन 10. स्वार्थी

बिरह बिथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गइ करवत[1] अैन॥
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन॥

9) प्यारे दर्शन दीजो आय, तुम बिन रह्यो न जाय। (टेर)
जल बिन कमल चंद बिन रजनी, ऐसे तुम देख्यां बिन सजनी।
आकुल ब्याकुल फिरूं रैन दिन, विरह कलेजा खाय॥
दिवस न भूख नींद नहिं रैनां, मुख से कथन न आवै बैनां।
कहा करूं कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत बुझाय॥
क्यों तरसाओ अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।
मीराँ दासी जनम जनम की, परी तुमारे पांय॥

10) मन माने जब तार प्रभुजी॥
नदिया गहरी नाव पुरानी। किस विध उतरूँ पार॥
वेद पुरान बखानी महिमा। लगे न गुण को पार॥
योग याग[2] जप तप नहीं जानूं। नाम निरन्तर सार[3]॥
बाट तकत हौं कबकी ठाड़ी। त्रिभुवन पालन हार॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर। चरण कमल बलिहार॥

11) मैं वारी जाऊँ राम, तुम आवो गली हमारी।
तुम देख्यां बिन कल न परत है, जोऊँ बाट तुम्हारी॥
कौन सखीसों तुम रंगराते, हमते अधिक पियारी।
किरपा कर मोहे दरशन दीजो, सब तकसीर[4] बिसारी॥
मैं शरनागत तुम हो दयाला, भव से तार मुरारी।
मीराँ दासी तुम चरनन की बार बार बलिहारी॥

1. आरा 2. यज्ञ 3. सत्य 4. भूल, अपराध

12) मैं हरि बिन क्यों जिऊँ री माइ॥
पिव कारण बौरी भई ज्यूँ काठहि घुन खाइ।
ओखद मूल न सँचरै मोहि लाग्यो बौराइ॥
कमठ[1] दादुर[2] बसत जल में जलहि ते उपजाइ।
मीन जल के बिछुरै तन तलफि करि मरि जाइ॥
पिव ढूँढ़ण बन-बन गई कहुँ मुरली धुनि पाइ।
मीराँ के प्रभु लाल गिरधर मिलि गये सुखदाइ॥

13) मोहे लागी लगन गुरु-चरनन की॥ टेक॥
चरन बिना कछुवै नहिं भावै, जग-माया सब सपनन की॥
भवसागर सब सूखि गयौ है, फिकर नहीं मोहि तरनन की॥
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, आस वही गुरु-सरनन की॥

14) म्हाँरो जनम मरन को साथी, थाँ ने[3] नहिं बिसरूँ दिन राती॥ टेक॥
तुम देख्याँ बिन कल[4] न पड़त है, जानत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती[5]॥
यो संसार सकल जग झूँठो, झूँठा कुल रा नाती।
दोउ कर जोड़याँ अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती॥
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यूँ मद मातो हाथी।
सतगुरु दस्त[6] धर्‌यो सिर ऊपर, आँकुस[7] दे समझाती॥
पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती[8]॥

1. कछुआ 2. मेढक 3. थाँ ने=तुम्हें 4. चैन 5. लाल 6. हाथ
7. अंकुश 8. रम गई हूँ

15) म्हारी सुध ज्यूँ जानो ज्यूँ लीजो जी॥ टेक॥
पल पल भीतर पंथ निहारूँ, दरसण म्हाँने[1] दीजो जी॥
मैं तो हूँ बहु औगणहारी, औगण चित्त मत दीजो जी॥
मैं तो दासी थारे चरण-जनाँ की, मिल बिछुरन मत कीजो जी॥
मीराँ तो सतगुरु के सरणे, हरिचरणाँ चित दीजो जी॥

16) री मेरे पार निकस गया सतगुरू मार्‌या तीर।
विरह भाल[2] लगी उर अंदर व्याकुल भया सरीर॥
इत उत चित चलै नहिं कबहूँ, डारी प्रेम-जंजीर।
कै[3] जाणे मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर॥
कहा करूँ मेरो बस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर।
मीराँ कहै प्रभु तुम मिलियाँ बिन प्राण धरत नहीं धीर॥

17) हरि मने पार उतार, नमी नमी विनती करूं छुं॥
जगत मां[4] जन्मीने[5] बहु दुःख देख्या, संसार शोक निवार[6]॥
कष्ट आपे मने कर्म ना[7] बंधन, दूर तुं कर किर्तार[8]॥
आ संसार वह्यो वह्यो जाय छे, लख चोराशी धार॥
मीराँ कहे प्रभु गिरधर नागर, आवागमन निवार॥

18) हेरी मैं तो प्रेम दिवानी, मेरो दरद न जाने कोय।
सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होय।
गगन मंडल में सेज पिया की, किस बिध मिलना होय।
घायल की गति[9] घायल जानै, की जिन लाई होय।
जौहर की गति जौहर[10] जानै, की जिन जौहर होय।

1. मुझे 2. भाला 3. भाव केवल 4. में 5. जन्म लेकर
6. दूर कर 7. मने...ना=मेरे कर्मों के कारण 8. रचना करनेवाले 9. अवस्था
10. अपने प्रियतम के लिए प्राण न्यौछावर करनेवाली

दरद की मारी बन बन डोलूं, बैद मिला नहिं कोय।
मीरां की प्रभु पीर मिटैगी, जब बैद सांवलिया[1] होय।

बानी भक्त सूरदास जी

1) अबकी राखि लेहु भगवान।
हम अनाथ बैठी द्रुम[2] डरियाँ, पारधि[3] साध्यो[4] बान॥
ता के डर निकसन चाहत हौं, ऊपर रह्यो सचान[5]।
दोऊ भाँति दुख भयो कृपानिधि, कौन उबारै प्रान॥
सुमिरत ही अहि[6] डस्यो पारधी, लाग्यो तीर सचान।
सूरदास गुन कहँ लग बरनौं, जै जै कृपानिधान॥

2) तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी, करनी[7] कछु न करी॥
औगुन मोसे बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट[8] बाँध करि, अपने सीस धरी॥
दारा[9] सुत धन मोह लिये हौं, सुधि बुधि सब बिसरी।
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी॥

3) दीनानाथ अब बार तुम्हारी।
पतित-उधारन बिरद जानि के, बिगरी लेहु सँवारी॥
बालापन खेलत ही खोयो, जुबा[10] बिषय रस माते[11]।
बृद्ध भये सुधि प्रगटी[12] मो को, दुखित पुकारत ता तें॥

1. परमात्मा 2. वृक्ष 3. शिकारी 4. निशाना बनाया हुआ है
5. बाज़ पक्षी 6. साँप 7. भक्ति 8. गठरी
9. स्त्री 10. जवानी 11. मस्ती में 12. सुधि प्रगटी=होश आई

सुतन तज्यो त्रिय[1] भ्रात तज्यो सब, तन तें तुचा[2] भइ न्यारी।
स्रवन न सुनत चरन गति थाकी, नैन बहे जल धारी॥
पलित केस कफ कण्ठ अब रूँध्यो, कल[3] न परै दिन राती।
माया मोह न छाड़ै तृस्ना, यह दोऊ दुखदाती॥
अब यह ब्यथा दूर करिबे को, और न समरथ कोई।
सूरदास प्रभु करुना-सागर, तुम तें होय सो होई॥

4) नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो॥टेक॥
तुम नाथन के नाथ सुवामी, दाता नाम तिहारो।
करमहीन जनम को अंधो, मो तें कौन नकारो[4]॥
तीन लोक के तुम प्रति-पालक, मैं तो दास तिहारो।
तारी जाति कुजाति प्रभू जी, मो पर किरपा धारो॥
पतितन में इक नायक[5] कहिये, नीचन में सरदारो[6]।
कोटि पापी इक पासँग[7] मेरे, अजामिल कौन बिचारो॥
नाठो[8] धरम नाम सुनि मेरो, नरक कियो हठ तारो।
मो को ठौर नहीं अब कोऊ, अपनो बिरद सम्हारो॥
छुद्र पतित तुम तारे रमापति[9], अब न करो जिय गारो[10]।
सूरदास साचो तब माने, जो ह्वै मम निस्तारो॥

5) प्रभु, मैं पीछौ लियौ तुम्हारौ।
तुम तौ दीनदयाल कहावत, सकल आपदा[11] टारौ॥
महा कुबुद्धि, कुटिल, अपराधी, औगुन भरि लियौ भारौ।
सूर कूर[12] की याही बिनती, लै चरननि मैं डारौ॥

1. स्त्री 2. त्वचा 3. चैन 4. निकम्मा 5. अगुआ 6. मुखिया
7. थोड़े हिस्से के बराबर 8. भाग गया 9. प्रभु 10. गर्व 11. मुसीबत
12. नीच

6) मो सम कौन कुटिल[1] खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो निमक-हरामी॥
भरि भरि उदर[2] बिषय को धावों, जैसे सूकर[3] ग्रामी।
हरि-जन छाड़ हरी-बिमुखन[4] की, निसि दिन करत गुलामी॥
पापी कौन बड़ो है मो तें, सब पतितन में नामी।
सूर पतित को ठौर कहाँ है, सुनिये श्रीपति स्वामी[5]॥

7) प्रभु जी मेरे औगुन चित न धरो।
सम-दरसी है नाम तिहारो, अब मोहिं पार करो॥
इक नदिया इक नार[6] कहावत, मैलो नीर भरो।
जब दोनों मिलि एक बरन[7] भये, सुरसरि[8] नाम परो॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक[9] परो।
पारस गुन अवगुन नहिं चितवै, कंचन करत खरो[10]॥
यह माया भ्रम जाल निवारो, सूरदास सगरो[11]।
अबकी बेर मोहिं पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो[12]॥

बानी गोस्वामी तुलसीदास जी

1) आपनो कबहुँ करि जानिहौ।
राम गरीबनिवाज राजमनि[13], बिरद-लाज उर आनिहौ॥
सील-सिंधु, सुंदर, सब लायक, समरथ, सदगुन-खानि[14] हौ।
पाल्यो है, पालत, पालहुगे प्रभु, प्रनत-प्रेम पहिचानिहौ॥

1. धोखेबाज़ 2. पेट 3. सूअर 4. प्रभु से विमुख 5. परमात्मा
6. नाला 7. रंग 8. गंगा 9. क़साई 10. शुद्ध
11. सारा 12. **प्रन...टरो**=जीवों को तारने का प्रण नहीं रहेगा 13. राजाओं में श्रेष्ठ
14. गुणों का ख़ज़ाना

बेद-पुरान कहत, जग जानत, दीनदयालु दिन-दानि[1] हौ।
कहि आवत, बलि जाउँ, मनहुँ मेरी बार बिसारे बानि[2] हौ॥
आरत[3]-दीन-अनाथनि के हित, मानत लौकिक कानि[4] हौ।
है परिनाम भलो तुलसीको, सरनागत-भय-भानि[5] हौ॥

2) जाउँ कहाँ तजि चरन तुम्हारे।
काको[6] नाम पतित-पावन जग, केहि[7] अति दीन पियारे॥
कौने देव बराइ[8] बिरद-हित[9], हठि हठि अधम उधारे।
खग[10], मृग, ब्याध[11], पषान[12], बिटप[13] जड़, जवन[14] कवन सुर तारे॥
देव, दनुज[15], मुनि, नाग, मनुज सब, माया-बिबस बिचारे।
तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे॥

3) तुम तजि हौं कासों कहौं, और को हितु मेरे?
दीनबंधु! सेवक, सखा, आरत, अनाथपर सहज छोह[16] केहि केरे॥
बहुत पतित भवनिधि तरे, बिनु तरि[17] बिनु बेरे[18]।
कृपा-कोप-सतिभायहू, धोखेहु-तिरछेहू, राम! तिहारेहि हेरे[19]॥
जो चितवनि सौंधी[20] लगै, चितइये[21] सबेरे[22]।
तुलसिदास अपनाइये, कीजै न ढील, अब जिवन-अवधिअति नेरे॥

4) तुम सम दीनबंधु, न दीन कोउ मो सम, सुनहु नृपति रघुराई।
मो सम कुटिल-मौलिमनि[23] नहिं जग, तुम सम हरि! न हरन कुटिलाई॥

1. प्रतिदिन कल्याण करनेवाले 2. आदत 3. दुःखी 4. लोक-लाज
5. **सरनागत...भानि**=शरणागत का भय नष्ट करनेवाला
6. किसका 7. किसको 8. बड़ाई
9. यश की लाज के लिए 10. पक्षी भाव जटायु 11. शिकारी
12. पत्थर भाव अहल्या 13. वृक्ष भाव यमलार्जुन वृक्ष 14. निम्न जाति का
15. राक्षस 16. स्नेह 17. नाव
18. बेड़ा 19. देखने से 20. अच्छी
21. देखिये 22. जल्दी 23. दुष्टों में सबसे ऊँचा

हौं मन-बचन-कर्म पातक-रत[1], तुम कृपालु पतितन-गतिदाई।
हौं अनाथ, प्रभु! तुम अनाथ-हित, चित यहि सुरति[2] कबहुँ नहिं जाई॥
हौं आरत[3], आरति-नासक तुम, कीरति निगम[4] पुराननि गाई।
हौं सभीत[5] तुम हरन सकल भय, कारन कवन कृपा बिसराई॥
तुम सुखधाम राम श्रम-भंजन, हौं अति दुखित त्रिबिध[6] श्रम पाई।
यह जिय जानि दास तुलसी कहँ राखहु सरन समुझि प्रभुताई[7]॥

5) तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी॥
नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो।
मो समान आरत नहिं, आरतिहर[8] तोसो॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो।
तात-मात, गुरु-सखा, तू सब बिधि हितु मेरो॥
तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जौ भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै॥

6) दीनबंधु, सुखसिंधु, कृपाकर, कारुनीक[9] रघुराई।
सुनहु नाथ! मन जरत त्रिबिध जुर[10], करत फिरत बौराई[11]॥
कबहुँ जोगरत, भोग-निरत सठ हठ बियोग-बस होई।
कबहुँ मोहबस द्रोह करत बहु, कबहुँ दया अति सोई॥
कबहुँ दीन, मतिहीन, रंकतर[12], कबहुँ भूप अभिमानी।
कबहुँ मूढ़, पंडित बिडंबरत[13], कबहुँ धर्मरत ग्यानी॥

1. पाप में लगा हुआ 2. ध्यान 3. दुःखी 4. वेद 5. डरा हुआ
6. तीन प्रकार के दुःख 7. बड़ाई 8. दुःख हरनेवाला 9. दयालु
10. बुख़ार, ताप 11. पागलपन 12. अति निर्धन 13. पाखंड करना

कबहुँ देव[1]! जग धनमय रिपुमय[2], कबहुँ नारिमय भासै[3]।
संसृति-संनिपात[4] दारुन[5] दुख, बिनु हरि-कृपा न नासै[6]॥
संजम, जप, तप, नेम, धरम, ब्रत बहु भेषज-समुदाई[7]।
तुलसिदास भव-रोग[8], रामपद-प्रेम-हीन नहिं जाई॥

7) मैं हरि पतित-पावन सुने।
मैं पतित तुम पतित-पावन दोउ बानक[9] बने॥
ब्याध गनिका गज अजामिल साखि[10] निगमनि[11] भने।
और अधम अनेक तारे जात कापै गने॥
जानि नाम अजानि लीन्हें नरक सुरपुर मने[12]।
दासतुलसी सरन आयो, राखिये आपने॥

8) मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो[13]।
याके लिये सुनहु करुनामय, मैं जग जनमि-जनमि दुख रोयो॥
सीतल मधुर पियूष[14] सहज सुख, निकटहि रहत दूरि जनु[15] खोयो।
बहु भाँतिन स्रम करत मोहबस, बृथहि मंदमति बारि बिलोयो[16]॥
करम-कीच जिय जानि, सानि[17] चित, चाहत कुटिल मलहि मल धोयो।
तृषावंत[18] सुरसरि बिहाय[19] सठ,[20]
फिरि-फिरि बिकल अकास निचोयो[21]॥
तुलसिदास प्रभु! कृपा करहु अब, मैं निज दोष कछू नहिं गोयो[22]।
डासत[23] ही गइ बीति निसा सब, कबहुँ न नाथ! नींद भरि सोयो॥

1. हे प्रभु 2. शत्रुमय 3. लगता है 4. संसार रूपी भयानक ज्वर 5. भयंकर
6. नष्ट 7. औषधियाँ 8. भवसागर में डुबोनेवाले काम, क्रोध आदि रोग
9. संयोग 10. साक्षी, गवाह 11. वेद 12. मनाही होना 13. बहकाना
14. अमृत 15. समझते हुए 16. **बारि बिलोयो**=पानी मथता रहा 17. सने हुए
18. प्यासा 19. **सुरसरि बिहाय**=गंगा को छोड़कर 20. दुष्ट 21. निचोड़ता रहा
22. छिपाना 23. बिछौना बिछाते-बिछाते

9) यह बिनती रघुबीर गुसाईं।
और आस-बिस्वास-भरोसो, हरो जीव-जड़ताई[1]॥
चहौं न सुगति, सुमति, संपति कछु, रिधि-सिधि[2] बिपुल[3] बड़ाई।
हेतु-रहित अनुराग राम-पद, बढ़ै अनुदिन अधिकाई॥
कुटिल करम लै जाहिं मोहि, जहँ जहँ अपनी बरिआई[4]।
तहँ तहँ जनि[5] छिन छोह[6] छाँड़ियो, कमठ[7]-अंडकी नाईं[8]॥
या जगमें जहँ लगि या तनु की[9], प्रीति प्रतीति सगाई[10]।
ते सब तुलसिदास प्रभु ही सों, होहिं सिमिटि इक ठाईं॥

10) राम कबहुँ प्रिय लागिहौ, जैसे नीर मीनको?
सुख जीवन ज्यों जीवको, मनि ज्यों फनिको[11] हित,
ज्यौं धन लोभ-लीनको॥
ज्यों सुभाय प्रिय लगति, नागरी[12] नागर नवीनको[13]।
त्यों मेरे मन लालसा करिये करुनाकर! पावन प्रेम पीनको[14]॥
मनसाको[15] दाता कहैं, श्रुति[16] प्रभु प्रबीनको।
तुलसिदासको भावतो[17], बलि जाउँ दयानिधि! दीजै दान दीनको॥

बानी संत दादू दयाल जी

1) अजहुँ न निकसै प्राण कठोर॥ टेक॥
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर॥
चारि पहर चारौं जुग बीते, रैन गँवाई भोर॥
अवधि गई अजहूँ नहिं आये, कतहुँ रहे चित चोर॥

1. मूर्खता 2. समृद्धि और सफलता 3. अधिक 4. बलपूर्वक, ज़बरदस्ती
5. मत 6. स्नेह 7. कछुआ 8. समान
9. तनु की=शरीर की 10. संबंध 11. साँप को 12. चतुर युवती
13. नागर नवीनको=बुद्धिमान नवयुवक को 14. मज़बूत 15. मनोरथ
16. वेद 17. अच्छा लगता है

कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे, मारग चितवत तोर॥
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर॥

2) क्यौं बिसरै मेरा पीव पियारा, जीव की जीवन प्राण हमारा॥ टेक॥
क्यौं कर जीवै मीन जल बिछुरें, तुम बिन प्राण सनेही।
च्यंतामणि[1] जब कर[2] थैं छूटै, तब दुख पावै देही॥
माता बालक दूध न देबै, सो कैसैं करि पीवै।
निर्धन का धन अनत भुलाना, सो कैसैं करि जीवै॥
बरखहु राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा।
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा॥

3) दरबार तुम्हारे दरदवंद[3], पिव पीव पुकारै।
दीदार दरूनै[4] दीजिये, सुनि खसम हमारे॥ टेक॥
तनहा[5] केतनि पीर है, सुनि तुँही निवारै।
करम[6] करीमा[7] कीजिये, मिलि पीव पियारे॥
सूल सुलाकौं[8] सौ सहूँ, तेग[9] तन मारै।
मिलि साईं सुख दीजिये, तूँही तुँ सँभारै॥
मैं सुहदा तन सोखता[10], बिरहा दुख जारै।
जिव तरसै दीदार कूँ, दादू न बिसारै॥

4) पार नहिं पाइये रे राम बिना को निरबाहणहार[11]॥ टेक॥
तुम बिन तारण को नहीं, दूभर यहु संसार।
पैरत[12] थाके केसवा, सूझै वार न पार॥
बिषम भयानक भौजला, तुम बिन भारी होइ।

1. चिंतामणिरूपी प्रभु 2. हाथ 3. अंतर में पीड़ा लिए 4. अंतर में
5. अकेला 6. दया 7. दयालु 8. सुराख़, जख़्म
9. तलवार 10. जला हुआ 11. निभानेवाला 12. तैरते हुए

तूँ हरि तारण केसवा, दूजा नाहीं कोइ॥
तुम बिन खेवट को नहीं, अतिर[1] तिरयों नहिं जाइ।
औघट भेरा[2] डूबि है, नाहीं आन उपाइ॥
यहु घट औघट बिषम है, डूबत माहिं सरीर।
दादू काइर राम बिन, मन नहिं बाँधै धीर॥

5) मेरे गृह आवहो गुर मेरा, मैं बालिक सेवग तेरा॥ टेक॥
मात पिता तूं अम्हंचा[3] स्वांमी, देव हमारै अंतरजांमी॥
अम्हां सजण अम्हंचा बंधू, प्रांण हमारै अम्हंचा ज्यंदू[4]॥
अम्हंचा प्रीतम अम्हंचा मेला, अम्हंची जीविन आप अकेला॥
अम्हंचा साथी संग सनेही, राम बिना दुख दादू देही॥

6) राम कृपा करि होहु दयाला। दरसन देहु करो प्रतिपाला॥
बालक दूध न देई माता। तौ वै क्यूँ करि जिवै विधाता॥
गुण औगुण हरि कुछ न बिचारै। अंतरि हेत प्रीति करि पालै॥
अपनौ जानि करै प्रतिपाला। नैन निकटि उर धरै गोपाला॥
दादू कहै नहीं बस मेरा। तूँ माता मैं बालक तेरा॥

7) हमारे तुमहीं हौ रखपाल।
तुम बिन और नहीं कोइ मेरे, भौ दुख मेटणहार॥ टेक॥
बैरी पंच[5] निमख नहिं न्यारै, रोकि रहे जम काल।
हा जगदीस दास दुख पावै, स्वामी करो सँभाल॥
तुम बिन राम दहैं[6] ये दुंदर[7], दसौं दिसा सब साल[8]।
देखत दीन दुखी क्यों कीजे, तुम हौ दीनदयाल॥

1. तरने के योग्य नहीं 2. बेड़ा, नाव 3. हमारा 4. जीवनदाता
5. **बैरी पंच**=भाव पाँच विकार 6. जलाते हैं 7. क्लेश करनेवाले
8. पीड़ा, टीस

निर्भय नाँव हेत हरि दीजे, दरसन परसन लाल।
दादू दीन लीन करि लीजै, मेटहु सबै जँजाल॥

8) **दोहे**
तिल तिल का अपराधी तेरा, रती रती का चोर।
पल पल का मैं गुनही तेरा, बकसौ औगुण मोर॥

गुनहगार अपराधी तेरा, भाजि कहाँ हम जाहिं।
दादू देख्या सोधि[1] सब, तुम बिन कहिं न समाहिं॥

आदि अंत लौं आइ करि, सुकिरत कछू न कीन्ह।
माया मोह मद मंछरा[2], स्वाद सबै चित दीन्ह॥

दादू बन्दीवान[3] है, तू बन्दीछोड़ दिवान।
अब जिनि[4] राखौ बन्दि में, मीराँ[5] मेहरबान॥

राखणहारा राख तूँ, यहु मन मेरा राखि।
तुम बिन दूजा को नहीं, साधू बोलैं साखि[6]॥

माया बिषय बिकार थैं, मेरा मन भागै।
सोई कीजै साइयाँ, तूँ मीठा लागै॥

ज्यौं आपै देखै आप कौं, सो नैना दे मुझ।
मीराँ मेरा मेहर करि, दादू देखै तुझ॥

(दादू कहै) दिन दिन नौतम[7] भगति दे, दिन दिन नौतम नाँव।
दिन दिन नौतम नेह दे, मैं बलिहारी जाँव॥

1. खोजकर 2. अहंकार 3. क़ैदी 4. मत 5. मालिक
6. आँखों देखी 7. नवीन

साईं सत संतोष दे, भाव भगति बेसास[1]।
सिदक सबूरी[2] साच दे, माँगै दादूदास॥

(दादू) पलक माहिं प्रगटै सही, जे जन करै पुकार।
दीन दुखी तब देखि करि, अति आतुर तिहिं बार॥

आगै पीछै सँगि रहै, आप उठाये भार।
साध दुखी तब हरि दुखी, ऐसा सिरजनहार॥

समरथ सिरजनहार है, जे कुछ करै सो होइ।
दादू सेवग राखि ले, काल न लागै कोइ॥

साईं साचा नाँव दे, काल झाल[3] मिटि जाइ।
दादू निरभै ह्वै रहै, कबहूँ काल न खाइ॥

जिन की रख्या तूँ करै, ते उबरे करतार।
जे तैं छाडे हाथ थैं, ते डूबे संसार॥

राखणहारा एक तूँ, मारणहार अनेक।
दादू के दूजा नहीं, तूँ आपै ही देख॥

जहँ तहँ बिषै बिकार थैं, तुम ही राखणहार।
तन मन तुम कौं सौंपिया, साचा सिरजनहार॥

अंतरजामी एक तूँ, आतम के आधार।
जे तुम छाडहु हाथ थैं, तौ कौण सँबाहणहार॥

तुम्ह हौ तैसी कीजिये, तौ छूटैंगे जीव।
हम हैं ऐसी जिनि करौ, मैं सदिकै जाऊँ पीव॥

1. विश्वास 2. धैर्य 3. आग

अनाथौं का आसिरा, निरधाराँ आधार।
निर्धन का धन राम है, दादू सिरजनहार॥

साहिब दर दादू खड़ा, निसि दिन करै पुकार।
मीराँ मेरा मिहर करि, साहिब दे दीदार॥

तुम हीं थैं तुम्ह कूँ मिलै, एक पलक में आइ।
हम थैं कबहुँ न होइगा, कोटि कलप जे जाहिं॥

साहिब सूँ मिलि खेलते, होता प्रेम सनेह।
दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली[1] देह॥

साहिब सूँ मिलि खेलते, होता प्रेम सनेह।
परगट दरसन देखते, दादू सुखिया देह॥

तुम कूँ भावै और कुछ, हम कुछ कीया और।
मिहर करो तौ छूटिये, नहीं त नाहीं ठौर॥

मुझ भावै सो मैं किया, तुझ भावै सो नाहिं।
दादू गुनहगार है, मैं देख्या मन माहिं॥

खुसी तुम्हारी त्यूँ करौ, हम तौ मानी हारि।
भावै बंदा बकसिये, भावै गहि करि मारि॥

बानी संत जगजीवन साहिब जी

1) अब तुम होहु दयाल तुम्हारी पैयाँ परौं॥टेक॥
सूझत नहिं मैं भ्रमत फिरत हौं, पर्‌यों मोह के जाल॥
नाम तुम्हार सुमिरि नहिं आवै, जग संगति जंजाल॥

1. दुःखी

आवत जब सुधि वहै समय की, ब्याकुल होहुँ बेहाल॥
हाथ पाँव मेरे बल नाहीं है, तुमहिं करहु प्रतिपाल॥
जगजीवन काँ दरसन दीजै, अब मोहिं करहु निहाल॥

2) आरति अरज लेहु सुनि मोरी। चरनन लागि रहै दृढ़ डोरी॥
कबहुँ निकट तें टारहु नाहीं। राखहु मोहिं चरन की छाहीं॥
दीजै केतिक[1] बास यहँ कीजै। अघ[2] कर्म मेटि सरन करि लीजै॥
दासन दास ह्वै कहौं पुकारी। गुन मोहिं नहिं तुम लेहु सँवारी॥
जगजीवन काँ आस तुम्हारी। तुम्हरी छबि मूरति[3] पर वारी॥

3) केतिक बूझ का आरति करऊँ। जैसे रखिहहिं तैसे रहऊँ॥
नाहीं कछु बसि आहै मोरी। हाथ तुम्हारे आहै[4] डोरी॥
जस चाहौ तस नाच नचावहु। ज्ञान बास करि ध्यान लगावहु॥
तुमहिं जपत तुमहीं बिसरावत। तुमहिं चेताइ सरन लै आवत॥
दूसर कवन एक हौ सोई। जेहिं काँ चाहौ भक्त सो होई॥
जगजीवन करि बिनय सुनावै। साहेब समरथ नहिं बिसरावै॥

4) तुम सों यह मन लागा मोरा।
करौं अरदास इतनी सुनि लीजै, तको तनक मोहिं कोरा[5]॥
कहँ लगि औगुन कहौं आपना, कामी कुटिल औ लोभी चोरा।
तब के अब के बहु गुनाह भे, नाहिं अंत कछु छोरा॥
साँईं अब गुनाह सब मेटहु, चितै आपनी ओरा।
जगजीवन कै इतनी बिनती, टूटै प्रीति न डोरा॥

1. किसी भी प्रकार 2. पाप 3. छबि मूरति=सुंदर स्वरूप 4. है
5. आँख का कोर (किनारा)

5) तेरा नाम सुमिरि ना जाय।
नहीं बस कछु मोर आहै, करहुँ कौन उपाय॥
जबहिं चाहत हितू[1] करि कै, लेत चरनन लाय।
बिसरि जब मन जात आहै, देत सब बिसराय॥
अजब ख्याल अपार लीला, अंत काहु न पाय।
जीव जंत पतंग जग महँ, काहु ना बिलगाय[2]॥
करौं बिनती जोरि दुउ कर, कहत अहौं सुनाय।
जगजीवन गुरु चरन सरन, ह्वै तुम्हार कहाय॥

6) प्रभु जी तुम जानत गति मेरी।
तुम ते छिपा नहीं आहै कछु, कहा कहौं मैं टेरी[3]॥
जहँ जहँ गाढ़[4] पर्‌यो भक्तन कां, तहँ तहँ कीन्ह्यो फेरी।
गाढ़ मिटाय तुरन्तहि डार्‌यो, दीन्ह्यो सुक्ख घनेरी॥
जुग जुग होत ऐसै चलि आवा, सो अब साँझ सबेरी।
दियो जनाय सोई तस जानै, बास मनहिं तेहि केरी॥
कर औ सीस दियो चरनन महँ, नहिं अब पाछे हेरी।
जगजीवन के सतगुरु साहब, आदि अंत तेहि केरी॥

7) प्रभु जी बक्सहु चूकि हमारी।
जो पुरबुज[5] अपने कर्मन ते, डार्‌यो सर्ब मिटा री॥
राखहु पास सदा चरनन के, निकट ते नाहीं टारी।
जानत रहहु सदां हित आपन, कबहूँ नाहिं बिसारी॥
पाँच पचीस बड़े परपंची[6], यइ डारत संसारी।
येई पल छिन छिनहिं भ्रमावत, नाहीं लागु हमारी॥
अब मन लागि पागि[7] रह तुम ते, सूरति रहै न न्यारी।
जगजीवन को भक्ति बर दीजै, जुग जुग आस तुम्हारी॥

1. भलाई 2. अलग 3. पुकारकर 4. मुसीबत
5. पुराने, पिछले जन्मों के 6. धोखेबाज़ 7. मग्न

8) प्रभु तुम सों मन लागा मोरा।
नेग[1] जन्म के कर्म काटो, माँगौं दरसन तोरा॥
मोहिं ते तौ कछु कहि नहिं आवै, मैं पापी हौं चोरा।
निसु दिन तुम कहँ सुमिरत राहौं, इतना मानु निहोरा[2]॥
यह अरदास मानि ले साईं तनिक देखिये कोरा।
जगजीवन काँ जानु आपना, तोरु प्रीत नहिं डोरा॥

9) बालक बुद्धि हीन मति मोरी। भरमत फिरौं नाहिं दृढ़ डोरी॥
सूरति राखौ चरनन मोरी। लागि रहै कबहूँ नहिं तोरी॥
निरखत रहौं जाउँ बलिहारी। दास जानि कै नाहिं बिसारी॥
तुमहिं सिखाय पढ़ायो ज्ञाना। तब मैं धर्‌यौं चरन का ध्याना॥
साईं समरथ तुम हौ मोरे। बिनती करौं ठाढ़ कर जोरे॥
अब दयाल ह्वै दाया कीजै। अपने जन कहँ दरसन दीजै॥
नाम तुम्हार मोहिं है प्यारा। सोइ भजे घट भा उजियारा॥
जगजीवन चरनन दियो माथ। साहब समरथ करहु सनाथ॥

10) मेरी बिनय सुनिये राम।
भरमत हौं दिन रात छिन छिन, कैसे सुमिरौं नाम॥
महा अहै अपार माया, मोह सुख परि काम।
छूटि गे सत टूटि डोरी, लागि हित धन धाम॥
मेटु सर्ब गुनाह मेरे, पाप कर्म हराम।
जगजीवन काँ जानु आपन, चरन केर गुलाम॥

11) मेरी हाथ तुम्हारे डोरी॥ टेक॥
है केतनि मति बुद्धि हीन है। नहिं कछु अहै बूझ मति मोरी॥
मन कठोर आभाव भाव नहिं। करौं कपट भ्रमि भटकौं चोरी॥
निसु बासर छिन छिन बिसरत है। नहिं निरखि जात छबि तोरी॥

1. अनेक 2. प्रार्थना

राखहु पास बिस्वास देहु बर, बिनय कहौं कर जोरी।
जगजीवन चित चरनन दीन्हे, रहै सीस कर जोरी॥

12) मेरे गुनाह माफ करिये अब साईं॥ टेक॥
जैसे मातु सुतहिं पालत छीर दै पियाई।
लिये गोद रहै निसु दिन कबहुँ ना घिनाई॥
रहै सुखित दुक्ख नाहिं कर ते ले उठाई।
कंठ लावै मुक्ख चूमै हुलसि के[1] हँसाई॥
सुतहिं दुक्ख दुखित मातु कछु ना सुहाई।
इहै मोर बिनती जानु राखु ऐसी नाईं[2]॥
पतित अनेक तारि लीन्हे गनत ना सिराई[3]।
मेटि औगुन छिनक माहिं[4] लयो है अपनाई॥
सुने ते बिस्वास आवत बेद सब्द गाई।
सूझि सत मत परा जबहीं दियो तबहिं लखाई॥
बुद्धि केतनि[5] अहै मोहिं माँ करौं का कबिताई[6]।
जगजीवन का करहु आपन चरनन में लिपटाई॥

13) साँईं मैं अजान अज्ञाना।
जानों नहीं बूझि नहिं आवै भरमत फिरौं भुलाना॥
हौ समरत्थ सिद्धि के दाता मोहिं सिखावहु ज्ञाना।
करौं सो जानि जनाय देव जब धरौं चरन कै ध्याना॥
दीन लीन सुभ सुमन सुमारग यह बर दीजै दाना।
आवै दृष्टि दिप्त देखत रहौं परगट करौं बयाना[7]॥
काहूँ[8] रहौं सरन नहिं छूटै तुम तजि भजौं न आना[9]।
जगजीवन कर जोरि कहैं यह निरखत[10] रहौं निरबाना॥

1. हुलसि के=ख़ुश होकर 2. समान 3. ना सिराई=समाप्त नहीं होती
4. छिनक माहिं=क्षण-भर में 5. कितनी 6. कविता करना 7. बखान करना
8. कहीं 9. अन्य को 10. देखना

14) साँईं मोहिं भरोस तुम्हारा।
मोरे बस नहिं अहै[1] एकौ, तुमहिं करो निस्तारा॥
मैं अज्ञान बुद्धि है नाहीं, का करि सकौं बिचारा।
जब तुम लेत पढ़ाय सिखावत, तब मैं प्रगट पुकारा॥
बहुतक[2] भवसागर महँ बूड़त, तेहि उबारि कै तारा।
बहुतन का जब कष्ट भयो है, तिन कै कष्ट निवारा॥
अब तौ चरन कि सरनहिं आयों, गह्यों मैं पच्छ[3] तुम्हारा।
जगजीवन के साँईं समरथ, मोहिं बल अहै तुम्हारा॥

15) हम तें चूक परत बहुतेरी।
मैं तौ दास अहौं चरनन का, हम हूँ तन हरि हेरी॥
बाल-ज्ञान प्रभु अहै हमारा, झूठ साँच बहुतेरी।
सो औगुन गुन का कहौं तुम तें, भौसागर तें निबेरी[4]॥
भव तें भागि आयौं तुव सरनै, कहत अहौं अस टेरी।
जगजीवन की बिनती सुनिये, राखौ पत जन केरी॥

बानी संत पलटू साहिब जी

1) आरति राम गरीब-निवाजा, तीनि लोक सब के सिरताजा॥ टेक॥
तुम्हरो पतित-पावनो बाना[5], मैं तो पतित आपु सो जाना॥
नाम तुम्हारो अधम-उधारा, सब अधमन को मैं सिरदारा॥
नाम तुम्हारो दीन दयाला, इहै जानि मैं लीन्हा माला॥
सुनेउ अनाथन के तुम नाथा, यह सुनि आइ पसारेउ हाथा॥
नाँव[6] तुम्हारो अंतरजामी, पलटुदास क्या कहै अपानी[7]॥

1. है 2. बहुतेरे 3. पक्ष, साथ 4. छुटकारा 5. रीति, स्वभाव
6. नाम 7. अपनी

2) तुम तजि दीना-नाथ जी, करै कौन की आस।
पलटू जो दूसर करै, तो होइ दास की हाँस॥
ना मैं किया न करि सकौं, साहिब करता मोर।
करत करावत आपु है, पलटू पलटू सोर॥
पलटू तेरी साहिबी, जीव न पावै दुक्ख।
अदल[1] होय बैकुंठ में, सब कोइ पावै सुक्ख॥

3) पतितपावन बाना धर्‌यो तुमहिं परी है लाज॥
तुमहिं परी है लाज बात यह हम ने बूझी।
जब तुम बाना धर्‌यो नाहिं तब तुम कहँ सूझी॥
अब तो तारे बनै नहीं तो बाना उतारौ।
फिर काहे को बड़ा बाच[2] जो कहिकै हारौ॥
आगहिं तुम गये चूक दोष नहिं दीजै मेरो।
तुम यह जानत नाहिं पतित होइहैं बहुतेरो॥
पलटू मैं तो पतित हौं किये असुभ सब काज।
पतितपावन बाना धर्‌यो तुमहिं परी है लाज॥

4) साहिब मेरा सब कुछ तेरा, अब नाहीं कुछ मेरा है॥
यहि हमता[3] ममता के कारन, चौरासी किहा फेरा है॥
मृग-जल निरखि के तृषा बुझै नहिं, सूखे अटका बेरा है॥
यह संसार रैन का सुपना, रूपा[4] भ्रम सीपी केरा[5] है॥
पलटुदास सब अरपन कीन्हा, तन मन धन औ देरा[6] है॥

1. इंसाफ़, न्याय 2. वचन, प्रतिज्ञा 3. अहंकार 4. चाँदी 5. का
6. डेरा, निवास

बानी संत दरिया जी (बिहारवाले)

1) तुम मेरो साईं मैं तेरो दास, चरन कँवल चित मेरो बास॥
पल पल सुमिरौं नाम सुबास[1], जीवन जग में देखो दास॥
जल में कुमुदिनि चन्द अकास, छाइ रहा छबि पुहुप[2] बिलास॥
उनमुनि[3] गगन भया परगास, कह दरिया मेटा जम त्रास॥

2) साहब मैं गुलाम हौं तेरा।
लिखि लीजे एह कागज कोरे जनम जनम का चेरा॥
जैसे पूत कपूत जो होवै पिता करै प्रतिपाला।
बहुत प्रेम मोद[4] मन भरि के नजरन्हि कीन्ह निहाला[5]॥...
जीव के गुन ऐगुन[6] जनि[7] खोजियै ऐसी रहनि न आई।
ऊठत बैठत नाम तुम्हारा सरन सरन गोहराई[8]॥
एही अरज सुनो सरवन[9] में हंस बिगोइ[10] न जाई।
कहें दरिया ले नाम तुम्हारा मुक्ति सदा फल पाई॥

बानी संत चरनदास जी

1) अँखियाँ गुरु दरसन की प्यासी।
इक टक लागी पंथ निहारूँ तन सूँ भई उदासी॥
रैन दिना मोहिं चैन नहीं है चिन्ता अधिक सतावै।
तलफत[11] रहूँ कल्पना भारी निस्चल बुधि नहिं आवै॥
तन गयो सूख हूक[12] अति लागी हिरदै पावक[13] बाढ़ी।
खिन में लेटी खिन में बैठी घर अंगना खिन ठाढ़ी[14]॥

1. भाव आनंद-दायक 2. पुष्प 3. अंतर में ध्यान मग्न होना 4. ख़ुशी
5. आनंद-विभोर 6. दोष 7. मत 8. पुकारना
9. कान 10. ख़ाली हाथ भाव मुक्ति के बिना 11. तड़पना
12. कसक पीड़ा 13. आग 14. खड़ी

भीतर बाहर संग सहेली बातन ही समझावैं।
चरनदास सुकदेव पियारे नैनन ना दरसावैं॥

2) अब जग फंद छुटावो जी हौं तो चरण कमल को चेरो।
परो रहूँ दरबार तिहारे संतन माहिं बसेरो॥
बिना कामना करूँ चाकरी[1] आठों पहरे नेरो[2]।
मनसब-भक्ति[3] कृपा करि दीजै मोहि यही बहुतेरो॥
खानेजाद कदीमी[4] कहियो तुही आसरो मेरो।
झिड़क बिड़ारो[5] तऊ न छाँड़ौं सेवा सुमिरण तेरो॥
काहू और आन देवन सों रह्यो नहीं उरझेरो।
जैसे राखो त्योंहीं रहहूँ कर लीजो सुरझेरो[6]॥
तेरे घर बिन कहूँ न मेरो ठौर ठिकानो डेरो।
मोसे पतित दीन को हरि जी तुमही करो निबेरो॥
गुरु शुकदेव दया करि मोकूँ ओर तिहारी फेरो।
चरणदास को शरणैं राखो यही इनाम घनेरो॥

3) गुरुदेव हमारे आवो जी।
बहुत दिनों से लगो उमाहो[7]। आनंद मंगल लावो जी॥
पलकन पंथ बुहारूँ तेरो। नैन परे पग धारो जी।
बाट तिहारी निस दिन देखूँ। हमरी ओर निहारो जी॥
करूँ उछाह[8] बहुत मन सेती। आँगन चौक पुराऊँ[9] जी।
करूँ आरती तन मन वारूँ। बार बार बलि जाऊँ जी॥
दै पैकरमा[10] सीस नवाऊँ। सुनि सुनि बचन अघाऊँ[11] जी।
गुरु सुकदेव चरन हूँ दासा। दरसन माहिं समाऊँ जी॥

1. सेवा 2. नज़दीक 3. भक्ति का ऊँचा दर्जा 4. खानेजाद कदीमी=परंपरागत सेवक
5. दूर हटाओ 6. सुलह 7. उमंग 8. उत्साह 9. सजाऊँ
10. परिक्रमा 11. तृप्त होना

4) तुम साहब करतार हो हम बंदे तेरे।
रोम रोम गुनेगार हैं बखसो हरि मेरे॥
दसौ दुवारे[1] मैल है सब गंदम गंदा।
उत्तम तेरो नाम है बिसरै सो अंधा॥
गुन तजिकै औगुन कियो तुम सब पहिचानो।
तुम सूँ कहा छिपाइये हरि घट की जानो॥
रहम करो रहमान[2] सूँ यह दास तिहारो।
भक्ति पदारथ दीजिये आवा गवन निवारो॥
गुरु सुकदेव उबारि लो अब मेहर करीजै।
चरनहिं दास गरीब कूँ अपनो करि लीजै॥

5) पतित उधारन बिरद[3] तुम्हारो।
जो यह बात साँच है हरि जू, तौ तुम हम कूँ पार उतारो॥
बालपने औ तरुन अवस्था, और बुढ़ापे माहीं।
हम से भई सभी तुम जानो, तुम से नेक छिपानी नाहीं॥
अनगिन पाप भये मन माने, नखसिख औगुन धारी।
हिरि फिरि[4] कै तुम सरनै आयौ, अब तुम को है लाज हमारी॥
सुभ करमन को मारग छूटो, आलस निद्रा घेरो।
एकहिं बात भली बन आई, जग में कहायो तेरो चेरो॥
दीनदयाल कृपाल बिसंभर[5], श्री सुकदेव गोसाईं।
जैसे और पतित घन[6] तारे, चरनदास की गहियो बाँहीं॥

1. दस इंद्रियाँ 2. दयालु 3. यश, मर्यादा 4. हिरि फिरि=घूम-फिरकर
5. संसार का पालन करनेवाले 6. घने, अनेक

6) प्रभु जू सरन तिहारी आयो।
जो कोइ सरन तिहारी नाहीं भरम भरम दुख पायो॥
औरन के मन देवी देवा मेरे मन तुहि भायो।
जब सों सुरति सम्हारी जग में और न सीस नवायो॥
नरपति सुरपति आस तुम्हारी यह सुनि कै मैं धायो[1]।
तीरथ बरत सकल फल त्याग्यो चरन कमल चित लायो॥
नारद मुनि अरु सिव ब्रह्मादिक तेरो ध्यान लगायो।
आदि अनादि जुगादि तेरो जस बेद पुरानन गायो॥
अब क्यों न बाँह गहो हरि मेरी तुम काहे बिसरायो।
चरनदास कहैं करता तूही गुरु सुकदेव बतायो॥

7) मो कूँ कछु न चहिये राम।
तुम बिन सबहीं फीके लागैं, नाना सुख धन धाम॥
आठ सिद्धि नौ निद्धि आपनी, और जनन को दीजै।
मैं तौ चेरो जन्म जन्म को, निज करि अपनो कीजै॥
स्वर्ग फलन की मोहिं न आसा, ना बैकुंठ न मोच्छहिं[2] चाहूँ।
चरन कमल के राखौ पासा, यहि उर माहिं उमाहूँ[3]॥
भक्ति न छोड़ू मुक्ति न माँगूँ, सुन सुकदेव मुरारी।
चरनदास की यही टेक है, तजूँ न गैल[4] तुम्हारी॥

8) राखो जी लाज गरीब निवाज।
तुम बिन हमरे कौन सँवारै सबहीं बिगरैं काज॥
भक्तबछल[5] हरि नाम कहावो पतित उधारनहार।
करो मनोरथ पूरन जन को सीतल दृष्टि निहार॥

1. दौड़कर आया हूँ 2. मोक्ष 3. उमंग, इच्छा 4. गली, राह
5. भक्तों से स्नेह करनेवाला

तुम जहाज मैं काग तिहारो तुम तजि अनत[1] न जाऊँ।
जो तुम हरि जू मारि निकासो और ठौर नहिं पाऊँ॥
चरनदास प्रभु सरन तिहारी जानत सब संसार।
मेरी हँसी सो हँसी तुम्हारी तुम हूँ देखु बिचार॥

9) हमारो नैना दरस पियासा हो।
तन गयो सूखि हाय हिये बाढ़ी, जीवत हूँ वोहि आसा हो॥
बिछुरन थारो मरन हमारो, मुख में चलै न ग्रासा हो।
नींद न आवै रैनि बिहावै[2], तारे गिनत अकासा हो॥
भये कठोर दरद नहिं जाने, तुम कूँ नेक न साँसा हो।
हमरी गति दिन दिन औरे ही, बिरह बियोग उदासा हो॥
सुकदेव प्यारे मत रहु न्यारे, आनि करो उर[3] बासा हो।
रनजीता अपनो करि जानी, निज करि चरनन दासा हो॥

बानी सहजोबाई जी

1) अब तुम अपनी ओर निहारो।
हमरे औगुन पै नहिं जाओ, तुमहीं अपना बिरद सम्हारो॥
जुग जुग साख[4] तुम्हारी ऐसी, वेद पुरानन गाई।
पतित-उधारन नाम तुम्हारो, यह सुनके मन दृढ़ता आई॥
मैं अजान तुम सब कछु जानो, घट घट अंतरजामी।
मैं तो चरन तुम्हारे लागी, हो किरपाल दयालहि स्वामी॥
हाथ जोरि के अरज करत हौं, अपनाओ गहि बाहीं।
द्वार तिहारे आय परी हौं, पौरुष[5] गुन मो में कछु नाहीं॥
चरनदास सहजिया तेरी, दरसन की निधि पाऊँ।
लगन लगी अरु प्रान अड़े हैं, तुमको छोड़ कहौ कित जाऊँ॥

1. दूसरी जगह 2. बीत जाती है 3. हृदय 4. प्रतिष्ठा 5. हिम्मत

2) तुम गुनवंत मैं औगुन भारी।
तुम्हरी ओट खोट बहु कीन्हे, पतित उधारन लाल बिहारी[1]॥
खान पान बोलत अरु डोलत, पाप करत है देह हमारी।
कर्म बिचारौ तौ नहिं छूटौं, जो छूटौं तौ दया तुम्हारी॥
मैं अधीन माया बस हो करि, तुम सुधीन[2] माया सूँ न्यारे।
मैं अनाथ तुम नाथ गुसाईं सब जीवन के प्रान पियारे॥
भौसागर में डर लागत मोहिं, तारौ बेगहि पार उतारी।
चरनदास गुर किरपा सेती, सहजो पाई सरन तिहारी॥

3) नमो नमो[3] गुरु तुम सरना।
तुम्हरे ध्यान भरम भय भागैं, जीते पाँचौ मरना॥
दुख दारिद्र मिटैं तुम नाऊँ, कर्म कटैं जो होहिं घना।
लोक परलोक सकल बिधि[4] सुधरैं, पग लागैं[5] आय ज्ञान गुना॥
चरन[6] छुए सब गति मति पलटैं, पारस जैसे लोह सुना[7]।
सीप परसि स्वाँती भयो मोती, सोहत है सिर राज रना[8]॥
ब्रह्म होय जीव बुधि नासै, जब कैसो होना मरना।
अमर होय अमरापद पावै, यह गुर कहियै गुरु बचना॥
चरनदास गुरु पूरे पाये, जग का दुख सुख क्यों सहना।
सहजो बाई ब्याध छुटा कर, आनँद मंगल में रहना॥

बानी संत मलूकदास जी

1) दीन-बंधु दीना-नाथ मेरी तन हेरिये[9]॥ टेक॥
भाई नाहिं बन्धु नाहिं कुटुम परिवार नाहिं,
ऐसा कोई मित्र नाहिं जाके ढिग[10] जाइये॥

1. लाल बिहारी=परमात्मा 2. स्वाधीन, स्वतंत्र 3. नमो नमो=बार-बार प्रणाम
4. सकल बिधि=सब प्रकार से 5. पग लागैं=शरण में आने से
6. भाव आंतरिक चरण 7. सोना 8. राज रना=राजा-राणा 9. देखिए 10. निकट

सोने की सलैया[1] नाहिं रूपे[2] का रुपैया नाहिं,
कौड़ी पैसा गाँठ नहीं जासे कछु लीजिये॥
खेती नाहिं बारी नाहिं बनिज ब्यौपार नाहिं,
ऐसा कोई साहु नाहिं जासों कछु माँगिये॥
कहत मलूकदास छोड़दे पराई आस,
राम धनी पाय के अब का की सरन जाइये॥

2) नाम तुम्हारा निरमला, निरमोलक हीरा।
तू साहेब समरत्थ, हम मल मुत्र कै कीरा॥
पाप न राखै देंह में, जब सुमिरन करिये।
एक अच्छर के कहत ही, भौसागर तरिये॥
अधम-उधारन[3] सब कहैं, प्रभु बिरद तुम्हारा।
सुनि सरनागत आइया, तब पार उतारा॥
तुझ सा गरुवा औ धनी, जा में बड़ई समाई।
जरत उबारे पांडवा, ताती बाव[4] न लाई॥
कोटिक औगुन जन करै, प्रभु मनहि न आनै।
कहत मलूकादास को, अपना करि जानै॥

बानी बाबा धरनीदास जी

1) अजहूँ मिलो मेरे प्रान-पियारे।
दीनदयाल कृपाल कृपानिधि, करहु छिमा अपराध हमारे॥
कल न परत अति बिकल सकल तन, नैन सकल जनु बहत पनारे।
माँस पचो अरु रक्त रहित भे, हाड़ दिनहुँ दिन होत उघारे॥
नासा नैन स्रवन रसना रस, इंद्री स्वाद जुआ जनु हारे।
दिवस दसो दिसि पंथ निहारति, राति बिहात गनत जस तारे॥

1. छड़ 2. चाँदी 3. पतितों का उद्धार करनेवाले 4. **ताती बाव**=गरम हवा भाव दुःख

जो दुख सहत कहत न बनत मुख, अंतरगत के हौ जाननहारे।
धरनी जिव झलमलित दीप ज्यों, होत अंधार करो उँजियारे॥

2) तुहि अवलंब हमारे हो।
भावै पगु नाँगे करो, भावै तुरय सवारे[1] हो॥
जनम अनेकन बादि[2] गौ, निजु नाम बिसारे हो।
अब सरनागत रावरी[3], जन करत पुकारे हो॥
भवसागर बेरा परो, जल माँझ मँझारे[4] हो।
संतत दीनदयाल हो, कर पार निकारे हो॥
धरनी मन बच कर्मना, तन मन धन वारे हो।
अपनो बिरद निबाहिये, नहिं बनत बिचारे हो॥

3) मेरे प्रभु तुमहिं अवर नहिं कोइ। बहु बिधि कहत सुनत नर लोइ[5]॥
तुव बिस्वास दास मन मान। जुग जुग भगत-बछल जा की बान॥
अवरन्ह तें[6] मेरो होत अकाज। छोड़ि कुल कानि[7] बिसरि जग लाज॥
धरनी जनम हारि भावे जीति। अब मन बच क्रम हृदै प्रतीति॥

4) मैं निरगुनियाँ गुन नहिं जाना। एक धनी के हाथ बिकाना॥
सोइ प्रभु पक्का मैं अति कच्चा। मैं झूँठा मेरा साहब सच्चा॥
मैं ओछा मेरा साहब पूरा। मैं कायर मेरा साहब सूरा॥
मैं मूरख मेरा प्रभु ज्ञाता। मैं किरपिन[8] मेरा साहब दाता॥
धरनी मन मानो इक ठाउँ। सो प्रभु जीवो मैं मरि जाउँ॥

1. **तुरय सवारे**=घुड़सवारी करवाओ 2. व्यर्थ 3. आपकी भाव प्रभु की
4. **माँझ मँझारे**=बीचों-बीच 5. लोग 6. **अवरन्ह तें**=दूसरों से
7. मर्यादा, लाज 8. कंजूस

5) मो सों प्रभु नाहिं दुखित, तुम सों सुखदाई॥ टेक॥
दीनबन्धु बान तेरो, आइ करु सहाई।
मो सों नहिं दीन और, निरखो नर लोई॥
पतित-पावन निगम कहत, रहत हौ कित गोई[1]।
मो सों नहिं पतित और, देखो जग टोई[2]॥
अधम को उधारन तुम, चारो जुग ओई[3]।
मो तें अब अधम आहि, कवन धौं बड़ोई[4]॥
धरनी मन मनिया, एक ताग में परोई।
आपन करि जानि लेहु, कर्म फंद छोई॥

6) **दोहे**

धरनी जन की बीनती, करु करुनामय कान।
दीजै दरसन आपनो, माँगों कछु नहिं आन॥

धरनी बिलखि बिनती करै, सुनिये प्रभू हमार।
सब अपराध छिमा करो, मैं हौं सरन तिहार॥

काहू के बहु बिभव[5] भइ, काहू बहु परिवार।
धरनी कहत हमहिं बल, ए हो राम तुम्हार॥

धरनी नहिं बैराग बल, नाहिं जोग सन्यास।
मनसा बाचा कर्मना, बिस्वंभर बिस्वास॥

बिनती लीजे मानि करि, जानि दास को दास।
धरनी सरनी राखिये, अवर न दूसर आस॥

1. गुप्त 2. ढूँढ़कर 3. वही हो 4. बड़ा 5. शानो-शौक़त

बानी महात्मा गरीबदास जी

1) दीन के दयाल, भक्ति बिर्द दीजिये।
खानाजाद गुलाम[1], अपन कर लीजिये॥
खानाजाद गुलाम, तुम्हारा है सही।
मिहरबान महबूब, जुगन जुग पत रही॥
बाँदी-जाद गुलाम, गुलाम गुलाम है।
खड़ा रहै दरबार, सु आठो जाम[2] है॥
सेवक तलबदार[3], तुम्हरे दर कूकहीं[4]।
औगुन अनंत अपार, परा मोहिं चूक हीं॥
मैं घर का बन्दाजादा[5], अरज मेरि मानिये।
कहता दास गरीब, अपन कर जानिये॥

बानी शेख़ फ़रीद जी

1) (सलोक सेख फरीद के)
देख फरीदा जे थीआ[6] सकर होई विस[7]॥
सांई बाझहो[8] आपणे वेदण[9] कहीऐ किस॥ ९०॥

जोबन जांदे ना डरां जे सह[10] प्रीत न जाए॥
फरीदा कितीं[11] जोबन प्रीत बिन सुक गए कुमलाए॥ ३४॥

फरीदा चिंत खटोला वाण दुख बिरह विछावण लेफ[12]॥
एह हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेख॥ ३५॥

1. खानाजाद गुलाम=परंपरागत सेवक 2. पहर 3. बुलाने पर पेश होने वाला
4. पुकारता है 5. दास का वंशज 6. हुआ 7. ज़हर 8. सिवाय
9. पीड़ा 10. प्रियतम, प्रभु 11. कितने भाव बहुत-से 12. रज़ाई

फरीदा बार[1] पराइऐ बैसणा[2] सांई मुझै न देह॥
जे तू एवैं[3] रखसी जीउ[4] सरीरहो लेह॥४२॥

फरीदा जे दिह[5] नाला[6] कपिआ जे गल कपह[7] चुख[8]॥
पवन न इती मामले[9] सहां न इती[10] दुख॥७६॥

फरीदा तन सुका पिंजर[11] थीआ तलीआं खूंडह[12] काग॥
अजै सो[13] रब न बाहुड़िओ[14] देख बंदे के भाग॥९०॥

कागा करंग[15] ढंढोलिआ[16] सगला खाइआ मास॥
ए दुए नैना मत छुहउ पिर[17] देखन की आस॥९१॥

कागा चूंड[18] न पिंजरा बसै[19] त उडर[20] जाहे॥
जित पिंजरै मेरा सहु वसै मास न तिदू[21] खाहे॥९२॥

तन तपै तनूर[22] जिउ बालण[23] हड बलंन्ह[24]॥
पैरी थकां सिर जुलां[25] जे मूं[26] पिरी[27] मिलंन्ह॥११९॥

सरवर[28] पंखी[29] हेकड़ो[30] फाहीवाल[31] पचास॥
इह तन लहरी गड[32] थिआ सचे तेरी आस॥१२५॥

---

1. दरवाज़े पर 2. बैठना 3. ऐसे 4. प्राण 5. दिन
6. गर्भनाल 7. काट देता 8. तनिक, थोड़ा 9. झंझट, उलझनें
10. इतने 11. हड्डियों का ढाँचा 12. नोच रहे हैं 13. **अजै सो**=अभी तक
14. **न बाहुड़िओ**=ख़बर नहीं ली 15. पिंजर (हड्डियों का ढाँचा।)
16. ढूँढ़ा 17. प्रीतम 18. चोंच मारना 19. वश में
20. उड़ 21. उसका 22. तंदूर 23. ईंधन
24. जल रही हैं 25. चलना 26. मुझे 27. प्यारा
28. सरोवर 29. पक्षी 30. अकेला 31. फँसानेवाले
32. गड़ना, फँसना

कलाम साईं बुल्लेशाह जी

1) अब क्यों साजन चिर लायो रे।
ऐसी मन में आई का[1], दुख सुख सभ वंजायो[2] रे।
हार शिंगार को आग लगाऊँ, घट पर ढाँड[3] मचायो रे।
सुण के ज्ञान की ऐसी बाताँ, नाम निशान सभी अणघाताँ[4]।
कोयल वाँगूँ[5] कूकाँ आताँ, तैं अजे तरस ना आयो रे।
मुल्लाँ इश्क़ ने बाँग[6] दिवाई, उठ दौड़न गल्ल वाजब आई।
कर कर सजदे घर वल धाई, मत्थे मेहराब टिकायो रे।
प्रेम नगर दे उलटे चाले[7], ख़ूनी नैण होए खुशहाले।
आपे आप फसे विच जाले, फस फस आप कुहायो[8] रे।
बुल्ला शौह संग प्रीत लगाई, सोहणी बण तण सभ कोई आई।
वेख के शाह इनाइत साईं, जीअ मेरा भरमाइयो रे।

2) अब लगन लग्गी कीह् करीए? न जी सकीए ते न मरीए।
तुम सुनो हमारे बैना, मोहे रात दिने नहीं चैना।
हुण पी बिन पलक न सरीए। अब लगन...।
एह अगन बिरहों दी जारी, कोई हमरी प्रीत निवारी।
बिन दर्शन कैसे तरीए। अब लगन...।
बुल्ले पई मुसीबत भारी, कोई करो हमारी कारी[9]।
एह अजेहे[10] दुख कैसे जरीए[11]। अब लगन...।

3) आ मिल यार सार[12] लै मेरी, जान दुक्खाँ ने घेरी।
अंदर ख़वाब विछोड़ा होया, ख़बर न पैंदी तेरी।

---

1. क्या 2. भूल गई 3. आग की लपटें 4. अनहद ध्वनि
5. भाँति, तरह 6. आवाज़ 7. रीति 8. कटवा लिया
9. इलाज 10. इस तरह के 11. सहन करें 12. ख़बर

सुंञी[1] बन विच लुट्टी साईंआँ, चोर शंग[2] ने घेरी।
मुल्लाँ काज़ी राह बतावण, देण धर्म दे फेरे।
इह ताँ ठग ने जग दे झीवर[3], लावण जाल चुफेरे।
करम शरआ[4] दे धरम बतावण, संगल[5] पावण पैरीं।
ज़ात मज़हब एह इश्क़ न पुछदा, इश्क़ शरआ दा वैरी।
नदियों पार ए मुलक सज्जन दा, लोभ लहर ने घेरी।
सतगुर बेड़ी फड़ी खलोते[6], तैं क्यों लाई ए देरी।
बुल्ला शाह शौह तैनूँ मिलसी, दिल नूँ देह दलेरी।
प्रीतम पास ते टोलना[7] किसनूँ, भुलयों सिखर दुपहरी।
आ मिल यार सार लै मेरी, जान दुक्खाँ ने घेरी।

4) आपणे संग रलाईं[8] प्यारे, आपणे संग रलाईं।
पहले नेहों लगाया सी तैं, आपे चाईं चाईं[9]।
मैं लाया ए कि तुध लाया, आपणी औड़[10] निभाईं।
राह पवां तां धाड़े[11] बेले, जंगल लक्ख बलाईं[12]।
भौंकण चीते ते चितमचित्ते, भौंकण करन अदाईं।
पार तेरे जगातर[13] चढ़या, कंढे[14] लक्ख बलाईं।
हौल दिले दा थर थर कंबदा, बेड़ा पार लंघाईं।
कर लई बंदगी रब्ब सचे दी, पवण कबूल दुआईं।
बुल्ले शाह ते शाहाँ दा मुखड़ा, घुँघट खोल विखाईं।
आपणे संग रलाईं प्यारे, आपणे संग रलाईं।

---

1. अकेली 2. डाकू 3. चिड़ीमार 4. कर्मकांड
5. ज़ंजीरें 6. खड़े हैं 7. खोजना 8. मिला दो
9. **चाईं चाईं**=बड़े चाव से 10. अंत तक 11. डाकू, लुटेरे
12. मुसीबत, विपत्ति 13. धर्मराज 14. किनारे

5) इक राँझा मैंनूँ लोड़ीदा[1]।
कुन फयकूनों अग्गे[2] दीआं लगीआँ[3], नेहों न लगड़ा चोरी दा।
आप छिड़ जाँदा[4] नाल मज्झीं[5] दे, सानूँ क्यों बेलयों[6] मोड़ीदा[7]।
इक राँझा मैंनूँ लोड़ीदा।
राँझे जेहा मैंनूँ होर न कोई, मिनताँ कर कर मोड़ीदा।
माण वालियाँ दे नैण सलोने, सूहा[8] दुपट्टा गोरी दा।
इक राँझा मैंनूँ लोड़ीदा।
अहद[9] अहमद[10] विच फरक न बुल्लया, इक रत्ती भेत[11] मरोड़ी दा[12]।
इक राँझा मैंनूँ लोड़ीदा।

6) ऐब नमाणी दे कज्ज[13] ओ यार।
घुँघट खोल मुख वेख न मेरा, ऐब नमाणी दे कज्ज ओ यार।
मैं अणजाणी तेरा नेहों कीह् जाणा, लावण[14] दा नहीं चज्ज[15] ओ यार।
हाजी लोक मक्के नूँ जाँदे, साडा हैं तूँ हज्ज ओ यार।
डूंघी[16] नदी ते तुलाह[17] पुराणाँ, मिलसाँ केहड़े[18] पज्ज[19] ओ यार।
बुल्ला शौह मैं ज़ाहर डिट्ठा[20], लाह[21] मुँह तों लज्ज ओ यार।

7) केहे लारे देना एं सानूँ, दो घड़ियाँ मिल जाईं।
नेड़े वस्सें[22] थां न दस्सें, ढूँडाँ कित वल[23] जाहीं।
आपे झाती[24] पाई अहमद[25], वेखाँ तां मुड़ नाहीं।
आख गयों[26] मुड़ आयों नाहीं, सीने दे विच भड़कण भाहीं[27]।

---

1. चाहिए 2. **कुन...अग्गे**=सृष्टि के सृजन से भी पहले 3. प्रेम था
4. **छिड़ जाँदा**=चला जाता है 5. **नाल मज्झीं**=भैंसों के साथ 6. जंगल से
7. मना करता है 8. लाल 9. परमात्मा 10. सतगुरु 11. फ़र्क़
12. **मरोड़ी दा**='म' का 13. ढक लो 14. प्रीति लगाना 15. तरीक़ा 16. गहरी
17. बेड़ी जैसा साधन 18. कौन-से 19. बहाना 20. **ज़ाहर डिट्ठा**=सामने देखा
21. उतार 22. **नेड़े वस्सें**=नज़दीक रहता है 23. **कित वल**=किस तरफ़
24. झलक 25. सतगुरु 26. **आख गयों**=कह गया था 27. आग की लपटें

इकसे घर विच वसदयाँ रसदयाँ[1], कित वल कूक सुणाईं।
पाँधी[2] जा मेरा देह सुनेहा, दिल दे ओह्ले लुकदा केहा।
नाम अल्ला दे न हो वैरी, मुख वेखन नूँ न तरसाईं।
बुल्ला शौह की लाया[3] मैनूँ, रात अद्धी है तेरी मैहमा।
औझड़ बेले[4] सभ कोई डरदा, शौह ढूँडाँ मैं चाईं चाईं।
केहे लारे देना एं सानूँ, दो घड़ियाँ मिल जाईं।

8) तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।
तेरे इश्क़ ने डेरा मेरे अंदर कीता।
भर के ज़हर प्याला मैं तां आपे पीता।
झबदे[5] बहुड़ीं वे तबीबा[6] नहीं ते मैं मर गइआँ।
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।
छुप गया वे सूरज बाहर रह गई आ लाली।
वे मैं सदके होवाँ देवें मुड़ जे वखाली[7]।
पीरा मैं भुल गइआँ तेरे नाल न गइआँ।
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।
ऐस इश्क़े दे कोलों मैंनूँ हटक[8] न माए।
लाहू जाँदड़े[9] बेड़े केहड़ा मोड़ लिआवे।
मेरी अकल जो भुल्ली नाल मुहाणयाँ[10] दे गइआँ।
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।
ऐस इश्क़े दी झंगी[11] विच मोर बुलेंदा।
सानूँ किबला[12] ते काअबा[13] सोहणा यार दसेंदा।
सानूँ घायल करके फिर ख़बर न लइआ।
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।

1. **वसदयाँ रसदयाँ**=बसते रहते हुए 2. पथिक 3. लगन लगाई 4. सुनसान जंगल 5. जल्दी 6. वैद्य 7. झलक 8. रोक 9. **लाहू जाँदड़े**=तेज़ बहनेवाले 10. भाव मुर्शिद 11. जंगल 12. मक्का की दिशा जिस ओर मुँह करके इबादत की जाती है 13. वह स्थान जहाँ हज करने जाते हैं

बुल्ला शौह ने आँदा मैंनूँ इनायत दे बूहे।
जिस ने मैंनूँ पवाए चोले सावे[1] ते सूहे[2]।
जां मैं मारी है अड्डी[3] मिल पया है वहीआ।
तेरे इश्क़ नचाइआँ कर थइआ थइआ।

9) दिल लोचे[4] माही यार नूँ।
इक हस हस गल्लाँ करदियाँ, इक रोंदियाँ धोंदियाँ मरदियाँ।
कहो फुल्ली बसंत बहार नूँ, दिल लोचे माही यार नूँ।
मैं न्हाती धोती रह गई, इक गंढ[5] माही दिल बह[6] गई।
भाह[7] लाईए हार शिंगार नूँ, दिल लोचे माही यार नूँ।
मैं कमली कीती दूतियाँ[8], दुख घेर चुफेरों लीतियाँ[9]।
घर आ माही दीदार नूँ, दिल लोचे माही यार नूँ।
बुल्ला शौह मेरे घर आया, मैं घुट[10] राँझण गल लाया।
दुख गए समुंदर पार नूँ, दिल लोचे माही यार नूँ।

10) बस कर जी हुण बस कर जी,
इक बात असाँ नाल[11] हस्स कर जी। टेक।
तुसीं दिल मेरे विच वसदे हो, ऐवें साथों[12] दूर क्यों नसदे हो।
नाले[13] घत्त जादू[14] दिल खसदे हो[15],
हुण कित वल[16] जासो नस्स कर जी।
तुसीं मोयाँ नूँ मार ना मुकदे सी, खिद्दो वाँग[17] खूँडीं[18] नित कुट्टदे सी।
गल्ल करदयाँ दा गल घुट्टदे सी, हुण तीर लगाओ कस्स कर जी।
तुसीं छुपदे हो असाँ पकड़े हो, असाँ नाल ज़ुलफ़ दे जकड़े हो।

1. हरे 2. लाल 3. एड़ी 4. तड़पता है 5. गाँठ 6. बैठ 7. आग 8. बातें बनानेवालों ने 9. लिया है 10. ज़ोर से 11. **असाँ नाल**=मुझसे 12. हमसे 13. साथ ही 14. **घत्त जादू**=जादू करके 15. **दिल...हो**=दिल छीनते हो 16. तरफ़ 17. **खिद्दो वाँग**=गेंद की तरह 18. छड़ी से

तुसीं अजे छुपण नूँ तकड़े हो, हुण जाण न मिलदा नस्स कर जी।
बुल्ला शौह मैं तेरी बरदी[1] हाँ, तेरा मुख वेखण नूँ मरदी हाँ।
नित्त सौ सौ मिंनताँ करदी हाँ, हुण बैठ पिंजर[2] विच धस्स कर जी।

11) भावें जाण न जाण वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
मैं तेरे कुरबान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
तेरे जेहा मैनूँ होर न कोई, ढूँडाँ जंगल बेला[3] रोही।
ढूँडाँ ताँ सारा जहान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
लोकाँ दे भाणे[4] चाक महीं[5] दा, राँझा ताँ लोकाँ विच कहींदा।
साडा ताँ दीन ईमान वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।
मापे छोड़ लग्गी लड़ तेरे[6], शाह इनायत साईं मेरे।
लाइयाँ दी[7] लज्ज पाल वे, वेहड़े आ वड़ मेरे।

12) मेरे माही[8] क्यों चिर लाया ए।
कह बुल्ला हुण प्रेम कहाणी, जिस तन लग्गे सो तन जाणे।
अंदर झिड़काँ बाहर ताहने, नेहों ला एह सुख पाया ए।
नैनाँ कार[9] रोवन दी पकड़ी, इक मरना दो जग दी फकड़ी[10]।
बिरहों जिंद अवल्ली[11] जकड़ी, नी मैं रो रो हाल वंजाया ए[12]।
इश्क मुल्लाँ ने बाँग दिवाई, शौह आवण दी गल्ल सुणाई।
कर नियत सजदे वल्ल आई, नी मैं मुँह मेहराब लगाया ए।
बुल्ला शौह घर लपट लगाई, रसते मूँ सभ बण तण आईं।
मैं वेखाँ आ इनायत साईं जिस मैनूँ शौह[13] मिलाया ए।

1. दासी 2. भाव शरीर 3. सुनसान 4. नज़रों में 5. भैंस
6. **लग्गी...तेरे**=तुझसे प्रेम का रिश्ता किया है 7. **लाइयाँ दी**=प्रेम की
8. प्रियतम, परमात्मा 9. काम 10. जग हँसाई 11. अनोखी
12. **वंजाया ए**=गँवाया है 13. परमात्मा

13) मैं उडीकाँ[1] कर रही, कदी आ कर फेरा।
मैं जो तैनूँ आखया, कोई घल[2] सुनेहड़ा।
चशमां[3] सेज विछाईआँ दिल कीता डेरा।
लटक चलंदा[4] आँवदा शाह इनायत मेरा।
ओह अजेहा कौण है जा आखे[5] जेहड़ा[6]।
मैं विच कीह् तकसीर[7] है मैं बरदा[8] तेरा।
तैं बाझों[9] मेरा कौण है दिल ढाह न मेरा।
ढूँढ शहर सभ भालया[10] कासद[11] घल्लाँ केहड़ा[12]।
चढ़ियाँ डोली प्रेम दी दिल धड़के मेरा।
आ ओ इनायत कादरी जी चाहे मेरा।
पहली पौड़ी प्रेम दी पुलसराते[13] डेरा।
हाजी मक्के हज करन, मैं मुख वेखाँ तेरा।
आ ओ इनायत कादरी हत्थ पकड़ीं मेरा।
जल बल आहीं[14] मारिआँ दिल पत्थर तेरा।
पा के कुंडी प्रेम दी दिल खिचयो मेरा।
मैं विच कोई न आ पीआ विच परदा तेरा।
दसत[15] कंगण बाहीं चूड़ियाँ गल नौरंग चोला।
राँझण मैनूँ कर गया कोई रावल-रौला[16]।
आण नवें दुःख पै गए कोई सूलाँ दा घेरा।
मैं जाता दुख मैनूं आहा दुख पए घर कइयाँ।
सिर सिर भाँबड़[17] भड़क्या सभ तपदिआँ गइयाँ।
हुण आण बणी सिर आपणे सभ चुक गया झेड़ा[18]।

1. प्रतीक्षा 2. भेज 3. आँखों की 4. **लटक चलंदा**=मस्तानी चाल में
5. **जा आखे**=जाकर कह दे 6. जो 7. ग़लती, भूल 8. गुलाम
9. बिना 10. तलाश किया 11. संदेश-वाहक 12. **घल्लाँ केहड़ा**=कौन-सा भेजूँ
13. इस्लामी परंपरा में विश्वास है कि आंतरिक रूहानी मार्ग में एक सूक्ष्म पुल है जिसके नीचे भयानक अग्नि जल रही है 14. आहों ने 15. हाथ 16. भरमाना
17. शोले 18. झगड़ा

जेहड़िआँ साहवरे[1] मंनिआँ[2] सोई पेके होवण।
शौह जिन्हाँ ते मायल[3] ए चढ़ सेजे सोवण।
जिस घर कौंत न बोलया सोई खाली वेहड़ा।
बुल्ला शौह दे वासते दिल भड़कन भाहीं।
औखा पैंडा[4] प्रेम दा सो घटदा नाहीं।
दिल विच धक्के झेड़दे सिर धाईं बेड़ा।
मैं उडीकाँ कर रही कदी आ कर फेरा।

14) मैं क्योंकर जावाँ काअबे नूँ, दिल लोचे तखत हज़ारे[5] नूँ।
लोकी सजदा काअबे नूँ करदे, साडा सजदा यार प्यारे नूँ।
औगण वेख न भुल मीआँ राँझा, याद करीं उस कारे[6] नूँ।
मैं अनतारू तरन न जाणाँ, शरम पई तुध तारे नूँ।
तेरा सानी कोई नहीं मिलया, ढूँढ लिआ जग सारे नूँ।
बुल्ला शौह दी प्रीत अनोखी तारे औगुणहारे नूँ।

15) मैंनूँ छड गए आप लद[7] गए, मैं विच कीह् तकसीर।
रातीं नींद न दिन सुख सुत्ती, अक्खीं पलटया नीर।
छविआँ ते तलवाराँ कोलों, इश्क़ दे तिक्खे तीर।
इश्क़ जेड[8] न ज़ालम कोई, एह ज़हमत[9] बेपीर।
इक पल साइत[10] आराम न आवे, बुरी बिरहों दी पीड़।
बुल्ला शौह जे करे इनायत, दुख होवण तग़ईर[11]।
मैंनूँ छड गए आप लद गए, मैं विच की तकसीर।

---

1. ससुराल 2. परवान 3. दयाल, प्रसन्न 4. **औखा पैंडा**=कठिन रास्ता
5. **तखत हज़ारे**=राँझे का गाँव भाव प्रभु प्रीतम का लोक 6. वायदा
7. **लद गए**=चल दिए 8. जितना 9. मुसीबत, तकलीफ़
10. घड़ी, पल 11. दूर

16) साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
आपे पाईआँ कुंडियाँ तैं, ते आपे खिचदा एँ डोर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
अरश कुरसी[1] ते बाँगाँ मिलियाँ[2], मक्के पै गया शोर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।
बुल्ला शौह असाँ मरना नाहीं, मर जावे कोई होर।
साडे वल्ल मुखड़ा मोड़ वे प्यारया, साडे वल्ल मुखड़ा मोड़।

कलाम हज़रत सुलतान बाहू जी

1) एह तन मेरा चश्मां होवे, मुर्शिद वेख न रज्जां हू।
लूं लूं[3] दे मुढ लक्ख लक्ख चश्मां,
हिक्क खोलां हिक्क कज्जां हू[4]।
इतनयां डिठयां[5] सबर न आवे, होर किते वल भज्जां हू।
मुर्शिद दा दीदार है बाहू, लक्ख करोड़ां हज्जां हू।

2) इश्क़ माही दे लाइयां अग्गीं[6], लग्गी कौण बुझावे हू।
मैं की जाणा ज़ात इश्क़[7], जो दर दर चा झुकावे हू।
न सौवें न सौवण देवे, सुतयां आण जगावे हू।
मैं क़ुरबान हां उसदे जेहड़ा, विछड़े यार मिलावे हू।

3) चढ़ चंना ते कर रुशनाई, ज़िकर करेंदे तारे हू।
गलियां दे विच फिरन निमाणे, लालां दे वणजारे[8] हू।
शाला[9] कोई न थिवे मुसाफ़र, कक्ख[10] जिन्हां तों भारे हू।
ताड़ी मार उडा न सानूं, आपे उड्डणहारे हू।

---

1. **अरश कुरसी**=गगन मंडल 2. **बाँगाँ मिलियाँ**=अनहद शब्द सुना
3. **लूं लूं**=रोम-रोम 4. **कज्जां हू**=झपक लूँ 5. देखकर 6. आग
7. **ज़ात इश्क़**=प्रेम का राज़ 8. **लालां...वणजारे**=रत्नों के सौदागर 9. रब्ब करे
10. तिनका

4) चढ़ चंना ते कर रुशनाई, ज़िकर करेंदे तेरा हू।
तेरे जहे चंन कई सै चढ़दे, सजणां बाझ हनेरा हू।
जित्थे चंन असाडा[1] चढ़दा, क़दर नहीं कुझ तेरा हू।
जिस दे कारन जनम गवाया, यार मिले इक फेरा हू।

5) न मैं सेर न पाअ छटाकी, न पूरी सरसाही[2] हू।
न मैं तोला, न मैं मासा, गल्ल रत्तियां ते आई हू।
रत्ती[3] होवां रत्तियां तुल्लां, ओह वी पूरी नाही हू।
वज़न तोल पूरा तद होसी, जद होसी फ़ज़ल इलाही[4] हू।

6) मैं कोझी[5] मेरा दिलबर सोहणा, क्यों कर उस नूं भावां हू।
विहड़े[6] साडे वड़दा नाहीं, लक्ख वसीले[7] पावां हू।
न सोहणी न दौलत पल्ले, क्यों कर यार मनावां हू।
दुख हमेशा इह रहसी बाहू, रोंदी ही मर जावां हू।

7) सुण फ़रयाद पीरां दिया पीरा, अरज़ सुणी कंन धर के हू।
बेड़ा अड़या विच कपरां[8] दे, जिथ मच्छ न बैहन्दे डर के हू।
शाह जिलानी[9] महबूब सुबहानी, ख़बर लयो झट कर के हू।
पीर जिन्हां दा मीरां[10] बाहू, कद्धी[11] लगदे तर के हू।

8) सुण फ़रयाद पीरां दिया पीरा, आख सुणावां कैनूं हू।
तैं जेहा मैनूं होर न कोई, मैं जेहियां लक्ख तैनूं हू।
फोल न काग़ज़ बदियां[12] वाले, दर तों धक्क न मैनूं हू।
मैं विच ऐड[13] गुनाह न हुंदे, तूं बख़्शेंदों कैनूं हू।

---

1. **चंन असाडा**=हमारा चाँद भाव मुर्शिद का नूरी स्वरूप 2. छटाँक और तोले के बीच का वज़न 3. वज़न में आठ चावल के बराबर
4. **फ़ज़ल इलाही**=परमात्मा की दया 5. भाव पापी 6. (दिल के) आँगन में
7. उपाय 8. समुद्र की ख़तरनाक लहरें 9. **शाह जिलानी**=क़ादिरी परंपरा के संस्थापक
10. श्रेष्ठ, प्रधान 11. किनारा 12. बुराइयाँ 13. इतने

बानी गुरु नानक देव जी

राग सिरीराग महला १ घर ४

1) तू दरीआउ[1] दाना[2] बीना[3] मै मछुली कैसे अंत लहा॥
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी[4] फूट मरा॥१॥
न जाणा मेउ[5] न जाणा जाली॥
जा दुख लागै ता तुझै समाली॥१॥रहाउ॥
तू भरपूर[6] जानिआ मै दूर॥ जो कछु करी सो तेरै हदूर[7]॥
तू देखह हउ मुकर पाउ[8]॥ तेरै कंम न तेरै नाए[9]॥२॥
जेता देह तेता हउ खाउ॥ बिआ[10] दर नाही कै दर[11] जाउ॥
नानक एक कहै अरदास॥ जीउ पिंड[12] सभ तेरै पास॥३॥
आपे नेड़ै दूर आपे ही आपे मंझ मिआनो[13]॥
आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरत[14] करे जहानो[15]॥
जो तिस भावै नानका हुकम सोई परवानो[16]॥४॥

वार सूही की महला ३ सलोक महला १

2) सतगुर भीखिआ देह मै तूं संग्रथ दातार॥
हउमै गरब निवारीऐ काम क्रोध अहंकार॥
लब लोभ परजालीऐ[17] नाम मिलै आधार॥
अहिनिस[18] नवतन निरमला मैला कबहूं न होए॥
नानक इह बिधि छुटीऐ नदर[19] तेरी सुख होए॥१॥

---

1. सागर 2. ज्ञाता 3. दृष्टा 4. बिछुड़ी हुई
5. मछुआरा 6. सर्वव्यापी 7. हाज़िरी में 8. **मुकर पाउ**=इनकार करता हूँ
9. नाम सिमरन 10. दूसरा 11. **कै दर**=किसके दर पर 12. शरीर
13. बीच में 14. प्रभु की शक्ति 15. संसार 16. स्वीकार है
17. जला दे 18. दिन-रात 19. कृपा दृष्टि

राग सूही असटपदीआ महला १ घर १

3) सभ अवगण मै गुण नही कोई॥ किउ कर कंत मिलावा होई॥१॥
ना मै रूप न बंके नैणा॥ ना कुल ढंग न मीठे बैणा॥१॥रहाउ॥
सहज सीगार[1] कामण[2] कर आवै॥ ता सोहागण जा कंतै भावै॥२॥
ना तिस रूप न रेखिआ[3] काई॥ अंत न साहिब सिमरिआ जाई॥३॥
सुरत मत नाही चतुराई॥ कर किरपा प्रभ लावहो पाई॥४॥
खरी[4] सिआणी कंत न भाणी॥ माइआ लागी भरम भुलाणी॥५॥
हउमै जाई ता कंत समाई॥ तउ कामण पिआरे नव निध पाई॥६॥
अनिक जनम बिछुरत दुख पाइआ॥
कर गह लेहो प्रीतम प्रभ राइआ॥७॥
भणत[5] नानक सहु है भी होसी॥ जै भावै पिआरा तै रावेसी॥८॥

बानी गुरु अमरदास जी

राग बिलावल की वार महला ४ सलोक महला ३

1) जगत जलंदा रख लै आपणी किरपा धार॥
जित[6] दुआरै[7] उबरै तितै[8] लैह उबार॥
सतगुर सुख वेखालिआ सचा सबद बीचार॥
नानक अवर न सुझई हर बिन बखसणहार॥१॥

राग प्रभाती महला ३ चउपदे

2) जो तेरी सरणाई हर जीउ तिन तू राखन जोग॥
तुध जेवड मै अवर न सूझै ना को होआ न होग॥१॥
हर जीउ सदा तेरी सरणाई॥

1. भाव अडोल आत्मिक अवस्था 2. आत्मारूपी स्त्री 3. आकार 4. बहुत 5. कहता है 6. जिस 7. तरीक़े से 8. उसी तरह

जिउ भावै तिउ राखहो मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई॥१॥रहाउ॥
जो तेरी सरणाई हर जीउ तिन की करह प्रतिपाल॥
आप क्रिपा कर राखहो हर जीउ पोह न सकै जमकाल[1]॥२॥
तेरी सरणाई सची हर जीउ ना ओह घटै न जाए॥
जो हर छोड दूजै भाए[2] लागै ओह जंमै तै मर जाए॥३॥
जो तेरी सरणाई हर जीउ तिना दूख भूख किछ नाहे॥
नानक नाम सलाहे सदा तू सचै सबद समाहे॥४॥

वार मलार की महला १ सलोक महला ३

3) बाबीहा[3] बेनती करे कर किरपा देहो जीअ दान[4]॥
जल बिन[5] पिआस न ऊतरै छुटक जांहे मेरे प्रान॥
तू सुखदाता बेअंत है गुणदाता नेधान[6]॥
नानक गुरमुख बखस लए अंत बेली[7] होए भगवान॥२॥

राग गउड़ी पूरबी छंत महला ३

4) मिल मेरे प्रीतमा जीउ तुध बिन खरी निमाणी॥
मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अंन न पाणी॥
पाणी अंन न भावै मरीऐ हावै[8] बिन पिर[9] किउ सुख पाईऐ॥
गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ॥
आपे मेल लए सुखदाता आप मिलिआ घर आए॥
नानक कामण सदा सुहागण ना पिर मरै न जाए॥४॥

राग रामकली महला ३ अनंद

5) साची लिवै[10] बिन देह निमाणी॥
देह निमाणी लिवै बाझहो किआ करे वेचारीआ[11]॥

1. **पोह...जमकाल**=मृत्यु का भय उन्हें छू नहीं सकता 2. **दूजै भाए**=द्वैत यानी संसार का प्यार, माया का प्यार 3. जीवरूपी पपीहा 4. **जीअ दान**=आत्मिक जीवन-दान 5. **जल बिन**=नामरूपी अमृत के बिना 6. निधि, भंडार 7. सहायक, साथी 8. वियोग में 9. प्रियतम 10. प्रीति 11. बेचारा जीव

तुध बाझ समरथ कोए नाही क्रिपा कर बनवारीआ[1]॥
एस नउ[2] होर थाउ नाही सबद लाग[3] सवारीआ॥
कहै नानक लिवै बाझहो किआ करे वेचारीआ॥६॥

राग धनासिरी महला ३ घर ४

6) हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पत[4] है दाता॥
होह दैआल नाम देहो मंगत जन कंउ सदा रहउ रंग राता॥१॥
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहो[5]॥
करण कारण[6] सभना का एको अवर न दूजा कोई॥१॥रहाउ॥
बहुते फेर पए किरपन[7] कउ अब किछ किरपा कीजै॥
होह दइआल दरसन देहो अपना ऐसी बखस करीजै॥२॥
भनत[8] नानक भरम पट खूल्हे गुर परसादी जानिआ॥
साची लिव लागी है भीतर सतगुर सिउ मन मानिआ॥३॥

बानी गुरु रामदास जी

राग देवगंधारी महला ४ घर १

1) अब हम चली ठाकुर पह हार॥
जब हम सरण प्रभू की आई राख प्रभू भावै मार॥१॥रहाउ॥
लोकन की चतुराई उपमा[9] ते बैसंतर[10] जार॥
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तन दीओ है ढार[11]॥१॥
जो आवत सरण ठाकुर प्रभ तुमरी तिस राखहो किरपा धार॥
जन नानक सरण तुमारी हर जीउ राखहो लाज मुरार[12]॥२॥

---

1. परमात्मा 2. **एस नउ**=इस जीव को 3. लगकर 4. **निज पत**=अपने आप का मालिक, स्वयंभू 5. ऊपर 6. **करण कारण**=सभी कारणों का मूल कारण 7. दीनहीन 8. कहता है 9. बड़ाई 10. आग में 11. **दीओ...ढार**=अर्पण कर दिया है 12. परमात्मा

राग सूही असटपदीआ महला ४ घर २

2) कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम पिआरा हउ तिस पह आप वेचाई॥१॥
दरसन हर देखण कै ताई[1]॥
क्रिपा करह ता सतगुर मेलह हर हर नाम धिआई॥१॥रहाउ॥
जे सुखु देह त तुझह अराधी दुख भी तुझै धिआई॥२॥
जे भुख देह त इत ही राजा[2] दुख विच सूख मनाई॥३॥
तन मन काट काट सभ अरपी विच अगनी आप जलाई॥४॥
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवह सो खाई॥५॥
नानक गरीब ढह पइआ दुआरै[3] हर मेल लैहो वडिआई॥६॥
अखी काढ धरी चरणा तल सभ धरती फिर मत[4] पाई॥७॥
जे पास बहालह[5] ता तुझह अराधी जे मार कढह भी धिआई॥८॥
जे लोक सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोड न जाई॥९॥
जे तुध वल रहै ता कोई किहु आखउ[6] तुध विसरिऐ मर जाई॥१०॥
वार वार जाई गुर ऊपर पै पैरी संत मनाई॥११॥
नानक विचारा भइआ दिवाना हर तउ दरसन कै ताई॥१२॥
झखड़[7] झागी[8] मीह वरसै भी गुर देखण जाई॥१३॥
समुंद सागर होवै बहु खारा गुरसिख लंघ गुर पह जाई॥१४॥
जिउ प्राणी जल बिन है मरता तिउ सिख गुर बिन मर जाई॥१५॥
जिउ धरती सोभ करे[9] जल बरसै तिउ सिख गुर मिल बिगसाई[10]॥१६॥
सेवक का होए सेवक वरता[11] कर कर बिनउ बुलाई॥१७॥
नानक की बेनंती हर पह गुर मिल गुर सुख पाई॥१८॥

---

1. के लिए 2. तृप्त रहना 3. **ढह...दुआरै**=भाव शरण में आ गया है 4. समझ 5. बैठा ले 6. **कोई...आखउ**=कोई कुछ भी कहता रहे 7. आँधी 8. बवंडर 9. **सोभ करे**=सुंदर लगती है 10. ख़ुशी से खिल उठता है 11. काम करने को तैयार हूँ

राग गउड़ी पूरबी महला ४ चउपदे

3) तुम दइआल सरब दुख भंजन इक बिनउ सुनहो दे काने॥
जिस ते तुम हर जाने सुआमी सो सतगुर मेल मेरा प्राने॥१॥
राम हम सतगुर पारब्रहम कर माने॥
हम मूड़ मुगध असुध मत होते गुर सतगुर कै बचन हर हम जाने॥१॥रहाउ॥
जितने रस अन रस[1] हम देखे सभ तितने फीक फीकाने[2]॥
हर का नाम अंम्रित रस चाखिआ मिल सतगुर मीठ रस गाने[3]॥२॥
जिन कउ गुर सतगुर नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने[4]॥
तिन के करमहीन धुर[5] पाए देख दीपक मोहे पचाने[6]॥३॥
जिन कउ तुम दइआ कर मेलहो ते हर हर सेव लगाने॥
जन नानक हर हर हर जप प्रगटे मत गुरमत[7] नाम समाने॥४॥

राग सूही महला ४ घर ७

4) तेरे कवन कवन गुण कह कह गावा तू साहिब गुणी निधाना॥
तुमरी महिमा बरन न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना॥१॥
मै हर हर नाम धर[8] सोई[9]॥
जिउ भावै तिउ राख मेरे साहिब मै तुझ बिन अवर न कोई॥१॥रहाउ॥
मै ताण[10] दीबाण[11] तूहै मेरे सुआमी मै तुध आगै अरदास॥
मै होर थाउ नाही जिस पह करउ बेनंती मेरा दुख सुख तुझ ही पास॥२॥
विचे धरती विचे पाणी विच कासट[12] अगन धरीजै॥
बकरी सिंघ इकतै थाए राखे मन हर जप भ्रम भउ दूर कीजै॥३॥
हर की वडिआई देखहो संतहो हर निमाणिआ माण देवाए॥
जिउ धरती चरण तले[13] ते ऊपर आवै
तिउ नानक साध जना जगत आण सभ पैरी पाए॥४॥

1. अन रस=और रस 2. फीक फीकाने=फीके ही फीके हैं 3. गत्रा 4. बावले
5. प्रभु की दरगाह से 6. नष्ट हो गए 7. गुरु के उपदेश से 8. सहारा
9. वही 10. बल 11. आसरा 12. लकड़ी
13. चरण तले=पैरों के नीचे

राग कलिआन महला ४

5) प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हर गुन गावहगे॥
हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहे कब गल लावहिगे॥१॥रहाउ॥
हम बारिक मुगध इआन[1] पिता समझावहिगे॥
सुत खिन खिन भूल बिगार जगत पित भावहिगे॥१॥
जो हर सुआमी तुम देहो सोई हम पावहगे॥
मोहे दूजी नाही ठउर जिस पह हम जावहगे॥२॥
जो हर भावह भगत तिना हर भावहिगे॥
जोती जोत मिलाए जोत रल जावहगे॥३॥
हर आपे होए क्रिपाल आप लिव लावहिगे॥
जन नानक सरन दुआर हर लाज रखावहिगे॥४॥

राग गउड़ी की वार महला ४

6) सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतगुर बैठा आए॥
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतगुर देखिआ जाए॥
धन धंन पिता धन धंन कुल
धन धन सो जननी जिन गुरू जणिआ[2] माए॥
धन धंन गुरू जिन नाम अराधिआ
आप तरिआ जिनी डिठा[3] तिना लए छडाए॥
हर सतगुर मेलहो दइआ कर जन नानक धोवै पाए॥२॥

राग देवगंधारी महला ४ घर १

7) सेवक जन बने ठाकुर[4] लिव लागे॥
जो तुमरा जस कहते गुरमत तिन मुख भाग सभागे॥१॥रहाउ॥
टूटे माइआ के बंधन फाहे[5] हर राम नाम लिव लागे॥

1. अज्ञानी 2. जन्म दिया 3. आंतरिक दर्शन किए 4. परमात्मा 5. फंदे

हमरा मन मोहिओ गुर मोहन हम बिसम[1] भई मुख लागे[2]॥१॥
सगली रैण सोई अंधिआरी गुर किंचत[3] किरपा जागे॥
जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहे तुम सर[4] अवर न लागे॥२॥

राग धनासरी महला ४ घर १ चउपदे

8) हम अंधुले अंध बिखै[5] बिख राते किउ[6] चालह गुर चाली॥
सतगुर दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली[7]॥१॥
गुरसिख मीत चलहो गुर चाली॥
जो गुर कहै सोई भल मानहो हर हर कथा निराली॥१॥रहाउ॥
हर के संत सुणहो जन भाई गुर सेविहो बेग बेगाली[8]॥
सतगुर सेव खरच हर[9] बाधहो मत जाणहो[10] आज कि काल्ही॥२॥
हर के संत जपहो हर जपणा हर संत चलै हर नाली[11]॥
जिन हर जपिआ से हर होए हर मिलिआ केल केलाली[12]॥३॥
हर हर जपन जप लोच लुचानी[13] हर किरपा कर बनवाली[14]॥
जन नानक संगत साध हर मेलहो हम साध जना पग राली[15]॥४॥

राग आसा महला ४ छंत घर ४

9) हम किआ गुण तेरे विथरह[16] सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे॥
हर नाम सालाहह[17] दिन रात एहा आस आधारो॥
हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो॥
जन नानक हर का दास है हर दास पनिहारो[18]॥३॥
जिउ भावै तिउ राख लै हम सरण प्रभ आए राम राजे॥

1. हैरान 2. **मुख लागे**=दर्शन करके 3. थोड़ी-सी 4. जैसा 5. विकारों में
6. कैसे 7. पल्लू, दामन 8. **बेग बेगाली**=जल्दी से जल्दी
9. **खरच हर**=प्रभु नामरूपी ख़र्चा 10. **मत जाणहो**=ऐसा मत समझो 11. साथ
12. **केल केलाली**=लीला करनेवाला 13. **लोच लुचानी**=चाह लगी है
14. परमात्मा 15. **पग राली**=चरण धूलि 16. बखान करना
17. गुणगान करते हैं 18. **दास पनिहारो**=पानी भरनेवाला भाव दास

हम भूल विगाड़ह दिनस रात हर लाज रखाए॥
हम बारिक तूं गुर पिता है दे मत समझाए॥
जन नानक दास हर कांढिआ[1] हर पैज रखाए॥४॥

राग बिलावल महला ४ घर ३

10) हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा॥
कर किरपा रख लेवहो मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा[2]॥१॥
मेरे मन भज राम नामै रामा॥
गुरमत हर रस पाईऐ होर[3] तिआगहो निहफल कामा॥१॥रहाउ॥
हर जन सेवक से हर तारे हम निरगुन राख उपमा[4]॥
तुझ बिन अवर न कोई मेरे ठाकुर हर जपीऐ वडे करंमा[5]॥२॥
नामहीन ध्रिग जीवते तिन वड दूख सहंमा[6]॥
ओइ फिर फिर जोनि भवाईअह[7] मंदभागी मूड़ अकरमा॥३॥
हर जन नाम अधार है धुर पूरब लिखे वड करमा॥
गुर सतगुर नाम द्रिड़ाइआ जन नानक सफल जनंमा॥४॥

राग बिलावल महला ४ घर ३

11) हमरा चित लुभत मोह बिखिआ[8] बहु दुरमत मैल भरा॥
तुम्हरी सेवा कर न सकह प्रभ हम किउ कर मुगध तरा॥१॥
मेरे मन जप नरहर नाम नरहरा[9]॥
जन ऊपर किरपा प्रभ धारी मिल सतगुर पार परा॥१॥रहाउ॥
हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हर देहो मती जस करा[10]॥
तुम्हरै संग लगे से उधरे जिउ संग कासट लोह तरा॥२॥
साकत नर होछी मत मधिम[11] जिन्ह हर हर सेव न करा॥
ते नर भागहीन दुहचारी[12] ओइ जनम मुए फिर मरा॥३॥

1. कहलाता है 2. अभागे 3. अन्य 4. बड़प्पन 5. **वडे करंमा**=अच्छे कर्म, भाग्यवाले
6. सहते हैं 7. भटकते हैं 8. **मोह बिखिआ**=मोह-माया 9. परमात्मा का
10. **जस करा**=महिमा गाता रहूँ 11. **मत मधिम**=मंद बुद्धि वाले। 12. दुराचारी

जिन कउ तुम्ह हर मेलहो सुआमी ते न्हाए संतोख गुर सरा[1]॥
दुरमत मैल गई हर भजिआ जन नानक पार परा॥४॥

सो दर राग गूजरी महला ४

12) हर के जन सतगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पास॥
हम कीरे किरम[2] सतगुर सरणाई कर दइआ नाम परगास॥१॥
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नाम परगास॥
गुरमत नाम मेरा प्रान सखाई हर कीरत हमरी रहरास[3]॥१॥रहाउ॥
हर जन के वड भाग वडेरे[4] जिन हर हर सरधा हर पिआस॥
हर हर नाम मिलै त्रिपतासह मिल संगत गुण परगास॥२॥
जिन हर हर हर रस नाम न पाइआ ते भागहीण जम पास[5]॥
जो सतगुर सरण संगत नही आए ध्रिग जीवे ध्रिग जीवास॥३॥
जिन हर जन सतगुर संगत पाई तिन धुर[6] मसतक लिखिआ लिखास॥
धन धंन सतसंगत जित हर रस पाइआ
मिल जन नानक नाम परगास॥४॥

राग गोंड चउपदे महला ४ घर १

13) हर दरसन कउ मेरा मन बहु तपतै जिउ त्रिखावंत[7] बिन नीर॥१॥
मेरै मन प्रेम लगो हर तीर॥
हमरी बेदन हर प्रभ जानै मेरे मन अंतर की पीर॥१॥रहाउ॥
मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर[8]॥२॥
मिल मिल सखी गुण कहो मेरे प्रभ के ले सतगुर की मत धीर[9]॥३॥
जन नानक की हर आस पुजावहो[10] हर दरसन सांत सरीर॥४॥

1. सरोवर 2. कीड़ों जैसे जीव 3. जीवन के सफ़र की पूँजी 4. महान
5. **जम पास**=यम के फंदे में 6. प्रभु की दरगाह 7. प्यासा 8. प्रिय बंधु
9. **मत धीर**=धीरज देनेवाला उपदेश 10. **आस पुजावहो**=आशा पूरी कीजिए

राग गउड़ी पूरबी महला ४ चउपदे

14) हर हर अरथ[1] सरीर हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे॥
सतगुर दातै नाम दिड़ाइआ मुख मसतक भाग सभागे॥१॥
राम गुरमत हर लिव लागे॥१॥रहाउ॥
घट घट रमईआ रमत राम राए गुर सबद गुरू लिव लागे॥
हउ मन तन देवउ[2] काट गुरू कउ मेरा भ्रम भउ गुर बचनी भागे॥२॥
अंधिआरै दीपक आन जलाए गुर गिआन गुरू लिव लागे॥
अगिआन अंधेरा बिनस बिनासिओ घर वसतु[3] लही मन जागे॥३॥
साकत बधिक[4] माइआधारी तिन जम जोहन[5] लागे॥
उन सतगुर आगै सीस न बेचिआ ओइ आवहे जाहे अभागे॥४॥
हमरा बिनउ सुनहो प्रभ ठाकुर हम सरण प्रभू हर मागे॥
जन नानक की लज पात[6] गुरू है सिर बेचिओ सतगुर आगे॥५॥

बानी गुरु अर्जुन देव जी

राग बिलावल महला ५ दुपदे घर ८

1) अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहो॥
उर लागहो सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीत गोबिंद बीचारहो॥१॥रहाउ॥
पतित पावन प्रभ बिरद तुम्हारो हमरे दोख रिदै[7] मत धारहो॥
जीवन प्रान हर धन सुख तुम ही हउमै पटल[8] क्रिपा कर जारहो॥१॥
जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहन कत बारो[9]॥
जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेख दरस सुआमी सुख सारो॥२॥

1. के लिए 2. अर्पण करता हूँ 3. सार वस्तु 4. जीव-हत्या करनेवाले
5. ताक में 6. **लज पात**=लाज और सम्मान रखनेवाला 7. हृदय में
8. परदा 9. बालक

राग देवगंधारी महला ५

2) अपुने सतगुर पह बिनउ कहिआ॥
भए क्रिपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा[1] गइआ॥ रहाउ॥
हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुन अवगुन सभ सहिआ॥
कर[2] मसतक धार साज निवाजे मुए दुसट[3] जो खइआ[4]॥१॥
परउपकारी सरब सधारी[5] सफल दरसन सहजइआ॥
कहो नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ॥२॥

राग बिलावल महला ५ दुपदे घर ८

3) ऐसी किरपा मोहे करहो॥
संतह चरण हमारो माथा नैन दरस तन धूर परहो॥१॥ रहाउ॥
गुर को सबद मेरै हीअरै बासै हर नामा मन संग धरहो॥
तसकर पंच[6] निवारहो ठाकुर सगलो भरमा होम जरहो॥१॥
जो तुम्ह करहो सोई भल मानै भावन दुबिधा दूर टरहो॥
नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंग ले मोहे उधरहो॥२॥

राग बिलावल महला ५ दुपदे घर ८

4) ऐसी दीखिआ जन सिउ[7] मंगा॥
तुम्हरो धिआन तुम्हारो रंगा॥ तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा॥१॥ रहाउ॥
जन की टहल[8] संभाखन[9] जन सिउ ऊठन बैठन जन कै संगा॥
जन चर रज मुख माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा॥१॥
जन पारब्रहम जा की निरमल महिमा जन के चरन तीरथ कोट गंगा॥
जन की धूर कीओ मजन[10] नानक जनम जनम के हरे कलंगा[11]॥२॥

1. भ्रम 2. हाथ 3. भाव विकार 4. नष्ट हो गए
5. **सरब सधारी**=सबका आधार है 6. भाव पाँच विकार 7. **जन सिउ**=भाव सतगुरु से
8. सेवा 9. वार्तालाप 10. स्नान 11. पाप, कलंक

राग सूही छंत महला ५ घर ३

5) कर किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखह दरस तेरा राम॥
लाख जिहवा देह मेरे पिआरे मुख हर आराधे मेरा राम॥
हर आराधे जम पंथ साधे दूख न विआपै[1] कोई॥
जल थल महीअल[2] पूरन सुआमी जत देखा तत सोई॥
भरम मोह बिकार नाठे प्रभ नेरहू ते नेरा॥
नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखह दरस तेरा॥१॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५

6) कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई॥१॥ रहाउ॥
रूप हीन बुध बल हीनी मोहे परदेसन दूर ते आई[3]॥१॥
नाहिन दरब[4] न जोबन माती[5] मोहे अनाथ की करहो समाई[6]॥२॥
खोजत खोजत भई बैरागन प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई[7]॥३॥
दीन दइआल क्रिपाल प्रभ नानक साधसंग मेरी जलन[8] बुझाई॥४॥

राग सूही महला ५ घर १

7) किआ गुण तेरे सार सम्हाली मोहे निरगुन के दातारे॥
बै खरीद[9] किआ करे चतुराई इह जीउ[10] पिंड[11] सभ थारे॥१॥
लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे[12]॥१॥ रहाउ॥
प्रभ दाता मोहे दीन भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे॥
सो किछ नाही जे मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे॥२॥
किआ सेव कमावउ किआ कह रीझावउ बिधि कित पावउ दरसारे॥
मित नही पाईऐ अंत न लहीऐ मन तरसै चरनारे॥३॥

1. **न बिआपै**=प्रभावित नहीं करते 2. आकाश 3. **दूर...आई**=भाव अनेक जन्मों के बाद मनुष्य जन्म में आई 4. नामरूपी धन 5. **जोबन माती**=यौवन की मस्ती
6. सँभाल 7. प्यासी 8. तृष्णा की अग्नि 9. **बै खरीद**=मूल्य देकर, ख़रीदा हुआ
10. जीवन 11. शरीर 12. बलिहार

पावउ दान ढीठ[1] होए मागउ मुख लागै संत रेनारे[2]॥
जन नानक कउ गुर किरपा धारी प्रभ हाथ देइ निसतारे॥४॥

राग रामकली महला ५ घर १

8) किरपा करहो दीन के दाते मेरा गुण अवगण न बीचारहो कोई॥
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही॥१॥
मेरे मन सतगुर सेव सुख होई॥
जो इछहो सोई फल पावहो फिर दूख न विआपै कोई॥१॥रहाउ॥
काचे भाडे[3] साज[4] निवाजे[5] अंतर जोत समाई॥
जैसा लिखत लिखिआ धुर करतै[6] हम तैसी किरत कमाई॥२॥
मन तन थाप कीआ सभ अपना एहो आवण जाणा॥
जिन दीआ सो चित न आवै मोह अंध लपटाणा॥३॥
जिन कीआ सोई प्रभ जाणै हर का महल अपारा॥
भगति करी हर के गुण गावा नानक दास तुमारा॥४॥

राग कानड़ा महला ५ घर ३

9) कुचिल[7] कठोर कपट कामी॥
जिउ जानह तिउ तार सुआमी॥१॥रहाउ॥
तू समरथ सरन जोग तू राखह अपनी कल धार[8]॥१॥
जाप ताप नेम सुच संजम नाही इन बिधे छुटकार॥
गरत[9] घोर अंध ते काढहो प्रभ नानक नदर[10] निहार॥२॥

1. ज़िद्दी 2. भाव आंतरिक चरणों की धूलि 3. भाव शरीर
4. बनाया 5. बड़ाई दी 6. विधाता ने 7. मलीन 8. **कल धार**=शक्ति से
9. गड्ढा 10. कृपा भरी नज़र से

राग जैतसरी महला ५ घर ४ दुपदे

10) कोई जन हर सिउ देवै जोर॥
चरन गहउ बकउ[1] सुभ रसना दीजह प्रान अकोर[2]॥१॥रहाउ॥
मन तन निरमल करत किआरो[3] हर सिंचै सुधा संजोर[4]॥
इआ रस मह मगन होत किरपा ते महा बिखिआ ते[5] तोर[6]॥१॥
आइओ सरण दीन दुख भंजन चितवउ तुम्हरी ओर॥
अभै पद[7] दान सिमरन सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोर॥२॥

राग आसा घर ७ महला ५

11) चरन कमल की आस पिआरे॥ जमकंकर[8] नस गए विचारे॥
तू चित आवह तेरी मइआ[9]॥
सिमरत नाम सगल रोग खइआ॥१॥रहाउ॥
अनिक दूख देवह अवरा कउ॥ पहुच न साकह जन तेरे कउ॥२॥
दरस तेरे की पिआस मन लागी॥ सहज अनंद बसै बैरागी॥३॥
नानक की अरदास सुणीजै॥ केवल नाम रिदे मह दीजै॥४॥

राग सूही महला ५ घर ७

12) जिस के सिर ऊपर तूं सुआमी सो दुख कैसा पावै॥
बोल न जाणै माइआ मद माता मरणा चीत न आवै॥१॥
मेरे राम राए तूं संता का संत तेरे॥
तेरे सेवक कउ भउ किछ नाही जम नही आवै नेरे॥१॥रहाउ॥
जो तेरै रंग राते सुआमी तिन्ह का जनम मरण दुख नासा॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतगुर का दिलासा॥२॥

1. बोलूँ 2. भेंट में 3. खेत 4. सँभालकर, संजोकर
5. **महा बिखिआ ते**=विकारों के भयानक ज़हर से 6. नाता तोड़
7. **अभै पद**=जहाँ मौत का डर न हो 8. यमदूत 9. कृपा

नाम धिआइन सुख फल पाइन आठ पहर आराधह॥
तेरी सरण तेरै भरवासै पंच दुसट[1] लै साधह[2]॥३॥
गिआन धिआन किछ करम न जाणा सार न जाणा तेरी॥
सभ ते वडा सतगुर नानक जिन कल[3] राखी मेरी॥४॥

राग सूही महला ५ असटपदीआ घर १० काफी

13) जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ॥
जिन्हा नेह दूजाणे लगा झूर मरहो से वाढीआ॥
हउ ना छोडउ कंत पासरा॥
सदा रंगीला लाल पिआरा एह महिंजा आसरा॥१॥रहाउ॥
सजण तूहै सैण तू मै तुझ उपर बहु माणीआ॥
जा तू अंदर ता सुखे तूं निमाणी माणीआ॥२॥
जे तू तुठा क्रिपा निधान ना दूजा वेखाल॥
एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समाल॥३॥
पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरस दिखाल॥
स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुर थीवै किरपाल॥४॥
किती लख करोड़ पिरीए रोम न पुजन तेरिआ॥
तू साही हू साहु हउ कह न सका गुण तेरिआ॥५॥
सहीआ तऊ असंख मंञहो हभ वधाणीआ॥
हिक भोरी नदर निहाल देह दरस रंग माणीआ॥६॥
जै डिठे मन धीरीऐ किलविख वंञन्ह दूरे॥
सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे॥७॥
होए निमाणी ढह पई मिलिआ सहज सुभाए॥
पूरब लिखिआ पाइआ नानक संत सहाए॥८॥

---

1. पंच दुसट=काम, क्रोध आदि पाँच दुश्मन 2. वश में कर लेते हैं
3. लाज भाव इज़्ज़त

राग बिलावल महला ५ घर ५ चउपदे

14) टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल॥
मसतक अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल॥१॥
तुम्ह मिलते मेरा मन जीओ तुम्ह मिलहो दइआल॥
निस बासुर मन अनद होत चितवत किरपाल॥१॥रहाउ॥
जगत उधारन साध प्रभ तिन्ह लागहो पाल॥
मो कउ दीजै दान प्रभ संतन पग राल॥२॥
उकत सिआनप कछु नही नाही कछु घाल॥
भ्रम भै राखहो मोह ते काटहो जम जाल॥३॥
बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल॥
गुण गावउ तेरे साधसंग नानक सुख साल॥४॥

सारग महला ५ दुपदे घर ४

15) ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ॥
उतर गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसन पाइआ॥१॥रहाउ॥
अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नाम जपाइआ॥
दुख नाठे सुख सहज समाए अनद अनद गुण गाइआ॥१॥
बाह पकर कढ लीने अपुने ग्रिह अंध कूप ते माइआ॥
कहो नानक गुर बंधन काटे बिछुरत आन मिलाइआ॥२॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५

16) तुझ बिन कवन हमारा॥ मेरे प्रीतम प्रान अधारा॥१॥रहाउ॥
अंतर की बिधि[1] तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले[2]॥
सरब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह[3] अतोले[4]॥१॥
बरन न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते॥

---

1. अवस्था 2. सुखदायक 3. अथाह 4. अतुलनीय

अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते॥ २॥
भ्रम भउ काट कीए निहकेवल[1] जब ते हउमै मारी॥
जनम मरण को चूको सहसा[2] साधसंगत दरसारी॥ ३॥
चरण पखार[3] करउ गुर सेवा बार जाउ लख बरीआ॥
जिह प्रसाद इह भउजल तरिआ जन नानक प्रिअ संग मिरीआ[4]॥ ४॥

राग सूही महला ५ घर ७

17) तुध चित आए महा अनंदा जिस विसरह सो मर जाए॥
दइआल होवह जिस ऊपर करते[5] सो तुध सदा धिआए॥ १॥
मेरे साहिब तूं मै माण निमाणी॥
अरदास करी प्रभ अपने आगै सुण सुण जीवा तेरी बाणी॥ १॥ रहाउ॥
चरण धूड़ तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बल जाई॥
अंम्रित बचन रिदै उर धारी तउ किरपा ते संग पाई॥ २॥
अंतर की गति तुध पह[6] सारी तुध जेवड अवर न कोई॥
जिस नो लाए लैह[7] सो लागै भगत तुहारा सोई॥ ३॥
दुइ कर जोड़ मागउ इक दाना साहिब तुठै[8] पावा॥
सास सास नानक आराधे आठ पहर गुण गावा॥ ४॥

राग धनासरी महला ५ घर १ चउपदे

18) तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे॥
निमख निमख तुम ही प्रतिपालहो हम बारिक तुमरे धारे[9]॥ १॥
जिहवा एक कवन गुन कहीऐ॥
बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंत न किन ही लहीऐ॥ १॥ रहाउ॥
कोट पराध हमारे खंडहो अनिक बिधी समझावहो॥

1. पवित्र 2. **चूको सहसा**=संशय दूर हो गया 3. **चरण पखार**=आंतरिक चरण धोकर
4. **मिरीआ**=मिल गया 5. कर्ता प्रभु 6. **तुध पह**=तुम्हारे सामने है
7. **लाए लैह**=लगा लेता है 8. प्रसन्न करके 9. सहारे

हम अगिआन अलप मत थोरी तुम आपन बिरद रखावहो[1]॥ २॥
तुमरी सरण तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले॥
राखहो राखनहार दइआला नानक घर के गोले[2]॥ ३॥

राग सूही महला ५ घर ३

19) तूं जीवन तूं प्रान अधारा॥ तुझ ही पेख पेख मन साधारा[3]॥ १॥
तूं साजन तूं प्रीतम मेरा॥ चितह न बिसरह काहू बेरा[4]॥ १॥ रहाउ॥
बै खरीद हउ दासरो तेरा॥ तूं भारो ठाकुर गुणी गहेरा[5]॥ २॥
कोट दास जा कै दरबारे॥ निमख निमख वसै तिन्ह नाले॥ ३॥
हउ किछ नाही सभ किछ तेरा॥ ओत पोत[6] नानक संग बसेरा॥ ४॥

राग माझ महला ५ चउपदे घर १

20) तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता॥ तूं मेरा बंधप तूं मेरा भ्राता॥
तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा[7] जीउ॥ १॥
तुमरी क्रिपा ते तुध पछाणा॥ तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा॥
तुझ बिन दूजा अवर न कोई सभ तेरा खेल अखाड़ा जीउ॥ २॥
जीअ जंत सभ तुध उपाए॥ जित जित भाणा तित तित लाए॥
सभ किछ कीता तेरा होवै नाही किछ असाड़ा[8] जीउ॥ ३॥
नाम धिआए महा सुख पाइआ॥ हर गुण गाए मेरा मन सीतलाइआ॥
गुर पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा[9] जीउ॥ ४॥

राग गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे

21) तूं समरथ तूं है मेरा सुआमी॥ सभ किछ तुम ते तूं अंतरजामी॥ १॥
पारब्रहम पूरन जन ओट॥ तेरी सरण उधरह जन कोट॥ १॥ रहाउ॥
जेते जीअ तेते सभ तेरे॥ तुमरी क्रिपा ते सूख घनेरे॥ २॥

1. **आपन...रखावहो**=अपना यश क़ायम रखो 2. सेवक 3. मज़बूत आधार
4. **काहू बेरा**=किसी भी समय 5. गंभीर 6. **ओत पोत**=एक दूसरे में पिरोया
7. **केहा काड़ा**=चिंता कैसी 8. हमारा 9. विषम अखाड़ा भाव संसार

जो किछ वरतै[1] सभ तेरा भाणा॥ हुकम बूझै[2] सो सच समाणा॥३॥
कर किरपा दीजै प्रभ दान॥ नानक सिमरै नाम निधान॥४॥

राग गउड़ी सुखमनी महला ५ सलोक

22) तू ठाकुर तुम पह अरदास॥ जीउ पिंड सभ तेरी रास[3]॥
तुम मात पिता हम बारिक तेरे॥ तुमरी क्रिपा मह सूख घनेरे॥
कोए न जानै तुमरा अंत॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत॥
सगल समग्री तुमरै सूत्र[4] धारी[5]॥ तुम ते होए सो आगिआकारी॥
तुमरी गति मित[6] तुम ही जानी॥ नानक दास सदा कुरबानी॥८॥

राग वडहंस महला ५ घर १

23) तू बेअंत को विरला जाणै॥ गुर प्रसाद को सबद पछाणै॥१॥
सेवक की अरदास पिआरे॥ जप जीवा प्रभ चरण तुमारे॥१॥रहाउ॥
दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते॥ जिसह जनावहो[7] तिनह तुम जाते[8]॥२॥
सदा सदा जाई बलिहारी॥ इत उत[9] देखउ ओट तुमारी॥३॥
मोहे निरगुण गुण किछू न जाता॥ नानक साधू देख मन राता॥४॥

राग आसा घर ७ महला ५

24) तू मेरा तरंग[10] हम मीन तुमारे॥ तू मेरा ठाकुर हम तेरै दुआरे॥१॥
तूं मेरा करता हउ सेवक तेरा॥ सरण गही प्रभ गुनी गहेरा॥१॥ रहाउ॥
तू मेरा जीवन तू आधार॥ तुझह पेख बिगसै कउलार[11]॥२॥
तू मेरी गति पत[12] तू परवान॥ तू समरथ मै तेरा ताण[13]॥३॥
अनदिन जपउ नाम गुणतास[14]॥ नानक की प्रभ पह[15] अरदास॥४॥

---

1. होता है 2. समझ लेता है 3. पूँजी 4. हुक्म में, मर्यादा में
5. टिकी हुई है 6. **गति मित**=अवस्था और सीमा 7. सूझ देता है
8. **तिनह...जाते**=वही तेरी पहचान करता है 9. **इत उत**=इस लोक में और परलोक में
10. लहर 11. हृदयरूपी कमल 12. प्रतिष्ठा 13. बल
14. गुणों का भंडार 15. पास

राग भैरउ महला ५ चउपदे घर २

25) तू मेरा पिता तूहै मेरा माता॥ तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता॥
तू मेरा ठाकुर हउ दास तेरा॥ तुझ बिन अवर नही को मेरा॥१॥
कर किरपा करहो प्रभ दात॥ तुम्हरी उसतत[1] करउ दिन रात॥१॥रहाउ॥
हम तेरे जंत[2] तू बजावनहारा॥ हम तेरे भिखारी दान देह दातारा॥
तउ परसाद रंग रस माणे॥ घट घट अंतर तुमह समाणे॥२॥
तुम्हरी क्रिपा ते जपीऐ नाउ॥ साधसंग तुमरे गुण गाउ॥
तुम्हरी दइआ ते होए दरद बिनास॥
तुमरी मइआ ते[3] कमल बिगास॥३॥
हउ बलिहार जाउ गुरदेव॥ सफल दरसन जा की निरमल सेव॥
दइआ करहो ठाकुर प्रभ मेरे॥ गुण गावै नानक नित तेरे॥४॥

राग बिहागड़ा महला ५ घर २ छंत

26) तू समरथ सदा हम दीन भेखारी राम॥
माइआ मोह मगन कढ लेहो मुरारी राम॥
लोभ मोह बिकार बाधिओ अनिक दोख कमावने॥
अलिपत बंधन रहत करता[4] कीआ अपना पावने॥
कर अनुग्रह पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी॥
बिनवंत नानक दास हर का प्रभ जीअ प्रान अधारी॥२॥
तू समरथ वडा मेरी मत थोरी राम॥
पालह अकिरतघना[5] पूरन द्रिसटि तेरी राम॥
अगाध बोध[6] अपार करते मोहे नीच कछू न जाना॥
रतन तिआग संग्रहन कउडी पसू नीच इआना[7]॥
तिआग चलती महा चंचल दोख कर कर जोरी॥
नानक सरन समरथ सुआमी पैज[8] राखहो मोरी॥३॥

---

1. गुणगान 2. बजनेवाले यंत्र 3. **मइआ ते**=कृपा से 4. सृष्टि कर्ता
5. एहसान न माननेवाला 6. **अगाध बोध**=जहाँ ज्ञान की पहुँच नहीं है 7. अज्ञानी
8. लाज

राग रामकली महला ५ घर २

27) तेरी सरण पूरे गुरदेव॥ तुध बिन दूजा नाही कोए॥
तू समरथ पूरन पारब्रहम॥ सो धिआए पूरा जिस करम॥१॥
तरण तारण प्रभ तेरो नाउ॥
एका सरण गही मन मेरै तुध बिन दूजा नाही ठाउ॥१॥रहाउ॥
जप जप जीवा तेरा नाउ॥ आगै दरगह पावउ ठाउ॥
दूख अंधेरा मन ते जाए॥ दुरमत बिनसै राचै[1] हर नाए[2]॥२॥
चरन कमल सिउ लागी प्रीत॥ गुर पूरे की निरमल रीत॥
भउ भागा निरभउ मन बसै॥ अंम्रित नाम रसना नित जपै॥३॥
कोट जनम के काटे फाहे[3]॥ पाइआ लाभ सचा धन लाहे॥
तोट[4] न आवै अखुट भंडार॥ नानक भगत सोहहे[5] हर दुआर॥४॥

राग सूही महला ५ घर ३

28) दरसन देख जीवा गुर तेरा॥ पूरन करम होए प्रभ मेरा॥१॥
इह बेनंती सुण प्रभ मेरे॥ देह नाम कर अपणे चेरे॥१॥रहाउ॥
अपणी सरण राख प्रभ दाते॥ गुर प्रसाद किनै विरलै जाते॥२॥
सुनहो बिनउ प्रभ मेरे मीता॥ चरण कमल वसह मेरै चीता॥३॥
नानक एक करै अरदास॥ विसर नाही पूरन गुणतास[6]॥४॥

राग गउड़ी महला ५ मांझ

29) दुख भंजन तेरा नाम जी दुख भंजन तेरा नाम॥
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतगुर गिआन॥१॥रहाउ॥
जित घट वसै पारब्रहम सोई सुहावा थाउ॥
जम कंकर नेड़[7] न आवई रसना हर गुण गाउ॥१॥
सेवा सुरत न जाणीआ ना जापै आराध॥

1. लीन होने पर 2. नाम में 3. बंधन 4. कमी 5. शोभायमान होते हैं 6. गुणों के भंडार 7. नज़दीक

ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाध॥२॥
भए क्रिपाल गुसाईआ नठे सोग संताप॥
तती वाउ न लगई सतगुर रखे आप॥३॥
गुर नाराइण दयु[1] गुर गुर सचा सिरजणहार॥
गुर तुठै[2] सभ किछ पाइआ जन नानक सद बलिहार॥४॥

राग जैतसरी महला ५ घर २ छंत

30) दूसर नाही ठाउ का पह जाईऐ॥
आठ पहर कर जोड़ सो प्रभ धिआईऐ॥
धिआए सो प्रभ सदा अपुना मनह चिंदिआ[3] पाईऐ॥
तज मान मोह विकार दूजा एक सिउ लिव लाईऐ॥
अरप मन तन प्रभू आगै आप[4] सगल मिटाईऐ॥
बिनवंत नानक धार किरपा साच नाम समाईऐ॥२॥

राग धनासरी महला ५ घर १ चउपदे

31) पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जस गाई॥
सास सास मन नाम सम्हारै इह बिस्राम निध[5] पाई॥१॥
तुम्ह करहो दइआ मेरे साई॥
ऐसी मत दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुध धिआई॥१॥रहाउ॥
तुम्हरी क्रिपा ते मोह मान छूटै बिनस जाए भरमाई[6]॥
अनद रूप रविओ[7] सभ मधे[8] जत कत[9] पेखउ जाई॥२॥
तुम्ह दइआल किरपाल क्रिपा निध पतित पावन गोसाई॥
कोट सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई[10]॥३॥
जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मन भाई॥
नाम जपत त्रिसना सभ बुझी है नानक त्रिपत अघाई[11]॥४॥

1. दयालु 2. **गुर तुठै**=गुरु के प्रसन्न होने पर 3. **मनह चिंदिआ**=मनचाहा फल 4. हौंमैं 5. **बिस्राम निध**=शांति का ख़ज़ाना 6. भ्रम 7. रमा हुआ है 8. **सभ मधे**=सभी में 9. **जत कत**=जहाँ कहीं भी 10. **निमख बुलाई**=पल-भर नाम जपने से 11. **त्रिपत अघाई**=तृप्ति हो गई

राग सूही महला ५ घर ७

32) पारब्रहम परमेसर सतगुर आपे करणैहारा॥
चरण धूड़ तेरी सेवक मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा॥१॥
मेरे राम राए जिउ राखह तिउ रहीऐ॥
तुध भावै ता नाम जपावह सुख तेरा दिता लहीऐ॥१॥रहाउ॥
मुकत[1] भुगत[2] जुगत[3] तेरी सेवा जिस तूं आप कराइहि॥
तहा बैकुंठ जह कीरतन तेरा तूं आपे सरधा लाइहि॥२॥
सिमर सिमर सिमर नाम जीवा तन मन होए निहाला॥
चरण कमल तेरे धोए धोए पीवा मेरे सतगुर दीन दइआला॥३॥
कुरबाण जाई उस वेला सुहावी जित तुमरै दुआरै आइआ॥
नानक कउ प्रभ भए क्रिपाला सतगुर पूरा पाइआ॥४॥

राग बिलावल महला ५ दुपदे घर ६

33) प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै॥
नमसकार डंडउत बंदना[4] अनिक बार जाउ बारै॥१॥रहाउ॥
ऊठत बैठत सोवत जागत इह मन तुझह चितारै[5]॥
सूख दूख इस मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै॥१॥
तू मेरी ओट बल बुध धन तुम ही तुमहे मैरै परवारै॥
जो तुम करहो सोई भल हमरै पेख नानक सुख चरनारै॥२॥

राग सारग महला ५ दुपदे घर ४

34) प्रभ जी मोहे कवन[6] अनाथ बिचारा॥
कवन मूल ते मानुख करिआ इह परताप तुहारा॥१॥रहाउ॥
जीअ प्राण सरब के दाते गुण कहे न जाहे अपारा॥
सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सरब घटां आधारा॥१॥

1. विकारों से मुक्ति 2. सुख भोगना 3. जीने का ढंग
4. **डंडउत बंदना**=दंडवत प्रणाम 5. **तुझह चितारै**=तेरा स्मरण करता है
6. **मोहे कवन**=मैं भला कौन हूँ

कोए न जाणै तुमरी गति मित[1] आपह एक पसारा॥
साध नाव बैठावहो नानक भव सागर पार उतारा॥२॥

राग टोडी महला ५ घर ५ दुपदे

35) प्रभ तेरे पग की धूर॥
दीन दइआल प्रीतम मनमोहन कर किरपा मेरी लोचा[2] पूर॥१॥रहाउ॥
दह दिस रव रहिआ जस तुमरा अंतरजामी सदा हजूर॥
जो तुमरा जस गावह करते से जन कबहु न मरते झूर[3]॥१॥
धंध बंध[4] बिनसे माइआ के साधू संगत मिटे बिसूर[5]॥
सुख संपत भोग इस जीअ के बिन हर नानक जाने कूर[6]॥२॥

राग टोडी महला ५ घर २ दुपदे

36) मागउ दान ठाकुर नाम॥
अवर कछू मेरै संग न चालै मिलै क्रिपा गुण गाम॥१॥रहाउ॥
राज माल अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम॥
धाए धाए बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम॥१॥
बिन गोविंद अवर जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम[7]॥
कहो नानक संत रेन मागउ मेरो मन पावै बिस्राम॥२॥

राग तिलंग महला ५ घर ३

37) मिहरवान साहिब मिहरवान॥ साहिब मेरा मिहरवान॥
जीअ सगल कउ देइ दान॥रहाउ॥
तू काहे डोलह प्राणीआ तुध राखैगा सिरजणहार॥
जिन पैदाइस तू कीआ सोई देइ आधार॥१॥
जिन उपाई मेदनी[8] सोई करदा सार[9]॥

1. **गति मित**=लीला 2. इच्छा 3. दुःखी होकर, पछताकर
4. **धंध बंध**=धंधे और बंधन 5. दुःख, चिंता 6. झूठे, बेकार 7. कच्ची, अस्थिर
8. पृथ्वी 9. सँभाल

घट घट मालक दिला का सचा परवदगार[1]॥२॥
कुदरत[2] कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाह[3]॥
कर बंदे तू बंदगी जिचर[4] घट मह साह॥३॥
तू समरथ अकथ अगोचर जीउ पिंड तेरी रास[5]॥
रहम तेरी सुख पाइआ सदा नानक की अरदास॥४॥

राग माझ महला ५ चउपदे घर १

38) मेरा मन लोचै गुर दरसन ताई[6]॥ बिलप करे चात्रिक की निआई[7]॥
त्रिखा[8] न उतरै सांत न आवै बिन दरसन संत पिआरे जीउ॥१॥
हउ घोली[9] जीउ घोल घुमाई[10] गुर दरसन संत पिआरे जीउ॥१॥रहाउ॥
तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुन बाणी॥चिर होआ देखे सारिंगपाणी[11]॥
धंन सो देस जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे[12] जीउ॥२॥
हउ घोली हउ घोल घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ॥१॥रहाउ॥
इक घड़ी न मिलते ता कलिजुग होता॥
हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुध भगवंता॥
मोहे रैण न विहावै[13] नीद न आवै बिन देखे गुर दरबारे जीउ॥३॥
हउ घोली जीउ घोल घुमाई तिस सचे गुर दरबारे जीउ॥१॥ रहाउ॥
भाग होआ गुर संत मिलाइआ॥ प्रभ अबिनासी घर मह पाइआ॥
सेव करी पल चसा[14] न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ॥४॥
हउ घोली जीउ घोल घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ॥रहाउ॥१॥

राग आसा घर ८ काफी महला ५

39) मै बंदा बै खरीद सच साहिब मेरा॥
जीउ पिंड सभ तिस दा सभ किछ है तेरा॥१॥

1. पालन करनेवाला 2. प्रभु की रचना शक्ति 3. किसी का मोहताज नहीं 4. जब तक 5. पूँजी 6. के लिए 7. तरह 8. प्यास 9. **हउ घोली**=मैं बलिहारी जाता हूँ 10. **घोल घुमाई**=क़ुरबान जाऊँ 11. भाव परमात्मा 12. परमात्मा 13. बीतती है 14. **पल चसा**=पल का तीसरा भाग

माण निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा[1]॥
बिन साचे अन टेक[2] है सो जाणहो काचा॥१॥रहाउ॥
तेरा हुकम अपार है कोई अंत न पाए॥
जिस गुर पूरा भेटसी सो चलै रजाए[3]॥२॥
चतुराई सिआणपा कितै काम न आईऐ॥
तुठा साहिब जो देवै सोई सुख पाईऐ॥३॥
जे लख करम[4] कमाईअह किछ पवै न बंधा॥
जन नानक कीता नाम धर[5] होर छोडिआ धंधा॥४॥

राग बिलावल महला ५ घर २

40) मै मन तेरी टेक[6] मेरे पिआरे मै मन तेरी टेक॥
अवर सिआणपा बिरथीआ[7] पिआरे राखन कउ तुम एक॥१॥रहाउ॥
सतगुर पूरा जे मिलै पिआरे सो जन होत निहाला[8]॥
गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होए दइआला॥
सफल मूरत गुरदेउ सुआमी सरब कला[9] भरपूरे॥
नानक गुर पारब्रहम परमेसर सदा सदा हजूरे॥१॥

राग बिलावल महला ५ घर ५ चउपदे

41) राखहो अपनी सरण प्रभ मोहे किरपा धारे॥
सेवा कछू न जानऊ नीच मूरखारे॥१॥
मान करउ तुध ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे॥
हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे॥१॥रहाउ॥
हम अवगन करह असंख नीत[10] तुम्ह निरगुन दातारे॥
दासी संगत[11] प्रभू तिआग ए करम हमारे॥२॥

1. भरोसा 2. **अन टेक**=अन्य का सहारा लेना 3. रज़ा में, हुक्म में 4. **लख करम**=लाखों कर्मकांड 5. धारण 6. सहारा 7. व्यर्थ 8. आनंदित 9. शक्तियाँ 10. नित्य, रोज़ाना 11. **दासी संगत**=भाव माया की संगत

तुम्ह देवहो सभ किछ दइआ धार हम अकिरतघनारे॥
लाग परे तेरे दान सिउ नह चित खसमारे॥३॥
तुझ ते बाहर किछ नही भव काटनहारे॥
कहो नानक सरण दइआल गुर लेहो मुगध उधारे॥४॥

राग गउड़ी पूरबी महला ५

42) राख पिता प्रभ मेरे। मोहे निरगुन सभ गुन तेरे॥१॥रहाउ॥
पंच बिखादी[1] एक गरीबा राखहो राखनहारे॥
खेद[2] करह अर बहुत संतावह आइओ सरन तुहारे॥१॥
कर कर हारिओ अनिक बहु भाती छोडह कतहूं नाही॥
एक बात सुन ताकी ओटा साधसंग मिट जाही॥२॥
कर किरपा संत मिले मोहे तिन ते धीरज पाइआ॥
संती मंत[3] दीओ मोहे निरभउ गुर का सबद कमाइआ[4]॥३॥
जीत लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी॥
कहो नानक मन भइआ परगासा पाइआ पद निरबाणी[5]॥४॥

राग वडहंस महला ५ घर १

43) विसर नाही प्रभ दीन दइआला॥ तेरी सरण पूरन किरपाला॥१॥रहाउ॥
जह चित आवह सो थान सुहावा॥
जित वेला विसरह ता लागै हावा[6]॥१॥
तेरे जीअ तू सद ही साथी॥ संसार सागर ते कढ दे हाथी[7]॥२॥
आवण जाणा तुम ही कीआ॥ जिस तू राखह तिस दूख न थीआ[8]॥३॥
तू एको साहिब अवर न होर॥ बिनउ करै नानक कर जोर॥४॥

---

1. **पंच बिखादी**=भाव पाँच विकार 2. दुःखी 3. मंत्र, दीक्षा, उपदेश
4. साधना की 5. **पद निरबाणी**=निर्वाण पद, मुक्ति की अवस्था 6. पछतावा
7. **दे हाथी**=हाथ देकर 8. **न थीआ**=नहीं होता है

राग माझ महला ५ चउपदे घर १

44) सगल संतन पह वसतु इक मांगउ॥ करउ बिनंती मान तिआगउ॥
वार वार जाई लख वरीआ देहो संतन की धूरा जीउ॥१॥
तुम दाते तुम पुरख बिधाते॥ तुम समरथ सदा सुखदाते॥
सभ को तुम ही ते वरसावै[1] अउसर[2] करहो हमारा पूरा जीउ॥२॥
दरसन तेरै भवन पुनीता[3]॥ आतम गड़[4] बिखम[5] तिना ही जीता॥
तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुध जेवड अवर न सूरा जीउ॥३॥
रेन संतन की मेरै मुख लागी॥ दुरमत बिनसी कुबुध अभागी॥
सच घर बैस[6] रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा[7] जीउ॥४॥

राग टोडी महला ५ घर २ दुपदे

45) सतगुर आइओ सरण तुहारी॥
मिलै सूख नाम हर सोभा चिंता लाहे[8] हमारी॥१॥रहाउ॥
अवर न सूझै दूजी ठाहर[9] हार परिओ तउ दुआरी॥
लेखा छोड अलेखै[10] छूटह हम निरगुन लेहो उबारी॥१॥
सद बखसिंद[11] सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी॥
नानक दास संत पाछै[12] परिओ राख लेहो इह बारी[13]॥२॥

राग सूही महला ५ घर ६

46) सतगुर पास बेनंतीआ मिलै नाम आधारा॥
तुठा[14] सचा पातसाह[15] ताप[16] गइआ संसारा॥१॥
भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा॥१॥रहाउ॥
सच तेरी सामगरी सच तेरा दरबारा॥
सच तेरे खाजीनिआ[17] सच तेरा पासारा॥२॥

---

1. लाभ उठाते हैं 2. अवसर 3. पवित्र 4. क़िला 5. कठिन
6. बैठकर 7. झूठे 8. दूर करना 9. ठिकाना 10. बिना लेखे-जोखे के
11. क्षमा करनेवाले 12. **संत पाछै**=भाव शरण 13. **इह बारी**=इस बार
14. प्रसन्न 15. परमात्मा 16. दुःख 17. ख़ज़ाने

तेरा रूप अगंम है अनूप[1] तेरा दरसारा[2]॥
हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हर नाम पिआरा॥३॥
सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा॥
गुर नानक मिलिआ पारब्रहम तेरिआ चरणा कउ बलिहारा॥४॥

राग बिलावल महला ५ चउपदे घर १

47) सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे॥ अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे॥
मोहे अनाथ तुमरी सरणाई॥ कर किरपा हर चरन धिआई॥१॥
दइआ करहो बसहो मन आए॥
मोहे निरगुन लीजै लड़[3] लाए॥रहाउ॥
प्रभ चित आवै ता कैसी भीड़[4]॥ हर सेवक नाही जम पीड़॥
सरब दूख हर सिमरत नसे॥ जा कै संग सदा प्रभ बसै॥२॥
प्रभ का नाम मन तन आधार॥ बिसरत नाम होवत तन छार॥
प्रभ चित आए पूरन सभ काज॥
हर बिसरत सभ का मुहताज[5]॥३॥
चरन कमल संग लागी प्रीत॥ बिसर गई सभ दुरमत रीत॥
मन तन अंतर हर हर मंत॥ नानक भगतन कै घर सदा अनंद॥४॥

राग बिहागड़ा महला ५ छंत घर २

48) सुनहो बेनंतीआ सुआमी मेरे राम॥
कोट अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम॥
दुख हरन किरपा करन मोहन कल कलेसह भंजना[6]॥
सरन तेरी रख लेहो मेरी सरब मै निरंजना॥
सुनत पेखत[7] संग सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे[8]॥
अरदास नानक सुन सुआमी रख लेहो घर के चेरे॥१॥

---

1. अनोखा 2. दर्शन 3. दामन, पल्ला 4. विपत्ति
5. दूसरों पर आश्रित 6. नाशक 7. देखते हुए 8. **नेरहू...नेरे**=निकट से निकट

राग टोडी महला ५ घर २ दुपदे

49) स्वामी सरन परिओ दरबारे॥
कोट अपराध खंडन[1] के दाते तुझ बिन कउन उधारे॥१॥रहाउ॥
खोजत खोजत बहु परकारे सरब अरथ बीचारे॥
साधसंग परम गति पाईऐ माइआ रच बंध[2] हारे॥१॥
चरन कमल संग प्रीत मन लागी सुर जन मिले पिआरे॥
नानक अनद करे हर जप जप सगले रोग निवारे॥२॥

राग सोरठ महला ५ घर २ चउपदे

50) हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता॥
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला[3] का गिआता॥१॥
माधो हम ऐसे तू ऐसा॥
हम पापी तुम पाप खंडन नीको[4] ठाकुर देसा॥रहाउ॥
तुम सभ साजे[5] साज[6] निवाजे[7] जीउ[8] पिंड दे प्राना॥
निरगुनीआरे[9] गुन नही कोई तुम दान देहो मिहरवाना॥२॥
तुम करहो भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला॥
तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहो अपुने बाला॥३॥
तुम निधान अटल सुलितान[10] जीअ जंत सभ जाचै[11]॥
कहो नानक हम इहै हवाला[12] राख संतन कै पाछै॥४॥

राग केदारा महला ५ घर ४

51) हर हर हर गुन गावहो॥
करहो क्रिपा गोपाल गोबिदे अपना नाम जपावहो॥रहाउ॥

---

1. नाश 2. **रच बंध**=बंधन में फँसकर 3. युक्ति 4. सुंदर
5. **सभ साजे**=सभी को पैदा किया 6. सजाया 7. बड़ाई दी 8. जीवन
9. गुणों से रहित 10. बादशाह 11. याचना करते हैं 12. हाल, अवस्था

काढ लीए प्रभ आन बिखै ते[1] साधसंग मन लावहो॥
भ्रम भउ मोह कटिओ गुर बचनी अपना दरस दिखावहो॥१॥
सभ की रेन[2] होए मन मेरा अहंबुध तजावहो[3]॥
अपनी भगति देह दइआला वडभागी नानक हर पावहो॥२॥

राग धनासरी महला ५

52) हा हा प्रभ राख लेहो॥
हम ते किछू न होए मेरे स्वामी कर किरपा अपुना नाम देहो॥१॥रहाउ॥
अगन कुटंब सागर संसार॥ भरम मोह अगिआन अंधार॥१॥
ऊच नीच सूख दूख॥ ध्रापस नाही[4] त्रिसना भूख॥२॥
मन बासना[5] रच बिखै बिआध[6]॥ पंच दूत[7] संग महा असाध[8]॥३॥
जीअ जहान प्रान धन तेरा॥ नानक जान सदा हर नेरा॥४॥

बानी गुरु तेग़ बहादुर जी

राग धनासरी महला ९

1) अब मै कउन उपाउ करउ॥
जिह बिधि मन को संसा चूकै[9] भउ निध[10] पार परउ॥१॥रहाउ॥
जनम पाए कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ॥
मन बच क्रम हर गुन नही गाए यह जीअ[11] सोच धरउ॥१॥
गुरमत सुन कछु गिआन न उपजिओ पसु जिउ उदर[12] भरउ॥
कहो नानक प्रभ बिरद[13] पछानउ तब हउ पतित तरउ॥२॥

1. **बिखै ते**=विषय-विकारों से 2. धूलि 3. छुड़ा दो 4. **ध्रापस नाही**=शांत नहीं होती
5. इच्छा 6. रोग 7. **पंच दूत**=काम, क्रोध आदि पाँच विकार
8. जिसका कोई इलाज नहीं 9. **संसा चूकै**=भ्रम दूर हो जाए
10. **भउ निध**=संसार-सागर 11. मन में 12. पेट 13. स्वभाव, मर्यादा

राग आसा महला ९

2) बिरथा[1] कहउ कउन सिउ मन की॥
लोभ ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की॥१॥रहाउ॥
सुख कै हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जन की॥
दुआरह दुआर सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की॥१॥
मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की॥
नानक हर जस किउ नही गावत कुमत बिनासै तन की॥२॥

राग सोरठ महला ९

3) माई मन मेरो बस नाहे॥
निस बासुर बिखिअन कउ[2] धावत किह बिधि रोकउ ताहे॥१॥रहाउ॥
बेद पुरान सिम्रिति के मत सुन निमख न हीए बसावै॥
पर धन पर दारा[3] सिउ रचिओ[4] बिरथा जनम सिरावै[5]॥१॥
मद माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना॥
घट ही भीतर बसत निरंजन ता को मरम[6] न जाना॥२॥
जब ही सरन साध की आइओ दुरमत सगल बिनासी॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि[7] काटी जम की फासी॥३॥

राग सोरठ महला ९

4) माई मै किह बिधि लखउ[8] गुसाई॥
महा मोह अगिआन तिमर[9] मो मन रहिओ उरझाई॥१॥रहाउ॥
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिर मत[10] पाई॥
बिखिआसकत[11] रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई[12]॥१॥

1. व्यथा 2. **बिखिअन कउ**=विषयों की तरफ़ 3. स्त्री 4. लीन रहता है
5. बीत रहा है 6. भेद 7. चिंतामणिरूपी परमात्मा 8. दर्शन करूँ
9. अंधकार में 10. बुद्धि 11. विषय-विकारों में लिप्त 12. नीचता

साधसंग कबहू नही कीना नह कीरत प्रभ गाई॥
जन नानक मै नाहे कोऊ गुन राख लेहो सरनाई॥२॥

राग मारू महला ९

5) माई मै मन को मान न तिआगिओ॥
माइआ के मद जनम सिराइओ
राम भजन नही लागिओ॥१॥रहाउ॥
जम को डंड परिओ सिर ऊपर तब सोवत तै जागिओ॥
कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ॥१॥
इह चिंता उपजी घट मह जब गुर चरनन अनुरागिओ॥
सुफल जनम नानक तब हूआ जउ प्रभ जस मह पागिओ[1]॥२॥

राग रामकली महला ९ तिपदे

6) साधो कउन जुगति अब कीजै॥
जा ते दुरमत सगल बिनासै राम भगति मन भीजै॥१॥रहाउ॥
मन माइआ मह उरझ रहिओ है बूझै नह कछु गिआना॥
कउन नाम जग जा कै सिमरै पावै पद निरबाना[2]॥१॥
भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात[3] बताई॥
सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरत गाई॥२॥
राम नाम नर निस बासुर मह निमख एक उर धारै॥
जम को त्रास मिटै नानक तिह अपुनो जनम सवारै॥३॥

राग मारू महला ९

7) हर को नाम सदा सुखदाई॥
जा कउ सिमर अजामल उधरिओ गनिका हू गति पाई॥१॥रहाउ॥

---

1. मग्न हो गया 2. **पद निरबाना**=मुक्ति की अवस्था 3. भेद

पंचाली कउ राज सभा मह राम नाम सुध आई॥
ता को दूख हरिओ करुणा मै अपनी पैज[1] बढाई॥१॥
जिह नर जस किरपा निध गाइओ ता कउ भइओ सहाई॥
कहो नानक मै इही भरोसै गही आन सरनाई॥२॥

राग जैतसरी महला ९

8) हर जू राख लेहो पत मेरी॥
जम को त्रास भइओ उर अंतर
सरन गही किरपा निध तेरी॥१॥रहाउ॥
महा पतित मुगध लोभी फुन[2] करत पाप अब हारा॥
भै मरबे को[3] बिसरत नाहिन तिह चिंता तन जारा॥१॥
कीए उपाव मुकति के कारन दह दिस कउ उठ धाइआ॥
घट ही भीतर बसै निरंजन ता को मरम न पाइआ॥२॥
नाहिन गुन नाहिन कछु जप तप कउन करम अब कीजै॥
नानक हार परिओ सरनागति अभै दान[4] प्रभ दीजै॥३॥

राग सारंग महला ९

9) हर बिन तेरो को न सहाई॥
कां की मात पिता सुत बनिता[5] को काहू को भाई॥१॥रहाउ॥
धन धरनी[6] अर संपत सगरी[7] जो मानिओ अपनाई॥
तन छूटै कछु संग न चालै कहा ताहे लपटाई॥१॥
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई॥
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई[8]॥२॥

---

1. प्रतिष्ठा 2. बार-बार 3. **मरबे को**=मरने का
4. **अभै दान**=भाव ऐसा दान जिससे जन्म-मरण का डर दूर हो जाए
5. स्त्री 6. ज़मीन 7. सारी 8. रात का

बानी गुरु गोबिन्द सिंह जी

1) मित्र[1] पिआरे नूं हाल मुरीदां दा[2] कहिणा।
तुधु बिनु रोगु रजाइआँ दा ओढण[3] नाग निवासां दे[4] रहिणा।
सूल[5] सुराही खंजरु[6] पिआला बिंग[7] कसाइआँ दा सहिणा।
यारड़े दा[8] सानूं सत्थरु[9] चंगा भट्ठ[10] खेड़िआँ[11] दा रहिणा॥

बानी संत तुलसी साहिब जी

1) तुलसी मैं अति नीच निकामा। मैं अनाथ गति बूझि न जाना॥
मैं अति कुटिल कूर[12] कुबिचारी। सत सत संत सरनि निरबारी[13]॥
अब मैं अपना औगुन भाखी। निरनय जी की कोइ नहिं राखी॥
अपनी चाल गती गुन गाऊँ। मोहिं सों अधम और नहिं नाऊँ॥
संत दयाल दीन-हितकारी। मोरे औगुन नाहिं बिचारी॥
संत सरल चित सब सुखकारी। मो को पकरि हाथ निरबारी॥
कहँ लगि उनके गुन गति गाऊँ। मोर अचेत लखी नहिं काहू॥
मोरी तपन ताप निज हेरा[14]। तुलसी नीच का कीन्ह निबेरा॥
कोटिन जिभ्या जो मुख होई। तौ मैं बरनि सकौं नहिं सोई॥...
कहँ लग कहौं संत गति न्यारी। मोरी मति गति नाहिं बिचारी॥...
संतन की गति कस कस गाऊँ। अस कोइ देखि परै नहिं ठाऊँ॥

2) ब्याकुल बिरह दिवानी, झड़े नित नैनन पानी॥ टेक॥
हरदम पीर पिया की खटके, सुधि बुधि बदन हिरानी[15]॥

---

1. परमात्मा-रूपी मित्र 2. **मुरीदां दा**=सेवकों का 3. **रजाइआँ...ओढण**=सुंदर बिस्तरों में सोना
4. **निवासां दे**=घर में 5. भाला, त्रिशूल 6. कृपाण 7. भीषण पीड़ा
8. **यारड़े दा**=प्रियतम का सम्मानपूर्वक रहना 9. पथरीली सेज 10. भट्ठी 11. खेड़ा जाति भाव
12. क्रूर, निर्दयी 13. निपटारा 14. देखना
15. खो दी

होस हवास नहीं कुछ तन में, बेदम जीव भुलानी॥
बहु तरंग चित चेतन नाहीं, मन मुरदे की बानी[1]॥
नाड़ी बैद बिथा[2] नहिं जाने, क्यों औषद दे आनी॥
हिये में दाग[3] जिगर के अन्दर, क्या कहि दरद बखानी॥
सतगुर बैद बिथा पहचानें, बूटी[4] है उनकी जानी॥
तुलसी यह रोग रोगिया बूझे, जिनको पीर पिरानी॥

3) बार बार बिनती करूँ सतगुर चरन निवास॥
सतगुर चरन निवास बास[5] मोहिं दीन्ह लखाई।
नित नित करूँ बिलास पास घर अपने आई॥
मैं अति पति[6] मति हीन दीन देखा मोहिं साँई।
लीन्हा अंग लगाय कहूँ अस कौन बड़ाई॥
तुलसी मैं अति हीन हूँ दीन्हा अगम अवास।
बार बार बिनती करूँ सतगुर चरन निवास॥

4) बिपति कासे गाऊँ री माई। जगत जाल दुखदाई॥ टेक॥
रात दिवस मोहिं नींद न आवै। जम दारुन[7] जग खाई॥
पिय के ऐन[8] बिन चैन न आवै। हर दम बिरह सताई॥
जा दिन से पिय सुधि बिसराई। भटक भटक दुख पाई॥
तुलसीदास स्वाँस सुख नाहीं। पिय बिन पीर सताई॥

5) मैं अति कुटिल कराल[9] हूँ बार बार सरनाय॥
बार बार सरनाय चरन धर धारू धूरी।
सतगुर की बलिहारि दीन सत गत मत पूरी॥
आदि अंत गत मूल फूल पत कँवल लखाई[10]।

---

1. तरह 2. पीड़ा 3. जलन 4. जड़ी-बूटी 5. निजधाम 6. पतित
7. निर्दयी 8. दर्शन 9. भयानक 10. दिखाया, समझाया

कीन्हा अगम निवास पाय घर अपने आई॥
तुलसी निरख निहाल होय परखा निज घर पाय।
मैं अति कुटिल कराल हूँ बार बार सरनाय॥

6) मैं सतगुर की दासी, अमरपुर[1] केरी निवासी॥ टेक॥
मोरे पिया ने मोहिं पीहर[2] पठाई[3], बहुत दिवस रही पासी॥
अब मोहिं नैहर[4] नीक न लागे, निस दिन रहूँ री उदासी॥
मात पिता भैया भौजाई, परी री प्रेम की फाँसी॥
माया मोह जाल बिध बाँधी, बसी पास[5] बुध नासी॥
अब चित चैन मोर नहिं पावे, बसूँ जाय पिया पासी॥
कहार[6] भेज करि डोलिया पठावो[7], आऊँ दीपक चढ़ि चासी[8]॥
तुलसीदास पिया बिन प्यारी, ब्याकुल बिरह अबिनासी॥

7) तुलसी ऐसी प्रीत कर, जैसे चन्द चकोर।
चोंच झुकी गरदन लगी, चितवत वाही ओर॥
उत्तम औ चंडाल घर, जहँ दीपक उजियार।
तुलसी मते पतंग के, सभी जोत इक सार॥
तुलसी कँवलन जल बसै, रबि ससि बसै अकास।
जो जा के मन में बसै, सो ताही के पास॥
मकरी उतरै तार से, पुनि गहि चढ़त जो तार।
जा का जा से मन रम्यो, पहुँचत लगै न बार[9]॥
अज्ञाकारी पीव की, रहै पिया के संग।
तन मन से सेवा करै, और न दूजा रंग॥
भक्ति भाव बूझे बिना, ज्ञान उदै नहिं होय।
बिना ज्ञान अज्ञान को, काढ़ सकै नहिं कोय॥

---

1. अविनाशी देश 2. मायका 3. भेजा 4. मायका 5. फंदा, जाल
6. डोली उठानेवाला 7. भेजो, पहुँचाओ 8. उमंग, चाव 9. देर

बानी हुज़ूर स्वामी जी महाराज

बचन उन्नीसवाँ, शब्द इक्कीसवाँ

1) अब बही सुरत मँझधार। गुरू बिन कौन लगावे पार॥ 1॥
जकड़ कर पकड़ा इन संसार। नाम बिन कौन करे निरवार॥ 2॥
नाम का किया न कुछ आधार। गुरू संग किया न अब के प्यार॥ 3॥
कर्म का बहुत उठाया भार। काल ने खाया सब को झाड़॥ 4॥
साध कोइ किया न अपना यार। देह में किया बहुत अहंकार॥ 5॥
कुमति बस भरमें बारम्बार। सुमति का किया न नेक विचार॥ 6॥
देह संग रही न कुछ हुशियार। हुई अब ग़ाफिल भोगन लार[1]॥ 7॥
बिछाया जग में मन ने जार[2]। पड़ी अब मन के क़ाबू हार॥ 8॥
कहैं राधास्वामी तोहि पुकार। पकड़ अब चरन सम्हार सम्हार॥ 9॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द दूसरा

2) अब मैं कौन कुमति उरझानी[3]। देश पराया भई हूं बिगानी[4]॥ 1॥
अब की बार मोहिं लेओ सुधारी। मैं चरनन पर निस दिन वारी[5]॥ 2॥
रहूं पछताय झुरूँ[6] मन अपने। कैसे लगूँ मैं संग पिया अपने॥ 3॥
मैं धरती पिया बसें अकासा। बिन पाये पिया रहूं उदासा॥ 4॥
हे सतगुरु सुनो मेरी टेरा[7]। काल चक्र अब मारो घेरा॥ 5॥
दीन दुखी होय करत पुकारी। सुन स्वामी यह बिनती हमारी॥ 6॥
तुम दयाल सब को देओ दाना। मैं ही अभागिन भई दुख खाना[8]॥ 7॥
क्या कहुं मैं अब अपनी पीर की। जस कोइ छेदत भाल तीर[9] की॥ 8॥
तब स्वामी ने दियो दिलासा। प्रेम पंख ले उड़ो अकासा॥ 9॥
दया हुई अब मिली पिया से। हरी पीर दुख दूर जिया से॥ 10॥

---

1. साथ 2. जाल 3. उलझ गई 4. परदेसिन, पराई 5. बलिहारी
6. दुःखी हूँ गई हूँ 7. पुकार 8. **भई...खाना**=दुःख की खान बन गई हूँ, दुःख रूप हो गई हूँ 9. **भाल तीर**=भाले की नोक

बचन छठवाँ, शब्द सातवाँ

3) करूँ आरती राधास्वामी, तन मन सुरत लगाय।
थाल बना सत शब्द का, अलख जोत फहराय॥1॥
हंस सभी आरत करें, सन्मुख दर्शन पाय।
राधास्वामी दया कर, दीन्हाँ अगम लखाय॥2॥
अनहद धुन घंटा बजे, संख बजे मिरदंग।
ओंकार मँडल बँधा, मेघनाद गरजंत॥3॥
सुन्न मँडल धुन सारँगी, किंगरी बजे अनूप।
कोटि भान छबि रोम इक, ऐसा पुरुष स्वरूप॥4॥
कँवलन की क्यारी बनी, भँवर करें गुंजार।
सेत सिंहासन बैठ कर, देखें पुरुष सम्हार॥5॥
बीन बाँसरी मधुर धुन, बाजें पुरुष हुज़ूर।
सुन सुन हंसा मगन होयँ, पिवें अमीरस मूर[1]॥6॥
रंग महल सत्तपुरुष का, शोभा अगम अपार।
हंस जहाँ आनँद करें, देखें बिमल बहार॥7॥
अब आरत पूरन भई, मन पाया बिसराम।
राधास्वामी चरन पर, कोटि कोटि परनाम॥8॥

बचन सातवाँ, शब्द पहला

4) करूँ बेनती दोउ कर जोरी। अर्ज़ सुनो राधास्वामी मोरी॥1॥
सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता। सब जीवन के पितु और माता॥2॥
दया धार अपना कर लीजे। काल जाल से न्यारा कीजे॥3॥
सतयुग त्रेता द्वापर बीता। काहु न जानी शब्द की रीता॥4॥
कलजुग में स्वामी दया विचारी। परगट करके शब्द पुकारी॥5॥
जीव काज स्वामी जग में आये। भौ सागर से पार लगाये॥6॥

1. **अमीरस मूर**=अमृतरूपी सार-रस

तीन छोड़ चौथा पद[1] दीन्हा। सत्तनाम सतगुरु गत चीन्हा॥7॥
जगमग जोत होत उजियारा। गगन सोत[2] पर चन्द्र निहारा॥8॥
सेत[3] सिंहासन छत्र बिराजे। अनहद शब्द ग़ैब[4] धुन गाजे॥9॥
क्षर[5] अक्षर[6] नि:अक्षर[7] पारा। बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा॥10॥
लोक अलोक[8] पाऊं सुख धामा। चरन सरन दीजे बिसरामा॥11॥

बचन पन्द्रहवाँ, शब्द अट्ठारहवाँ

5) कुमतिया बैरन पीछे पड़ी। मैं कैसे हटाऊँ जान॥1॥
सतगुरु बचन न माने कबही। उन संग धरे गुमान॥2॥
काम क्रोध की सनी बुद्धि से। परखा चाहे उन का ज्ञान॥3॥
सेवा करे न सरधा लावे। उलट करावे उनसे मान॥4॥
अपनी गति हालत नहिं बूझे। कैसे लगे ठिकान॥5॥
लोभ मोह की सूखी नदियाँ। ता में निस दिन रहे भरमान॥6॥
संत मता कहो कैसे बूझे। अपनी मति के दे परमान॥7॥
तिन से संत मौन होय बैठे। सो जिव करते अपनी हान॥8॥
कुमति अधीन हुए सब प्रानी। क्या क्या उनका करूँ बखान॥9॥
जिन पर मेहर पड़े आ सरना। वे पावें सतगुरु पहिचान॥10॥
अपनी उक्ति चतुरता छोड़ें। अपने को जानें अनजान॥11॥
तब सतगुरु प्रसन्न होय कर। देवें पता निशान॥12॥
कुमति हटाय छुड़ावें पीछा। सुरत लगावें शब्द ध्यान॥13॥
बिना शब्द उद्धार न होगा। सब संतन यह किया बखान॥14॥
सोई गावें राधास्वामी। जो कोइ माने सोइ सुजान[9]॥15॥

1. **चौथा पद**=भाव सतलोक 2. **गगन सोत**=गगन का स्रोत यानी दसवाँ द्वार 3. सफ़ेद 4. गुप्त 5. त्रिकुटी तक की रचना 6. सुन्न मंडल यानी दसम द्वार और वहाँ तक की रचना 7. महासुन्न 8. परलोक 9. बुद्धिमान

बचन सत्ताईसवाँ, शब्द तीसरा

6) कैसी करूँ कसक[1] उठी भारी। मेरी लगी गुरू संग यारी॥1॥
दम दम तड़पूँ छिन छिन तरसूँ। चढ़ रही मन में बिरह ख़ुमारी[2]॥2॥
सुलगत जिगर फटत नित छाती। उठन लगी हिये से चिनगारी॥3॥
नैनन नीर बहत जस नदियाँ। डूब मरी माया मतवारी॥4॥
ठंडी आह उठे पल पल में। छाय गई अब प्रीत करारी[3]॥5॥
तोड़ी न टूटे छोड़ी न छूटे। काल करम पच[4] हारी॥6॥
सुरत निरत दोउ क़ासिद[5] कीन्हे। बिथा[6] लिखूँ अब सारी॥7॥
पतियाँ भेजूँ गुरु दरबारा। अब लो ख़बर हमारी॥8॥
नगर उजाड़ देश सब सूना। तुम बिन जग अँधियारी॥9॥
कौन सुने और कौन सम्हारे। सब मोहिं दीन निकारी॥10॥
बही जात नइया मँझधारा। तुम बिन कौन उबारी॥11॥
खेवटिया क्यों देर लगाई। क्यों कर करूँ पुकारी॥12॥
मैं मरी जाउँ जिऊं अब कैसे। तुम मेरी सुधि न सम्हारी॥13॥
डालो जान देवो सरजीवन[7]। मैं तुम पर बलिहारी॥14॥
बचन सुनाओ दरस दिखाओ। हरो पीर मेरी सारी॥15॥
राधास्वामी सुनो हमारी। मैं तुम्हरे आधारी॥16॥

बचन उन्नीसवाँ, शब्द पन्द्रहवाँ

7) गुरु तारेंगे हम जानी। तू सुरत काहे बौरानी[8]॥1॥
दृढ़ पकड़ो शब्द निशानी। तेरी काल करे नहिं हानी॥2॥
तू होजा शब्द दिवानी। मत सुनो और की बानी॥3॥
सब छोड़ो भर्म कहानी। गुरु का मत लो पहिचानी॥4॥
चढ़ बैठो अगम ठिकानी। राधास्वामी कहत बखानी॥5॥

1. टीस 2. नशा 3. तीव्र 4. परेशान होकर 5. संदेश लाने और ले जानेवाला
6. पीड़ा 7. संजीवनी बूटी, अमृत बूटी भाव नाम 8. बावरी, पगली

बचन उनतीसवाँ, शब्द तीसरा

8) गुरू मैं गुनहगार अति भारी॥टेक॥
काम क्रोध और छल चतुराई। इन संग है मेरी यारी॥1॥
लोभ मोह अहंकार ईर्षा। मान बड़ाई धारी॥2॥
कपटी लम्पट[1] झूठा हिंसक। अस अस पाप करा री॥3॥
दुक्ख निरादर सहा न जाई। सुख आदर अभिलाष भरा री॥4॥
बिंजन[2] स्वाद अधिक रस चाहे। मन रसना यही चाट पड़ा री॥5॥
धन और कामिन चित्त बसाये। पुत्र कलित्तर[3] आस भरा री॥6॥
नाना बिधि दुख पावत पापी। तो भी यह करतूत न छाँड़ी॥7॥
यह मन दुष्ट काल का चेरा। नित भरमावत निडर हुआ री॥8॥
जब जब चोट पड़ी दुक्खन की। तब डर डर कर भजन करा री॥9॥
देखो दया मेहर सतगुरु की। उसी भजन को मान लिया री॥10॥
बुधि चतुराई बचन बनावट। हार जीत की चरचा धारी॥11॥
शेख़ी बहुत प्रीत नहिं अंतर। भोले भक्तन धोख दिया री॥12॥
नर नारी बहुतक बस कीन्हे। मान प्रतिष्ठा भोग किया री॥13॥
गुरु संग प्रीत कपट कुछ डर की। कभी थोड़ी कभी बहुत किया री॥14॥
कहँ लग औगुन बरनूँ अपने। याद न आवत भूल गया री॥15॥
चोर चुग़ल इन्द्री रस माता। मतलब की सब बात विचारी॥16॥
ख़ुद मतलबी निर्दई मानी। बहुतन का अपमान किया री॥17॥
कोटिन पाप किये बहुतेरे। कहूं कहाँ लग वार न पारी॥18॥
हे सतगुरु अब दया विचारो। क्या मुख ले मैं करूँ पुकारी॥19॥
नहिं परतीत प्रीत नहिं रंचक[4]। कस कस मेरा करो उबारी॥20॥
मो सा कुटिल और नहिं जग में। तुम सतगुरु मोहिं लेव सुधारी॥21॥
जतन करूँ तो बन नहिं आवत। हार हार अब सरन पड़ा री॥22॥
यह भी बात कही मैं मुँह से। मन से सरना कठिन भया री॥23॥

1. विषयी 2. व्यंजन, पकवान 3. पत्नी, स्त्री 4. थोड़ा-सा, रत्ती भर

सरना लेना यह भी कहना। झूठ हुआ मुँह का कहना री॥24॥
तुम्हरी गति मति तुमहीं जानो। जस तस मेरा करो उबारी॥25॥
मैं तो नीच निपट संशय रत। लगे न चरनन प्रीत करारी॥26॥
मेरे रोग असाध भरे हैं। तुम बिन को अस करे दवा री॥27॥
जब चाहो जब छिन में टारो। मेहर दया की मौज निरारी॥28॥
बारम्बार करूँ मैं बिनती। और प्रार्थना करूँ तुम्हारी॥29॥
तुम बिन और न कोई दीखे। तुमहीं हो मेरे रखवारी॥30॥
बुरा बुरा फिर बुरा बुरा हूं। जैसा तैसा आन पड़ा री॥31॥
अब तो लाज तुम्हें है मेरी। राधास्वामी खेवो[1] बला[2] री॥32॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द तेरहवाँ

9) गुरू मोहिं दीजे अपना धाम॥टेक॥
मैं तो निकाम भर्म बस रहता। तुम दयाल लो मोको थाम॥1॥
ना जानूँ क्या पाप कमाये। गहे न सूरत नाम॥2॥
कैसी करूँ ज़ोर नहिं चाले। मन नहिं पावे दृढ़ विश्राम॥3॥
हे सतगुरु अब दया बिचारो। मैं दुख में रहूं आठों जाम[3]॥4॥
ना सुर्त चढ़े न मन ठहरावे। शब्द महातम नहिं पतियाम[4]॥5॥
संत मता ऊंचा सुन पकड़ा। क्यों नहिं संत करें मेरी साम[5]॥6॥
संत मते को लज्जा आवे। जो मेरा नहिं पूरन काम॥7॥
अपनी मति ले करूँ पुकारा। मौज तुम्हारी मैं नहिं जाम[6]॥8॥
बार बार मैं बिनय पुकारूँ। जस जानो तस देओ निज नाम॥9॥
राधास्वामी कहें निज नामी। दर्दी को चहिये आराम॥10॥

1. दूर करो 2. मुसीबत 3. पहर 4. प्रतीति, भरोसा
5. सँभाल, सहायता 6. जानती

बचन तेंतीसवाँ, शब्द अट्ठारहवाँ

10) घट का पट खोल दिखाओ॥टेक॥
यह मन जूझ जूझ कर हारा। लगे न एक उपाओ॥1॥
तुम समरत्थ कहा नहिं तुम्हरे। क्यों एती देर लगाओ॥2॥
मैं दुख सुख में खाऊँ झकोले। क्यों न पड़ा मेरा अब तक दाओ॥3॥
अब ही दया करो मेरे दाता। मन और सूरत गगन चढ़ाओ॥4॥
मन तो दुष्ट बिरह नहिं लावे। प्रेम प्रीत का दान दिवाओ॥5॥
यह तो सुख झूठे ही चाहे। सच्चे की परतीत[1] न लाओ॥6॥
भोग बिलास जगत के माँगे। सुरत शब्द का रस नहिं पाओ॥7॥
क्योंकर कहूं किस बिधि समझाऊँ। गुरु का बचन न रिदे[2] समाओ॥8॥
इस मन की कुछ घढ़त अनोखी। शब्द माहिं कुछ प्रेम न भाओ[3]॥9॥
कैसे बचे पचे चौरासी। यह नहिं चढ़ता गुरु की नाओ॥10॥
संसारी के धक्के खावे। फिर जमपुर में पिटता जाओ॥11॥
ऐसे दुक्ख सहेगा बहुतक। अब नहिं माने गया भुलाओ॥12॥
सब घट में गुरु तुमहीं प्रेरक। मुझ दुखिया को क्यों न बुलाओ॥13॥
तुम बिन और न कोई मेरा। चार लोक[4] में तुमहिं दिखाओ॥14॥
अब तो दया करो राधास्वामी। जैसे बने तैसे घाट चढ़ाओ॥15॥

बचन सत्ताईसवाँ, शब्द छठवाँ

11) चुनर मेरी मैली भई। अब का पै जाऊँ धुलान॥1॥
घाट घाट मैं खोजत हारी। धुबिया मिला न सुजान॥2॥
नैहर[5] रहुं कस पिया घर जाऊँ। बहुत मरे मेरे मान॥3॥
नित नित तरसूँ पल पल तड़पूँ। कोइ धोवे मेरी चूनर आन॥4॥
काम दुष्ट और मन अपराधी। और लगावें कीचड़ सान॥5॥
का से कहूं सुने नहिं कोई। सब मिल करते मेरी हान॥6॥

1. विश्वास 2. हृदय में 3. श्रद्धा 4. पिंड, अंड, ब्रह्मांड, सत्तलोक
5. मायका भाव संसार

सखी सहेली सब जुड़ आईं। लगीं भेद बतलान॥7॥
राधास्वामी धुबिया भारी। प्रगटे आय जहान॥8॥

बचन इकतीसवाँ, शब्द दूसरा

12) छुटूं मैं कैसे इस मन से। सुरत यह कहती निज मन से॥1॥
जाल इन डाला बहु रस[1] से। छुटाया मोहिं धुर घर से॥2॥
बँधी मैं आय इन दस[2] से। किया परपंच[3] इन मुझ से॥3॥
द्वार मैं आन नौ परसे। गिराया मोहिं दस दर से[4]॥4॥
लगी अब लाग भोगन से। छुटूं क्यों हाय इस फँद से॥5॥
गुरू बिन कोइ नहीं दरसे। निकाले मोहिं इस बन से॥6॥
कांपती मैं फिरूं जम से। छुड़ावे कौन इस डर से॥7॥
पशू सम हो गई नर से। करी नहिं प्रीत मैं गुरु से॥8॥
डार ज्यों टूट गइ जड़ से। पड़ी मैं दूर निज घर से॥9॥
करूं फ़र्याद सतगुरु से। लगाओ मोहिं चरनन से॥10॥
दूर करो मैल सतसंग से। होय फिर भिन्न इस तन से॥11॥
मिले तब जाय सुन धुन से। अमीरस पाय तब सरसे[5]॥12॥
शब्द से जाय कर परसे। मिटे दुख फिर नहीं तरसे॥13॥
लगूं मैं आय राधा से। करूँ मैं प्रीत स्वामी से॥14॥
करो राधास्वामी तुम अपना। पड़ी मैं आय तुम सरना॥15॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द दसवाँ

13) तुम धुर[6] से चल कर आये। अब क्यों ऐसी ढील लगाये॥1॥
जल्दी से काज सँवारो। तुम दाता देर न धारो॥2॥
मैं आतुर[7] तुम्हें पुकारूं। चित में कोइ और न धारूं॥3॥

1. **बहु रस**=कई तरह के भोग-विलास 2. पाँच ज्ञान-इंद्रियाँ तथा पाँच कर्म-इंद्रियाँ
3. छल, प्रपंच 4. **दस...से**=दसवें दरवाज़े से, तीसरे तिल से 5. ख़ुश हो
6. धुरधाम 7. व्याकुल

मेरा जीवन मूर अधारा[1]। जस सीपी स्वाँत निहारा॥4॥
अब मुक्ता[2] नाम जमाओ। मेरे जी की आस पुराओ[3]॥5॥
मन सूरत अधर[4] चढ़ाओ। अब के मेरी खेप निबाहो[5]॥6॥
भौसागर वार न पारा। डूबे सब उसकी धारा॥7॥
है मिथ्या झूठ पसारा। धोखे को सच सा धारा॥8॥
सतगुरु बिन धोख न जाई। बिन शब्द सुरत भरमाई॥9॥
या ते तुम सरना ताकूँ। सोवत मैं क्यों कर जागूँ॥10॥
बिन मेहर जतन सब थाके। मैं कर कर बहु बिधि त्यागे॥11॥
बल पौरुष[6] मोर न चाले। मैं पड़ी काल जंजाले॥12॥
बिनती अब करूँ बनाई। तुम सतगुरु करो सहाई॥13॥
मैं दीन अधीन तुम्हारी। तुम बिन अब कौन सम्हारी॥14॥
कुछ करो दिलासा मेरी। भरमों की पड़ी अँधेरी॥15॥
परकाश करो घट भाना[7]। मिटे भर्म तिमिर अज्ञाना॥16॥
तुम तज अब किस पै जाऊँ। मैं कह कह तुम्हें सुनाऊँ॥17॥
जब चाहो तब ही देना। तुम बिन मोहिं किससे लेना॥18॥
मैं द्वारे पड़ी तुम्हारे। धीरज धर रहूं सम्हारे॥19॥
मन आतुर दुख न सहारे। उठ बारंबार पुकारे॥20॥
मैं सरन दयाल तुम्हारी। कर जल्दी लो निस्तारी॥21॥
घर तुम्हरे कमी न कोई। कहिं भाग ओछ मेरा होई॥22॥
यह भी सब तुम्हरे हाथा। तुम चाहो करो सनाथा॥23॥
अब कहँ लग करूँ पुकारी। मैं हार हार अब हारी॥24॥
तुम दाता दीन दयाला। राधास्वामी करो निहाला॥25॥
मैं आरत कीन्ह अधारी। तुम राधास्वामी सब पर भारी॥26॥

1. **मूर अधारा**=असली सहारा 2. मोती 3. पूरी करो 4. ऊपर, यानी अंतर में
5. **खेप निबाहो**=बेड़ा पार लगा दो 6. योग्यता 7. सूर्य का

बचन सत्ताईसवाँ, शब्द दूसरा

14) दर्द दुखी मैं बिरहिन भारी। दर्शन की मोहिं प्यास करारी॥1॥
दर्शन राधास्वामी छिन छिन चाहूं। बार बार उन पर बल जाऊं॥2॥
वह तो ताड़ मार फटकारें। मैं चरनन पर सीस चढ़ाऊं॥3॥
निर्धन निर्बल क्रोधिन मानी[1]। औगुन अपने अब पहिचानी॥4॥
स्वामी दीन दयाल हमारे। मो सी अधम को लीन्ह उबारे॥5॥
मैं ज़िद्दिन दम दम हठ करती। मौज हुक्म में चित नहीं धरती॥6॥
दया करो राधास्वामी प्यारे। औगुन बख़्शो लेवो उबारे॥7॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द इक्कीसवाँ

15) दर्शन की प्यास घनेरी[2]। चित तपन समाई॥1॥
जग भोग रोग सम दीखें। सतसंग में सुरत लगाई॥2॥
गति अगम तुम्हारी समझी। पर दरस बिन तिरपत नहिं आई॥3॥
गुरुमुखता बन नहिं पड़ती। फिर कैसे प्रत्यक्ष[3] पाई॥4॥
तुम गुप्त रहो जीवन से। संग सब के दूर न भाई॥5॥
बिन किरपा सतगुरु पूरे। निज रूप न तुम दिखलाई॥6॥
अब तरसूँ तड़पूँ बहु बिधि। तुम निकट न होत रसाई॥7॥
हो समरथ दाता सब के। मुझ को भी खैंच बुलाई॥8॥
मैं कैसे देखूँ तुम को। कोई जतन न अब बन आई॥9॥
घट का पट खोलो प्यारे। यह बात न कुछ कठिनाई॥10॥
तुम चाहो तो छिन में कर दो। नहिं जन्म जन्म भटकाई॥11॥
अब दरस दिखादो जल्दी। मैं रहूं नित्त मुरझाई॥12॥
अब दया बिचारो ऐसी। मैं रहूं चरन लौ लाई॥13॥
तुम बिन कोई और न जानूं। तुमहीं से रहुं लिपटाई॥14॥
यह आरत अद्भुत गाई। सूरत मेरी शब्द समाई॥15॥
राधास्वामी कहत सुनाई। मैं दासन दास कहाई॥16॥

1. अभिमानी, अहंकारी 2. बहुत ज़्यादा 3. साक्षात दर्शन

बचन तेंतीसवाँ, शब्द छठवाँ

16) नाम दान अब सतगुरु दीजे। काल सतावे स्वाँसा छीजे[1]॥1॥
दुख पावत मैं निस दिन भारी। गही आय अब ओट[2] तुम्हारी॥2॥
तुम समान कोइ और न दाता। मैं बालक तुम पित और माता॥3॥
मो को दुखी आप कस देखो। यह अचरज मोहिं होत परेखो॥4॥
मैं हूं पापी अधम विकारी। भूला चूका छिन छिन भारी॥5॥
अवगुन अपने कहँ लग बरनूँ। मेरी बुधि समझे नहिं मरमूं॥6॥
तुम्हरी गति मति नेक न जानूँ। अपनी मति अनुसार बखानूं॥7॥
तुम समरथ और अंतरजामी। क्या क्या कहूं मैं सतगुरु स्वामी॥8॥
मौज करो दुख अंतर हरो। दयादृष्टि अब मो पै धरो॥9॥
माँगूँ नाम न माँगूँ मान। जस जानो तस देओ मोहिं दान॥10॥
मैं अति दीन भिखारी भूखा। प्रेम भाव नहिं सब बिधि रूखा॥11॥
कैसे दोगे नाम अमोला। मैं अपने को बहु बिधि तोला॥12॥
होय निरास सबर कर बैठा। पर मन धीरज धरे न नेका[3]॥13॥
शायद कभी मेहर हो जावे। तो कहूं नाम नैक मिल जावे॥14॥
बिना मेहर कोइ जतन न सूझे। बख़्शिश होय तभी कुछ बूझे॥15॥
किनका नाम करे मेरा काज। हे सतगुरु मेरी तुमको लाज॥16॥
अब तो मन कर चुका पुकार। राधास्वामी करो उधार॥17॥

बचन सत्ताईसवाँ, शब्द चौथा

17) पिया बिन कैसे जिउं मैं प्यारी। मेरा तन मन जात फुका री[4]॥1॥
कोइ संत मिलें अब भारी। जो पिया को मिलावें आ री॥2॥
मैं चढ़ूँ गगन में सारी। दिन रात लगे मेरी तारी[5]॥3॥
मैं बिरहिन लगी कटारी। मैं घायल फिरूँ उजाड़ी॥4॥

1. घटते जा रहे हैं 2. शरण, आसरा 3. ज़रा भी 4. जात...री=जल रहा है
5. ध्यान, समाधि

सतगुरु अब करें सम्हारी। तब हिरदे घाव पुरा[1] री॥5॥
मोहिं नाम देहिं निज सारी। यह मरहम नित्त लगा री॥6॥
राधास्वामी करें दवा री। मैं उन पै जाउं बलिहारी॥7॥

बचन इकतीसवाँ, शब्द चौथा

18) मन चंचल कहा न माने। मैं कौन उपाय करूँ॥1॥
गुरु नित समझावें साध बुझावें। सतसंग में चित जोड़ धरूँ॥2॥
सुन सुन बचन बहुत पछताऊँ। बहुर भुलावे भर्म रहूँ॥3॥
अपनी सी बहु जुक्ति सम्हारी। कैसे मन को मार मरूँ॥4॥
सुरत शब्द का घाट[2] न पाया। फिर क्योंकर मैं गगन भरूँ[3]॥5॥
डावाँडोल रहे संशय में। जगत आस से नाहिं टरूँ॥6॥
सतगुरु सरन पकड़ कर बैठूं। तो इस मन की व्याधि[4] हरूँ॥7॥
जगत जाल यह अति दुखदाई। इसी अगिन में नित्त जरूँ॥8॥
बिना मेहर कुछ काज न सरिहै। अब राधास्वामी की सरन पड़ूं॥9॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द ग्यारहवाँ

19) माँगूँ इक गुरु से दाना। घट शब्द देव पहिचाना॥1॥
मन साथ सदा भरमाना। कर किरपा कर्म छुड़ाना॥2॥
सुर्त चढ़े सुने धुन ताना[5]। मन मारो कर्म नसाना॥3॥
सब छूटे बान कुबाना[6]। सत शब्द मिले दृढ़ थाना॥4॥
अब कर दो नाम दिवाना। मैं ताकूँ शब्द निशाना॥5॥
कोइ करे न मेरी हाना। मोहिं तुम पर बल बल जाना॥6॥
कल[7] धारा मुझे न बहाना। मोहिं देना शब्द ठिकाना॥7॥
मन हो गया बहुत निमाना। अब राधास्वामी चरन समाना॥8॥

1. भर गया, ठीक हो गया 2. रास्ता, युक्ति 3. पहुँचूँ 4. रोग
5. सुचेत होकर 6. बान कुबाना=बुरी आदतें 7. काल की

बचन उनतीसवाँ, शब्द दूसरा

20) मेरी पकड़ो बाँह हे सतगुरु। नहिं बह्यो[1] धार भौ सागर॥1॥
मैं बचूं जाल से क्योंकर। तुम बिन कोई और न आसर[2]॥2॥
अब मिला अजायब औसर। जम काल बड़ा है फनधर[3]॥3॥
कोइ मंत्र सिखाओ आ कर। लो चरन ओट किरपा कर॥4॥
मैं थका चौरासी फिर फिर। अब कैसे मिले अमर घर॥5॥
तब सतगुरु कहा दया कर। अब सुरत चढ़ाओ गगन पर॥6॥
वह घाटी है अति अड़बड़[4]। मन इन्द्री खैंच उधर धर॥7॥
तब मिले शब्द तोहि अस्थिर। तन मन धन आज अरप धर॥8॥
गुरु प्रीत करो चित्त सम कर। यह आरत करो अधर चढ़॥9॥
राधास्वामी सरन तू दृढ़ कर। फिर छोड़ न कभी उमर भर॥10॥

बचन आठवाँ, शब्द सोलहवाँ

21) मैं कौन कुमति उरझाना[5]। गुरू दर्श छोड़ घर जाना॥1॥
अब कौन जतन अस करिये। गुरु चरन चित्त में धरिये॥2॥
यह बचन कहां मैं पाऊँ। मन खेती बीज जमाऊँ॥3॥
निस दिन रहे चित्त उदासी। क्यों छोड़ूँ चरन बिलासी॥4॥
नर देह न बारम्बारी। क्यों भौजल डूबे आ री॥5॥
सतगुरु संग कभी न छोड़ूँ। मन तन से नाता तोड़ूँ॥6॥
गुरु बल से करम निकारूं। सतसंग से काल पछाड़ूँ॥7॥
जो मेहर करें गुरु मुझ पर। यह बात बने अति दुस्तर[6]॥8॥
मेरे मन में चाहत येही। गुरु चरन न छोड़ूं कबही॥9॥
गुरु से कोई अधिक न राखा। पुनि संत बेद अस भाषा॥10॥
गुरु महिमा सबहिन गाई। मैं दीन अधीन जनाई॥11॥
मेरी लाग लगी गुरु चरनन। नख सोभा क्या करूँ बरनन॥12॥

1. बह जाऊँगा 2. सहारा 3. साँप 4. ऊबड़-खाबड़, ऊँची-नीची, विकट
5. उलझ गया 6. कठिन

कोटिन रवि चन्द्र लजाई। उस नख की गति नहिं पाई॥ 13॥
यह तिमिर बाहरी खोवें। वह अन्तर मोती पोवें[1]॥ 14॥
हिरदे में सदा उजारी। गुरु नख पर जाऊँ बलिहारी॥ 15॥
अब आरत उनकी करता। मन चरन कंवल में धरता॥ 16॥
सुर्त फेरो सतगुरु मेरी। घर[2] जाऊं करूँ फिर फेरी[3]॥ 17॥
राधास्वामी काटो बेड़ी। यह बिनती सुनिये मेरी॥ 18॥
मैं दासन दास तुम्हारा। तुम बचन मोर निस्तारा[4]॥ 19॥

बचन अट्ठाईसवाँ, शब्द तीसरा

22) मोहिं मिला सुहाग गुरू का। मैं पाया नाम गुरू का॥ 1॥
मैं सरना लिया गुरू का। मैं किंकर[5] हुआ गुरू का॥ 2॥
मेरे मस्तक हाथ गुरू का। मैं हुआ ग़ुलाम गुरू का॥ 3॥
मैं पाया अधार गुरू का। मैं पकड़ा चरन गुरू का॥ 4॥
मैं सरबस हुआ गुरू का। मैं हो गया अपने गुरु का॥ 5॥
कोइ और न मुझसा गुरु का। गुरु का मैं गुरु का गुरु का॥ 6॥
राधास्वामी नाम यह धुर का। मैं पाया धाम उधर का॥ 7॥

बचन सातवाँ, शब्द दूसरा

23) रोम रोम मेरे तुम आधार। रग रग मेरी करत पुकार॥
अंग अंग मेरा करे गुहार। बन्द बन्द से करूं जुहार[6]॥
हे राधास्वामी अधम उधार। मैं किंकर तुम दीन दयार॥ 1॥
इन्द्री मन मेरे भरे विकार। तन भी बंधा जगत की लार॥
मैं सब विधि बहता भौ धार। तुमही पार उतारनहार॥
हे राधास्वामी सुख भंडार। मैं अति दीन फंसा संसार॥ 2॥
काढ़ि निकारो मोहिं दातार। दात तुम्हारी अगम अपार॥

1. पिरोएँ 2. निजघर, सचखंड 3. वापसी 4. छुटकारा 5. तुच्छ दास, ग़ुलाम 6. बंदगी, नमन

दया सिन्ध जीवन आधार। तुम बिन कोइ न सम्हारनहार॥
हे राधास्वामी सरन तुम्हार। गही आन मैं नीच नकार[1]॥ 3॥
सदा रहूँ तुम चरन अधार। कभी न बिछड़ूँ यही पुकार॥
निस दिन राखूं हिये सम्हार। चरन तुम्हार मोर आधार॥
हे राधास्वामी अपर अपार। मोहिं दिखाओ निज दरबार॥ 4॥
मम करनी कहिं करो विचार। तो मैं ठहरन जोग न द्वार॥
तुम गंभीर धीर जग पार। मैं डूबत हूँ भौजल वार॥
हे राधास्वामी लगाओ किनार। तुम खेवटिया सबसे न्यार॥ 5॥
चोर चुग़ल बरतू अहंकार। कपट कुटिलता बड़ा लबार[2]॥
काम क्रोध और मोह पियार। क्या क्या बरनूं भरा विकार॥
हे राधास्वामी छिमा सम्हार। लीजे मुझ को अभी उबार॥ 6॥
तुम महिमा का वार न पार। शेष गनेश रहे सब हार॥
माया ब्रह्म नहीं औतार। कर न सके बहे काली धार[3]॥
हे राधास्वामी सब के पार। इन सब के तुमहीं आधार॥ 7॥
मैं तुम चरन जाऊं बलिहार। देख न सकूं रूप उजियार॥
तेज पुंज तुम अगम अपार। चाँद सूर की जहाँ न शुमार[4]॥
हे राधास्वामी तुम दीदार। बिना मेहर को करे अधार॥ 8॥
राधास्वामी राधास्वामी नाम तुम्हार। यही मेरा कुल और यही परिवार॥
राधास्वामी राधास्वामी बारम्बार। कहत रहूँ और रहुँ हुशियार॥
हे राधास्वामी मर्म तुम्हार। तुम्हरी दया से पाऊं सार॥ 9॥
गुरु स्वरूप धर लिया औतार। जीव उबारन आये संसार॥
नर स्वरूप धर किया उपकार। तुम सतगुरु मेरे परम उदार॥
हे राधास्वामी शब्द दुवार। खोल दिया तुम बज्र किवाड़॥ 10॥
लीला तुम्हरी अजब बहार। कह न सके कोइ वार न पार॥
जिसे दिखाओ सो देखनहार। तुम बिन कोई न परखनहार॥
हे राधास्वामी गुरू हमार। तुम बिन कौन करे निरवार[5]॥ 11॥

1. बेकार 2. झूठा 3. काल की धारा 4. गिनती, महत्त्व 5. छुटकारा

बचन तेंतीसवाँ, शब्द बीसवाँ

24) लगाओ मेरी नइया सतगुरु पार। मैं बही जात जग धार॥1॥
तुम बिन नाहीं को कढ़ियार[1]। लगादो डूबी खेप किनार॥2॥
सहेली मत तू मन में हार। दिखाऊँ जग का वार और पार॥3॥
चढ़ाऊँ सूरत उल्टी धार। शब्द संग खेय उतारूँ पार॥4॥
गुरू को धर ले हिये मँझार। नाम धुन घट में सुन झनकार॥5॥
तरंगें उठतीं बारम्बार। भँवर[2] जहँ पड़ते बहुत अपार॥6॥
मेहर से पहुंची दसवें द्वार। राधास्वामी दीन्हा पार उतार॥7॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द नौवाँ

25) सतगुरु मेरी सुनो पुकार। मैं टेरत बारम्बार॥1॥
दुरमत मेरी दूर निकारो। मुझे कर लो चरन अधारो॥2॥
मोहिं भौजल पार उतारो। मेरी पड़ी नाव मँझधारो॥3॥
तुम बिन अब कोइ न सहारो। अपना कर मुझे सम्हारो॥4॥
मैं कपटी कुटिल तुम्हारो। तुम दाता अपर अपारो॥5॥
मैं दीन दुखी अति भारो। जब चाहो तब निस्तारो॥6॥
मैं आरत करूँ तुम्हारी। तन मन धन तुम पर वारी॥7॥
अब मिला सहारा भारी। मैं नीच अजान अनाड़ी॥8॥
घट भेद नाद[3] समझाया। मन बैरी स्वाद न पाया॥9॥
दुख सुख में बहु भरमाया। जग मान बड़ाई चाहा॥10॥
उलटूँ मैं इसको क्यों कर। बिन दया तुम्हारी सतगुरु॥11॥
अब खैंचो राधास्वामी मन को। मैं विनय सुनाऊं तुमको॥12॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द बाईसवाँ

26) सोचत रही री बेचैन, रैन दिन बहु पछतानी।
मेरी लगी न प्रीत संग शब्द, कहन मेरी सभी कहानी॥1॥

1. निकालनेवाला 2. रुकावटें, चक्कर 3. शब्द

झुरत[1] रहूं मन माहिं, कौन से करूँ बखानी।
सुननहार नहिं सुने, कहो मेरी कहा बसानी[2]॥2॥
मौज बिना क्या होय, मौज की सार न जानी।
सबर न आवे चित्त, दर्द में रैन बिहानी॥3॥
दिवस करूँ फ़र्याद, गुरू मेरे अन्तरजामी।
अपनी चूक विचार, रहूं मैं अति घबरानी॥4॥
दीना नाथ दयाल, सुनो जल्दी मेरी बानी।
चरन पकड़ हठ करूँ, मेहर कर देवो दानी॥5॥
मैं तो अजान अभाग, कुटिल मोहिं सब जग जानी।
जो अपना कर लिया, लाज अब तुम्हें समानी॥6॥
राधास्वामी कह रहे, यह अचरज बानी।
सौदा पूरा मिले, होय नहिं तेरी हानी॥7॥

बचन तेंतीसवाँ, शब्द पन्द्रहवाँ

27) गुरू मोहिं अपना रूप दिखाओ॥टेक॥
यह तो रूप धरा तुम सर्गुण। जीव उबार कराओ॥1॥
रूप तुम्हारा अगम अपारा। सोई अब दरसाओ॥2॥
देखूँ रूप मगन होय बैठूँ। अभय दान दिलवाओ॥3॥
यह भी रूप पियारा मो को। इस ही से उसको समझाओ॥4॥
बिन इस रूप काज नहिं होई। क्यों कर वाहि लखाओ॥5॥
ता ते महिमा भारी इसकी। पर वह भी लखवाओ॥6॥
वह तो रूप सदा तुम धारो। या ते जीव जगाओ॥7॥
यह भी भेद सुना मैं तुम से। सुरत शब्द मारग नित गाओ॥8॥
शब्द रूप जो रूप तुम्हारा। वा में भी अब सुरत पठाओ[3]॥9॥
डरता रहूं मौत और दुख से। निर्भय कर अब मोहिं छुड़ाओ॥10॥
दीनदयाल जीव हितकारी। राधास्वामी काज बनाओ॥11॥

1. पछताना 2. कहा बसानी=क्या वश चले 3. भाव लगाओ